बहारे
शरीअत
1 से 10
मुसन्निफ
अमजद अ़ली
हिन्दी तर्जमा
अमीनुल क़ादरी बरेलवी
नाशिर
क़ादरी दारुल इशाअ़त
दो मीनार मस्जिद
एजाज़ नगर, पुराना शहर बरेली

किताब को पढ़ने से पहले
इस किताब को स्कैन करने वाले
और इस काम मे हिस्सा लेने वालो के हक़ में

दुआ फरमाएं

अल्लाह अज़्ज़वजल हमारे तमाम
सगीरा व क़बीरा गुनाहों को मुआफ़ फ़रमाये
और ईमान पर इस्तेक़ामत अता फ़रमाये!

PDF BY :
WASEEM AHMED RAZA KHAN AZHARI & TEAM
+91-8109613336

बहारे शरीअ़त

पहला हिस़्सा

मुस़न्निफ़
सदरूश्शरीअ़ा मौलाना अमजद अ़ली आज़मी रज़वी अ़लैहिर्रह़मा

हिन्दी तर्जमा
मौलाना मुह़म्मद अमीनुल क़ादरी बरेलवी

नाशिर
क़ादरी दारूल इशाअ़त
मुस्तफ़ा मस्जिद, वैलकम, दिल्ली–53
Mob:–9312106346

नाम किताब	बहारे शरीअ़त (पहला हिस्सा)
मुसन्निफ़	सदरुश्शरीअ़ मौलाना अमजद अ़ली आज़मी रज़वी अ़लैहिर्रहमह
हिन्दी तर्जमा	**मौलाना मुहम्मद अमीनुल क़ादरी बरेलवी**
कम्प्यूटर कम्पोज़िंग	मौलाना मुहम्मद शफ़ीकुल हक़ रज़वी
क़ीमत जिल्द अव्वल	500/
तादाद	1000
इशाअ़त	2010 ई.

मिलने के पते :

1 मकतबा नईमिया ,मटिया महल, दिल्ली।
2 फ़ारूक़िया बुक डिपो ,मटिया मह़ल ,दिल्ली।
3 नाज़ बुक डिपो ,मोहम्मद अ़ली रोड़ मुम्बई
4 अलकुरआन कम्पनी ,कमानी गेट,अजमेर।
5 चिश्तिया बुक डिपो दरगाह शरीफ़ अजमेर।
6 क़ादरी दारुल इशाअ़त, 523 मटिया महल जामा मस्जिद दिल्ली। 9312106346
7 मकतबा रह़मानिया रज़विया दरगाह आ़ला ह़ज़रत बरेली शरीफ़

फेहरिस्त

अर्ज़े मुतर्जिम

जेरे नज़र किताब बहारे शरीअत उर्दू ज़बान में बहुत मशहूर व मअ्रूफ़ किताब है हिन्दी ज़बान में अभी तक फ़िक्ही मसाइल पर इतनी ज़खीम किताब मन्ज़रे आम पर नहीं आई काफ़ी अर्से से ख़्वाहिश थी कि बहारे शरीअत मुकम्मल हिन्दी में तर्जमा की जाये ताकि हिन्दी दाँ हज़रत को फ़िक्ही मसाइल पर पढ़ने के लिए तफ़्सीली किताब दस्तयाब हो सके।

मैंने इस किताब का तर्जमा करने में ख़ालिस हिन्दी अलफ़ाज़ का इस्तेमाल नहीं किया उस की वजह यह कि आज भी हिन्दुस्तान में आम बोलचाल की ज़बान उर्दू है अगर हिन्दी शब्दों का इस्तेमाल किया जाता तो किताब और ज़्यादा मुश्किल हो जाती इसी लिए किताब के मुश्किल अलफ़ाज़ को आसान उर्दू में हिन्दी लिपि में लिखा गया है।

बहारे शरीअत उर्दू में बीस हिस्से तीन या चार जिल्दों में दस्तेयाब हैं अगर इस किताब का अच्छी तरह से मुताला कर लिया जाये तो मोमिन को अपनी जिन्दगी में पेश आने वाले तक़रीबान तमाम मसाइल की जानकारी हासिल हो सकती है। इस किताब में अक़ाइद मुआमलात तहारत, नमाज़, रोज़ा ,हज, ज़कात, निकाह, तलाक़, खरीद ,फ़रोख्त ,अखलाक़,गरज कि ज़रूरत के तमाम मसाइल का बयान है।

काफी अर्से से तमन्ना थी कि मुकम्मल बहारे शरीअत हिन्दी में पेश की जाये ताकि हिन्दी दाँ हज़रात इस से फ़ायादा हासिल कर सकें बहारे शरीअत की बीस हिस्सों की कम्पोज़िंग मुकम्मल हो चुकी है जिस को दो जिल्दो में पेश करने का इरादा है।

कुछ मजबूरियों की वजह से दस हिस्सों की एक जिल्द पेश की जारही है कुछ ही वक़्त के बाद बाकी दस हिस्सों की दूसरी जिल्द आप के सामने होगी यह हिन्दी में फ़िक्ही मसाइल पर सब से ज़्यादा तफसीली किताब होगी कोशिश यह की गई है कि गलतियों से पाक किताब हो और मसाइल भी न बदल पाये अभी तक मार्केट में फ़िक्ह के बारे में पाई जाने वाली हिन्दी की अकसर किताबों में मसाइल भी बदल गये हैं और उन के अनुवादकों को इस बात का एहसास तक न हो सका यह उन के दीनी तालीम से वाकिफ न होने की वजह है। मगर शौक उनका यह है कि दीनी किताबों को हिन्दी में लायें उनको मेरा मश्वरा यह है कि अपना यह शौक़ पूरा करने के लिए बाक़ाएदा मदर्से में दीनी तालीम हासिल करें और किसी आलिमे दीन की शागिर्दी इख़्तेयार करे ताकि हिन्दी में सही तौर पर किताबें छापने का शौक़ पूरा हो सके।

फिर भी मुझे अपनी कम इल्मी का एहसास है। कारेईन किताब में किसी भी तरह की ग़लती पायें तो खादिम को ज़रूर इत्तेलाअ् करें ताकि अगले एडीशन में सुधार कर लिया जाये किताब को आसान करने की काफी कोशिश की गई है फिर भी अगर कहीं मसअला समझ में न आये तो किसी सुन्नी सहीहुल अकीदा आलिमे दीन से समझलें ताकि दीन का सही इल्म हासिल हो सके किताब का मुतालआ करने के दौरान उलमा से राब्ता रखें वक़्तन फ़ वक़्तन किताब में पेश आने वाले मसाइल को समझते रहें।

अल्लाह तआला की बारगाह में दुआ है कि वह अपने हबीबे अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के सदके में इस किताब के ज़रीए कारेईन को भरपूर फ़ायदा अता फ़रमाये और इस तर्जमे को मकबूल व मशहूर फरमाये और मुझ ख़ताकार व गुनाहगार के लिए बख़्शिश का ज़रीआ बनाये आमीन!

ख़ादिमुल उ़लमा

मुहम्मद अमीनुल क़ादरी बरेलवी

30 सितम्बर सन.2010

بسم الله الرّحمٰنِ الرّحيم

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ اَنْزَلَ الْقُرْاٰنَ،وَ هَدَانَا بِهٖ اِلٰى عَقَائِدِ الْاِيْمَانِ،وَ اَظْهَرَ الدِّيْنَ الْقَوِيْمَ عَلٰى سَائِرِ الْاَدْيَانِ، وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ الْاِتْمَانُ فِىْ كُلِّ حِيْنٍ وَ اٰنٍ،عَلٰى سَيِّدِ وَلَدِ عَدْنَانِ،سَيِّدِ الْاِنْسِ وَ الْجَانِ ،اَلَّذِىْ جَعَلَهُ اللّٰهُ تَعَالٰى مُطَّلِعاً عَلَى الْغُيُوْبِ فَعَلِمَ مَا يَكُوْنُ وَمَا كَانَ،وَ عَلٰى اٰلِهٖ وَ صَحْبِهٖ وَ ابْنِهٖ وَحِزْبِهٖ وَ مَنِ اتَّبَعَهُمْ بِاِحْسَانٍ وَ اجْعَلْنَا مِنْهُمْ يَا رَحْمٰنُ يَا مَنَّانُ.

फ़क़ीर बारगाहे क़ादिरी अबुल उ़ला अमजद अ़ली आज़मी रज़वी अ़र्ज़ करता है कि ज़माने की ह़ालत ने इस त़रफ़ मुतवज्जेह किया कि अ़वाम भाईयों के लिए स़ही मसाइल का एक सिलसिला आ़म फ़हम जुबान में लिखा जाए जिसमें ज़रूरी रोज़मर्रा कें मसाइल हों। बावुजूद बेफ़ुर्सती के अल्लाह तआ़ला के भरोसे इस काम को शुरू किया है एक ह़िस्सा लिखने पाया था कि यह ख़्याल हुआ कि आमाल की दुरुस्तगी के लिए अक़ाइद की सेह़त ज़रूरी है और बहुत से मुसलमान हैं जो उसूले मज़हब से आगाह नहीं। ऐसों के लिए सच्चे अ़क़ाइद के ज़रूरी सरमाए की बहुत शदीद ह़ाजत है खुसूसन इस फ़ितने के दौर में कि ईमान के डाकू जगह जगह हैं जो अपने आपको मुसलमान कहते हैं बल्कि आ़लिम कहलाते हैं और ह़क़ीक़तन इसलाम से बहुत दूर, आ़म मुसलमान उनके फ़रेब में आकर दीन से हाथ धो बैठते हैं। लिहाज़ा यानी किताबुत्त़हारत (पाकी के बयान)को इस सिलसिले का ह़िस्स़ा दोम किया और उन भाईयों के लिए इस पहले ह़िस्स़े में इस्लामी सच्चे अ़क़ाइद बयान किए। उम्मीद कि बिरादराने इसलाम इस किताब से ईमान ताज़ा करें और इस फ़क़ीर के लिए बख़्शिश व दोनों जहान में बेहतरी और ईमान व मज़हबे अहले सुन्नत पर ख़ातिमे की दुआ फ़रमायें।

اَللّٰهُمَّ ثَبِّتْ قُلُوْبَنَا عَلَى الْاِيْمَانِ وَ توفّنَا عَلَى الْاِسْلَامِوَارْزُقْنَا شَفَاعَةَ خَيْرِ الْاَنَامِ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ وَ اَدْخِلْنَا بِجَاهِهٖ عِنْدَكَ دَارَ السَّلَامِ اٰمِيْنَ يَا اَرْحَمَ الرّٰحِمِيْنَ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ.

☆☆☆☆☆☆☆

अल्लाह तआला की ज़ात और उसकी सिफ़तों के बारे में अक़ीदे

अल्लाह एक है कोई उसका शरीक नहीं न ज़ात में न सिफ़ात में न अफ़आल (कामों) में न अहकाम (हुक्म देने) में न नामों में। वह "वाजिबुल वजूद" है यानी (जिसका हर हाल में मौजूद रहना ज़रूरी हो)उसका अदम मुहाल है यानी किसी ज़माने में उसकी ज़ात मौजूद न हो नामुमकिन है। अल्लाह"क़दीम"और "अज़ली" है यानी हमेशा से है और "अबदी" भी है यानी वह हमेशा रहेगा उसे कभी मौत न आयेगी। अल्लाह तआला ही इस लाइक़ है कि उसकी बन्दगी और इबादत की जाये।

अक़ीदा :– अल्लाह बेपरवाह है किसी का मुहताज नहीं और सारी दुनिया उसी की मुहताज है।

अक़ीदा :– अल्लाह की ज़ात का इदराक अक़्ल के ज़रिये मुहाल है यानी अक़्ल से उसकी ज़ात को समझना मुमकिन नहीं क्योंकि जो चीज़ अक़्ल के ज़रिये से समझ में आती है अक़्ल उस को अपने घेरे में लेलेती है और अल्लाह की शान यह है कि कोई चीज़ उसकी ज़ात को घेर नहीं सकती। अल्बत्ता अल्लाह के कामों के ज़रिये से मुख़तसर तौर पर उसकी सिफ़तों और फिर उन सिफ़तों के ज़रिए अल्लाह तआला की ज़ात पहचानी जाती है।

अक़ीदा :– अल्लाह तआला की सिफ़तें न ऐन हैं न ग़ैर यानी अल्लाह तआला की सिफ़तें उसकी ज़ात नहीं और न वह सिफ़तें किसी तरह उसकी ज़ात से अलग हो सकें क्योंकि वह सिफ़तें ऐसी हैं जो अल्लाह की ज़ात को चाहती हैं और उसकी ज़ात के लिए ज़रूरी हैं।

इसी सिलसिले में दूसरी बात यह भी ध्यान रखने की है कि अल्लाह की सिफ़तें कई हैं और अलग हैं और हर सिफ़त का मतलब भी अलग अलग है। मुतरादिफ़ैन नहीं, इसलिए सिफ़तें ऐने ज़ात नहीं हो सकतीं और सिफ़तें ग़ैरे ज़ात इसलिये नहीं हैं कि ग़ैर ज़ात मानने की सूरत में दो बातें हो सकती हैं। या तो सिफ़तें क़दीम होंगी या हादिस (जो किसी के पैदा करने से पैदा हुई यानी मख़लूक़)अगर क़दीम मानते है तो कई एक क़दीम का मानना पड़ेगा जबकि क़दीम सिर्फ़ एक ही है और अगर हादिस तसलीम करते हैं तो यह मानना भी ज़रूरी होगा वह क़दीम ज़ात सिफ़तों के हादिस होने या पैदा होने से पहले बिग़ैर सिफ़तों के थी और यह दोनों बातें बातिल हैं।

इसलिए इन मुश्किलों से बचने के लिये अहले सुन्नत ने वह मज़हब इख़्तियार किया है कि सिफ़ाते बारी (अल्लाह तआला की सिफ़तें)न तो ऐन ज़ात हैं और न ग़ैरे ज़ात बल्कि सिफ़तें उस ज़ाते मुक़द्दस को लाज़िम हैं किसी हाल में उससे जुदा नहीं और ज़ाते बारी तआला अपनी हर सिफ़त के साथ अज़ली,अबदी और क़दीम है।

अक़ीदा :– जिस तरह अल्लाह तआला की ज़ात क़दीम,अज़ली तथा अबदी है उसी तरह उसकी सिफ़तें भी क़दीम,अज़ली और अबदी हैं।

अक़ीदा :– अल्लाह की कोई सिफ़त मख़लूक़ नहीं न ज़ेरे क़ुदरत दाख़िल।

अक़ीदा :– अल्लाह की ज़ात और सिफ़ात के अलावा सब चीज़ें हादिस यानी पहले न थीं अब मौजूद हैं।

अक़ीदा :– जो अल्लाह की सिफ़तों को मख़लूक़ कहे या हादिस बताये वह गुमराह और बददीन है।

अक़ीदा :– जो आ़लम में से किसी चीज़ को खुद से मौजूद माने या उसके ह़ादिस होने में शक करे वह काफ़िर है।

अक़ीदा :– अल्लाह तआ़ला न किसी का बाप है न ही किसी का बेटा है और न उसके लिए कोई बीवी। यदि कोई अल्लाह के लिए बाप,बेटा या जोरू (बीवी)बताये वह भी काफ़िर है बल्कि जो मुमकिन भी बताये गुमराह बद्दीन है।

अक़ीदा :– अल्लाह तआ़ला ह़य्य है या़नी ज़िन्दा है जिसे कभी मौत नहीं आयेगी। सबकी ज़िन्दगी उसी के हाथ (दस्ते कुदरत) में है वह जिसे जब चाहे ज़िन्दगी दे और जब चाहे मौत दे दे।

अक़ीदा :– वह हर मुमकिन पर क़ादिर है और कोई मुमकिन उसकी कुदरत से बाहर नहीं। जो चीज़ मुह़ाल हो,अल्लाह तआ़ला उससे पाक है कि उसकी कुदरत उसे शामिल हो क्योंकि मुह़ाल उसे कहते हैं जो मौजूद न हो सके और जब उस पर कुदरत होगी तो मौजूद हो सकेगा और जब मौजूद हो सकेगा तो फ़िर मुह़ाल कैसे हो सकेगा। इसे इस त़रह़ समझिए जैसे कि दूसरा खुदा मुह़ाल है यानी दूसरा खुदा हो ही नहीं सकता अगर दूसरा खुदा होना कुदरत के मातह़त(अधीन) हो तो मौजूद हो सकेगा और जब मौजूद हो सकेगा तो मुह़ाल नहीं रहा। और दूसरे खुदा को मुह़ाल न मानना अल्लाह के एक होने का इन्कार है। यूँही अल्लाह तआ़ला का फ़ना हो जाना मुह़ाल है अगर अल्लाह के फ़ना होने को कुदरत में दाख़िल माना जाए तो अल्लाह के अल्लाह होने से ही इन्कार करना है।

एक बात यह भी समझने की है कि हर वह चीज़ जो अल्लाह की कुदरत के मातहत हो वह मौजूद हो ही जाये यह कोई ज़रूरी नहीं। जैसे कि यह मुमकिन है कि सोने चाँदी की ज़मीन हो जाए लेकिन ऐसा नहीं है। लेकिन ऐसा हो जाना हर ह़ाल में मुमकिन रहेगा चाहे ऐसा कभी न हो।

अक़ीदा :– अल्लाह हर कमाल और खूबी का जामेअ़ है या़नी उसमें सारी खूबियाँ हैं और अल्लाह हर उस चीज़ से पाक है जिसमें कोई भी ऐ़ब,बुराई या कमी हो या़नी उसमें ऐ़ब और नुक़सान का होना मुह़ाल है। बल्कि जिसमें न कोई कमाल हो और न कोई नुक़सान वह भी उसके लिए मुह़ाल है मिसाल के त़ौर पर झूट बोलना, दग़ा देना,ख़ियानत करना,ज़ुल्म करना और जिहालत और बेहयाई वग़ैरा ऐ़ब अल्लाह के लिए मुहाल हैं। और यह कहना कि झूट पर कुदरत इस माना कर कि वह खुद झूट बोल सकता है मुह़ाल को मुमकिन ठहराना और खुदा को ऐ़बी बताना है बल्कि खुदा का इन्कार करना है और यह समझना कि यदि वह मुहाल पर क़ादिर न होगा तो उसकी कुदरत नाक़िस़ रह जायेगी बिल्कुल बात़िल है या़नी बेअस्ल और बेकार की बात है कि उसमें कुदरत का क्या नुक़सान हैं। कमी तो उस मुह़ाल में है कि कुदरत से तअ़ल्लुक़ की उसमें सला़ह़ियत नहीं।

अक़ीदा :– ह़यात,कुदरत,सुनना,देखना,कलाम,इ़ल्म और इरादा उसकी ज़ाती सिफ़तें हैं मगर आँख, कान और ज़ुबान से उसका सुनना,देखना और कलाम करना नहीं क्योंकि यह सब जिस्म हैं और वह जिस्म से पाक है अल्लाह हर धीमी से धीमी आवाज़ को सुनता है। वह ऐसी बारीक चीज़ों को भी देखता है जो किसी भी खुर्दबीन या दुरबीन से न देखी जा सकें बल्कि उसका देखना और सुनना इन्हीं चीज़ो पर मुन्ह़सिर (निर्भर)नहीं बल्कि वह हर मौजूद को देखता और सुनता है।

अक़ीदा :– अल्लाह की दूसरी सिफ़तों की तरह़ उसका कलाम भी क़दीम हैं। ह़ादिस और मख़्लूक़

नहीं जो कुर्आन शरीफ़ को मख़लूक़ माने उसे हमारे इमामे आज़म हज़रत इमामे अबू हनीफ़ा,दूसरे इमामों और सहाबा रदियल्लाहु तआला अन्हुम ने काफ़िर कहा है।

अक़ीदा :– अल्लाह का कलाम आवाज़ से पाक है और यह कुर्आन शरीफ़ जिसकी हम अपनी ज़ुबान से तिलावत करते हैं और किताबों तथा काग़ज़ों में लिखते लिखाते हैं उसी का बिना आवाज़ के क़दीम कलाम है। हमारा पढ़ना लिखना और यह हमारी आवाज़ हादिस़ और जो हमने सुना क़दीम। हमारा याद करना हादिस और हमने जो याद किया क़दीम है। इसे यूँ समझो कि तजल्ली हादिस और मुतजल्ली(तजल्ली डालने वाला) क़दीम है।

अक़ीदा :– अल्लाह का इल्म,जुज़्यात,कुल्लियात,मौजूदात मादूमात मुमकिनात और मुहालात को मुहीत (घेरे हुए) है यानी सबको अज़ल में जानता था और अब भी जानता है और अबद तक जनेगा। चीज़ें बदल जाया करती हैं लेकिन अल्लाह का इल्म नहीं बदला करता। वह दिलों की बातों और वसवसों को जानता है। यहाँ तक कि उसके इल्म की कोई थाह नहीं।

अक़ीदा :– वह हर खुली और ढकी चीज़ों को जानता है और उसका इल्म ज़ाती है और ज़ाती इल्म उसी के लिए ख़ास है जो कोई ढकी छिपी या ज़ाहिरी चीज़ों का ज़ाती इल्म अल्लाह के सिवा किसी दूसरे के लिये साबित करे वह काफ़िर है क्योंकि किसी दूसरे के लिए ज़ाती इल्म मानने का मतलब यह है कि बग़ैर खुदा के दिये खुद हासिल हो।

अक़ीदा :– अल्लाह ही हर तरह की ज़ातों और कामों को पैदा करने वाला है। हक़ीक़त में रोज़ी पहुँचाने वाला सिर्फ़ अल्लाह ही है और फ़रिश्ते रोज़ी पहुँचाने के ज़रिये हैं।

अक़ीदा :– अल्लाह तआला ने हर भलाई और बुराई को अपने अज़ली इल्म के मुवाफ़िक़ मुक़द्दर कर दिया है यानी जैसा होने वाला था और जो जैसा करने वाला था उसने अपने इल्म से जाना और वही लिख लिया। इसका यह मतलब हरगिज़ नहीं कि जैसा उसने लिख दिया वैसा ही हमको करना पड़ता है बल्कि हम जैसा करने वाले थे वैसा उसने लिख दिया है। अगर अल्लाह ने ज़ैद के ज़िम्मे में बुराई लिखी तो इसलिये कि ज़ैद बुराई करने वाला था अगर ज़ैद भलाई करने वाला होता तो वह उसके लिये भलाई लिखता। अल्लाह तआला के लिख देने ने किसी को मजबूर नहीं कर दिया। यह तक़दीर की बातें हैं और तक़दीर की बातों का इन्कार नहीं किया जा सकता। तक़दीर के इन्कार करने वालों को हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने इस उम्मत का मजूस बताया है।

अक़ीदा :– कज़ा या तक़दीर की तीन क़िस्में हैं ।

1. **मुबरमे हक़ीक़ी** कि इल्मे इलाही में किसी शय पर मुअल्लक़ नहीं।

2. **मुअल्लक़े महज़** जो फ़रिश्तों के लिखे में किसी चीज़ पर उसका मुअल्लक़ होना। ज़ाहिर फ़रमा दिया गया है यानी जो दुआ या सदक़ों से बदल जाए।

3. **मुअल्लक़े शबीह ब मुबरम** जिसके मुअल्लक़ होने का फ़रिश्तों के लेखों में ज़िक्र नहीं लेकिन अल्लाह के इल्म में मुअल्लक़ है। इस क़ज़ा की घटना होने न होने का दोहरा उल्लेख किसी शर्त के साथ है।

अब क़ज़ा या तक़दीर की तीन क़िस्में जिनके बारे में कुछ तफ़सील से लिखा जाता है:–

1. "मुबरमे हक़ीक़ी" यह वह क़ज़ा है जिसकी तबदीली मुमकिन नहीं अगर इस बारे में अल्लाह के

ख़ास बन्दे कुछ कहते हैं तो उन्हें वापस कर दिया जाता है जैसा कि जब क़ौमे लूत पर फ़रिश्ते अज़ाब लेकर आये तो हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने उन काफ़िरों को अज़ाब से बचाने के लिए कोशिश की और यहाँ तक कि जैसा कि अल्लाह ने क़ुर्आन शरीफ़ में इस बात को इस तरह बताया है कि يُجَادِلُنَا فِىْ قَوْمِ لُوْطٍ

तर्जमा :– "हमसे क़ौमे लूत के बारे में झगड़नें लगा"।

जो बेदीन यह कहते हैं कि अल्लाह के आगे कोई दम नहीं मार सकता और जो लोग अल्लाह की बारगाह में अल्लाह के महबूबों की कोई इज़्ज़त नहीं मानते, वह क़ुर्आन के इस टुकड़े को देखें कि अल्लाह ने अपने महबूब की इज़्ज़त और शान को इन अल्फ़ाज़ में बढ़ाया है कि इब्राहीम हम से झगड़ने लगा।

दूसरी बात यह है कि हदीस शरीफ़ में आया है कि मेराज की रात हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने एक आवाज़ ऐसी सुनी कि कोई अल्लाह के साथ बहुत तेज़ी और ज़ोर ज़ोर से बातें कर रहा है। हुज़ूर अ़लैहिस्सलाम ने हज़रते जिब्रील से पूछा कि यह कौन हैं ? उन्होंने कहा कि यह मूसा अ़लैहिस्सलाम हैं। हुज़ूर ने फ़रमाया कि अपने रब पर तेज़ होकर बात करते हैं। तो जवाब में हज़रते जिब्रील अ़लैहिस्सलाम ने कहा कि "उनका रब जानता है कि उनके मिज़ाज में तेज़ी है"।

तीसरी बात यह है कि जब यह आयत उतरी कि وَلَسَوْفَ يُعْطِيْكَ رَبُّكَ فَتَرْضٰى

तर्जमा :– बेशक क़रीब है कि तुम्हें तुम्हारा रब इतना अ़ता फ़रमायेगा कि तुम राज़ी हो जाओगे। तो हुज़ूर सैय्यदुल महबूबीन सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने यह फ़रमाया कि।

اِذًا لَّا اَرْضٰى وَ وَاحِدٌ مِّنْ اُمَّتِىْ فِى النَّارِ

तर्जमा :– अगर ऐसा है तो मैं नहीं राज़ी होंगा अगर मेरा एक उम्मती भी आग में हो। यह तो बड़ी ऊँची बातें है और उनकी शान तो ऐसी है कि जिस पर सारी बलन्दियाँ क़ुर्बान हैं। मुसलमान के कच्चे बच्चे जो हमल से गिर जाते हैं उनके लिए भी हदीसों में आया है कि वे अपने माँ बाप की बख़्शिश के लिए उपने रब से क़ियामत के दिन ऐसा झगड़ेंगे कि जैसा कोई क़र्ज़ा देने वाला अपने दिये हुए क़र्ज़े के लिये झगड़ा करता है और उस झगड़ने वाले कच्चे बच्चे से यह कहा जायेगा कि :– اَيُّهَا السِّقْطُ الْمُرَاغِمُ رَبَّهٗ

तर्जमा :– ऐ अपने रब से झगड़ने वाले कच्चे बच्चे! अपने माँ बाप का हाथ पकड़ ले और जन्नत में चला जा।

ख़ैर यह तो जुमला बीच में आ गया मगर ईमान वालों के लिए बहुत नफ़ा बख़्श और इन्सानों में रहने वाले शैतानों की ख़बासत को दूर करने वाला है। कहना यह है कि क़ौमे लूत पर अज़ाब क़ज़ाए मुबरमे हक़ीक़ी था। हज़रते ख़लीलुल्लाह अ़लानबीय्यिना व अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम उसमें झगड़े तो उन्हें इरशाद हुआ :– يٰۤاِبْرٰهِيْمُ اَعْرِضْ عَنْ هٰذَا اِنَّهُمْ اٰتِيْهِمْ عَذَابٌ غَيْرُ مَرْدُوْدٍ

तर्जमा :– "ऐ इब्राहीम इस ख़्याल में न पड़ो बेशक उन पर अज़ाब ऐसा आने वाला है जो फिरने का नहीं।" और वह क़ज़ा जो ज़ाहिर में क़ज़ाए मुअ़ल्लक़ है उस क़ज़ाए मुअ़ल्लक़ तक बहुत से औलिया किराम की पहुँच होती है और औलिया किराम की दुआ़ से उन की तवज्जह से यह क़ज़ा

टाल दी जाती है। और यह क़ज़ा जो दरमियानी हालत में है जिसे फ़रिश्तों के सुहुफ़(लेखों) किताबों के एअ्तिबार से 'मुबरम'भी कह सकते हैं। और यह वह क़ज़ा है जिस तक अल्लाह तआला के बहुत ही ख़ास अल्लाह के नेक बन्दों की पहुँच होती है''।

हज़रत ग़ौसे आज़म रदियल्लाहु तआला अन्हु इसी क़ज़ा के बारे में फ़रमाते हैं कि ''में क़ज़ाए मुबरम को टाल देता हूँ और हदीस शरीफ़ में इसी बारे में आया है कि :– إِنَّ الدُّعَاءَ يَرُدُّ الْقَضَاءَ مَا أُبْرِمَ

तर्जमा :– ''बेशक दुआ क़ज़ाए मुबरम को टाल देती है''।

इस हदीसे पाक से यही दरमियानी क़ज़ा मुराद है ।

मसअ्ला :– तक़दीर की बातें आम लोग नहीं समझ सकते। इनमें ज़्यादा ग़ौर व फ़िक्र करना बरबाद होने का सबब है। इसीलिए हज़रते अबूबक्र और हज़रते उ़मर रदियल्लाहु तआला अन्हुमा इस मसअ्ले में बहस करने से रोक दिए गए हमारी और तुम्हारी क्या गिनती है। इतनी बात ध्यान में रहे कि अल्लाह ने आदमी को ईंट,पत्थर और दूसरे जमादात की तरह बेहिस और बेहरकत नहीं पैदा किया बल्कि उसको एक तरह का इख़्तियार दिया है कि एक काम को चाहे करे या न करे और उसके साथ ही उसको अक़्ल भी दी है कि भले बुरे तथा फ़ाइदे और नुक़सान को पहचान सके। और हर क़िस्म के सामान और असबाब अल्लाह तआला ने इन्सान को दे दिए हैं कि जब कोई काम करना चाहता है उसी क़िस्म के सामान हो जाते हैं और इसी बिना पर इन्सान की पकड़ है। अपने आपको बिल्कुल पत्थर की तरह मजबूर या बिल्कुल मुख़्तार समझना दोनों गुमराही हैं।

मसअ्ला :– दूसरी बात यह है कि बुरा काम करके यह कहना कि ''तक़दीर में ऐसा ही था और अल्लाह तआला की मर्ज़ी ऐसी ही थी''बहुत बुरी बात है। शरीअ़त का हुक्म यह है कि जो अच्छा काम करे उसे अल्लाह की तरफ़ से जाने और जो बुरा करे उसे अपने नफ़्स की तरफ़ से और इबलीसे लईन की तरफ़ से समझे।

अक़ीदा :– अल्लाह तआला जहत (दिशा) और जगहों और वक़्तों और हिलने और रूकने और शक्ल व सूरत और तमाम हादिस चीज़ों से पाक है इसलिए कि अल्लाह तआला ज़मीन व आसमान का नूर है

अक़ीदा :– दुनिया की ज़िन्दगी में अल्लाह तआला का दीदार नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए ख़ास है और आख़िरत में हर सुन्नी मुसलमान अल्लाह तआला का दीदार करेगा।

अब रही दिल में देखने ख़्वाब में अल्लाह तआला के दीदार की बात तो यह दूसरे नबियों और वलियों के लिए भी हासिल है जैसा कि इमामे आज़म अबू हनीफ़ा रदियल्लाहु तआला अनहु को सौ बार ख़्वाब में अल्लाह तआला की ज़ियारत हुई।

अक़ीदा :– अल्लाह तआला का दीदार क़ियामत के दिन मुसलमानों को यक़ीनन होगा और यह नहीं कह सकते कि कैसे होगा क्यों कि जिस चीज़ को देखते हैं वह चीज़ देखने वाले से कुछ दूरी पर होती है और नज़दीकी या दूरी देखने वाले से किसी तरफ़ होती है। जब किसी को देखा जाता है तो उसे देखने में आगे पीछे दाहिने बायें ऊपर नीचे दूर या क़रीब देखा जाता है और अल्लाह तआला तमाम जहतों से पाक है। फिर रही यह बात कि आख़िर दीदार कैसे होगा ? तो ख़ूब समझ लो कि यहाँ 'कैसे'और 'क्यूँकर' की कोई गुंजाइश नहीं। इन्शाअल्लाह जब देखेंगे उस वक़्त बता देंगे

इन सब बातों का खुलासा यह है कि क्यों, कैसे, क्यूँकर आदि का सम्बन्ध अक़्ल से है और अल्लाह तआला की ज़ात तक अक़्ल पहुँच ही नहीं सकती और जहाँ तक अक़्ल पहुँचती है वह खुदा नहीं। जब अक़्ल वहाँ तक नहीं पहुँच सकती तो अक़्ल या नज़र उसे घेरे में ले भी नहीं सकती।

अक़ीदा :– अल्लाह जो चाहे और जैसे चाहे करे उस पर किसी को काबू नहीं और न कोई अल्लाह तआला को उसके इरादे से रोक सकता है। न वह ऊँघता है और न ही उसे नींद आती है। वह तमाम जहानों का निगेहबान है। वह न थकता है और न उकताता है। वही सारे आलम का पालनहार है। माँ बाप से ज़्यादा मेहरबान और हलीम है। अल्लाह ही की रहमत टूटे हुए दिलों का सहारा है। और उसी के लिए बड़ाई और अज़मत हैं। माँओं के पेट में जैसी चाहे सूरत बनाने वाला वही है। आल्लाह ही गुनाहों का बख़्शने वाला,तौबा क़बूल करने वाला और क़हर और ग़ज़ब फ़रमाने वाला है। और उसकी पकड़ ऐसी कड़ी है कि बिना उसके छुड़ाये कोई छूट ही नहीं सकता। अल्लाह चाहे तो छोटी चीज़ों को बड़ी कर दे और फैली चीज़ों को समेट दे। वह जिसको चाहे ऊँचा कर दे और जिसको चाहे नीचा वह चाहे तो ज़लील को इज़्ज़त दे और इज़्ज़त वाले को ज़लील कर दे जिसको चाहे सीधे रास्ते पर लाये और जिसे चाहे सीधे रास्ते से अलग कर दे। जिसे चाहे अपने से क़रीब बना ले और जिसे चाहे मरदूद कर दे। जिसे जो चाहे दे और जिससे जो चाहे छीन ले। वह जो कुछ करता है या करेगा वह इन्साफ़ है और वह ज़ुल्म से पाक व साफ़ है आल्लाह हर बलन्द से बलन्द है। यहाँ तक कि उसकी बलन्दी की कोई थाह नहीं। वह सबको घेरे हुए है उसको कोई घेर नहीं सकता। फ़ायदा और नुक़सान उसी के हाथ में है। मज़लूम की फ़रयाद को पहुँचता है। और ज़ालिम से बदला लेता है। उसकी मशीयत और इरादे के बग़ैर कुछ नहीं हो सकता वह भले कामों से खुश और बुरे कामों से नाराज़ होता है। आल्लाह की रहमत है कि वह ऐसे कामों का हुक्म नहीं करता जो हमारी ताकत से बाहर हों। अल्लाह तआला पर सवाब या अज़ाब या बन्दे के साथ मेहरबानी या बन्दे जो अपने लिए अच्छा जानें वह अल्लाह के लिए वाजिब नहीं। वह मालिक है जो चाहे करे और जो चाहे हुक्म दे।

हाँ अल्लाह ने अपने करम से वअ़दा फ़रमा लिया है कि मुसलमानों को जन्नत में और काफ़िरों को जहन्नम में दाख़िल करेगा। और उसके वअ़दे और वईद कभी बदला नहीं करते उसका यह भी वअ़दा है कि कुफ़्र के सिवा हर छोटे बड़े गुनाहों को जिसे चाहे मुआफ़ कर देगा।

अक़ीदा :– अल्लाह तआला के हर काम में हमारे लिए बहुत सी हिकमतें है चाहे हम को मालूम हों या न हों और उसके काम के लिए कोई ग़र्ज़ नहीं क्यों कि ग़र्ज़ और ग़ायत उस फ़ायदे को कहते हैं जिसका तअल्लुक़ काम के करने वाले से हो और अल्लाह के काम किसी इल्लत और सबब के मुहताज नहीं अलबत्ता अल्लाह तआला ने कामों के लिए कुछ असबाब पैदा कर दिये हैं। आँख के सबब से देखा जाता है,कान के ज़रिये से सुना जाता है। आग जलाने का काम करती है और पानी के सबब से प्यास बुझती है। लेकिन अगर अल्लाह चाहे तो आँख सुनने लगे कान देखने लगे पानी जलाने लगे और आग प्यास बुझाये। और न चाहे तो लाख आँखें हों दिन को भी पहाड़ नज़र नहीं आयेगा। और आग के अंगारे में तिनका भी बेदाग़ रहेगा।

वह आग कितने ग़ज़ब की थी कि जिसमें काफ़िरों ने हज़रते इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम को डाला

आग ऐसी थी कि कोई उसके पास जा नहीं सकता था इसलिए उन्हें गोफ़न में रख कर फेंका गया। जब आग के सामने पहुँचे तो हज़रते जिब्रील अ़लैहिस्सलाम आये और पूछा कि अगर कोई ह़ाजत हो तो आप बतायें। उन्होंने फ़रमाया कि है तो लेकिन तुमसे नहीं। और इस त़रह़ इरशाद फ़रमाया कि

عِلْمُهٗ بِحَالِی كَفَانِی عَنْ سُؤَالِی

तर्जमा :– " उसको मेरे ह़ाल का इ़ल्म होना बस काफ़ी है मुझे अपनी ह़ाजत बयान करने से"।

उधर अल्लाह तआ़ला ने आग को यह हुक्म दिया कि

يَا نَارُ كُوْنِی بَرْدًا وَّ سَلٰماً عَلٰی اِبْرَاهِیْمَ

तर्जमा :– "ऐ आग हो जा ठन्डी और सलामती इब्राहीम पर"।

इस बात को सुनकर दुनिया में जहाँ कहीं पर भी आगें थीं यह समझते हुए सब टंडी हो गईं कि शायद मुझी से कहा जा रहा है। और नमरूद की आग तो ऐसी टंडी हुई कि उ़लमा फ़रमाते हैं अगर उसके साथ वसलामन का लफ़्ज़ न होता तो आग इतनी टन्डी हो जाती कि उसकी टन्डक से हज़रते इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम को तकलीफ़ पहुँच जाती। बताना यह था कि आग का काम जलाने का ज़रूर है लेकिन अगर अल्लाह चाहे तो आग टन्डी हो सकती है।

नुबुव्वत के बारे में अ़क़ीदे

मुसलमानों के लिए जिस त़रह़ अल्लाह की ज़ात और सिफ़ात का जानना ज़रूरी है कि किसी दीनी ज़रूरी बात के इन्कार करने या मुह़ाल के साबित करने से यह काफ़िर न हो जाये इसी त़रह़ यह जानना भी ज़रूरी है कि नबी के लिए क्या जाइज़ है और क्या वाजिब और क्या मुह़ाल है क्यूँकि वाजिब का इन्कार करना और मुह़ाल का इक़रार करना कुफ़्र की वजह है और बहुत मुमकिन है कि आदमी नादानी से अ़क़ीदा ख़िलाफ़ रखे या कुफ़्र की बात जुबान से निकाले और हलाक़ हो जाए।

अ़क़ीदा :– नबी उस बशर को कहते हैं जिसे अल्लाह तआ़ला ने हिदायत के लिए 'वह़ी' भेजी हो और रसूल बशर ही के साथ ख़ास नहीं बल्कि फ़रिश्ते भी रसूल होते हैं।

अ़क़ीदा :– अम्बिया सब बशर थे और मर्द थे। न कोई औरत कभी नबी हुई न कोई जिन्न।

अ़क़ीदा :– नबियों का भेजना अल्लाह तआ़ला पर वाजिब नहीं। उसने अपने करम से लोगों की हिदायत के लिए नबी भेजे।

अ़क़ीदा :– नबी होने के लिए उस पर वह़ी होना ज़रूरी है यह वह़ी चाहे फ़रिश्ते के ज़रिए हो या बिना किसी वास्ते और ज़रिएं के हो।

अ़क़ीदा :– बहुत से नबियों पर अल्लाह तआ़ला ने स़ह़ीफ़े और आसमानी किताबें उतारीं। उन किताबों में से चार किताबें मशहूर हैं।

1. **'तौरैत'**––––ह़ज़रते मूसा अ़लैहिस्सलाम पर।
2. **'ज़बूर'**––––ह़ज़रते दाऊद अ़लैहिस्सलाम पर।
3. **'इन्जील'**––––ह़ज़रते ईसा अ़लैहिस्सलाम पर
4. **'क़ुर्आन शरीफ़'** कि सबसे अफ़ज़ल किताब है। और यह किताब सबसे अफ़ज़ल रसूल,नबियों के सरदार ह़ज़रत मुह़म्मद स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम पर नाज़िल हुई। तौरात,ज़बूर, इन्जील

और कुरआन शरीफ़ यह सब अल्लाह तआ़ला के कलाम हैं और अल्लाह के कलाम में किसी का किसी से अफ़ज़ल होने का हरगिज़ यह मतलब नहीं कि अल्लाह का कोई कलाम घटिया हो क्योंकि अल्लाह एक है उसका कलाम एक है। उसके कलाम में घटिया बढ़िया की कोई गुन्ज़ाइश नहीं। अलबत्ता हमारे लिए कुर्आन शरीफ़ में सवाब ज़्यादा है।

अक़ीदा :– सब आसमानी किताबें और सहीफ़े हक़ हैं और सब अल्लाह ही के कलाम हैं उनमें अल्लाह तआ़ला ने जो कुछ इरशाद फ़रमाया उन सब पर ईमान ज़रूरी है। मगर यह बात अलबत्ता हुई कि अगली किताबों की हिफ़ाज़त अल्लाह तआ़ला ने उम्मत के सुपुर्द की थी और अगली उम्मत उन सहीफ़ों और किताबों की हिफाज़त न कर सकी इसलिए अल्लाह का कलाम जैसा उतरा था वैसा उनके हाथों में बाक़ी न रह सका बल्कि उनके शरीरों (बुरे लोगों) ने अल्लाह के कलाम में अदल बदल कर दिया जिसे तहरीफ़ कहते हैं। उन्होंने अपनी ख़्वाहिश के मुताबिक़ घटा बढ़ा दिया। इसलिए जब उन किताबों की कोई बात हमारे सामने आये तो अगर वह बात हमारी किताब के मुताबिक़ है तो हम को तस्दीक़ करना चाहिए और अगर मुख़ालिफ़ है तो यक़ीन कर लेंगे कि उन अगली शरीर उम्मतियों की तहरीफ़ात से है। और मुख़ालिफ़ या मुवाफ़िक़ कुछ पता न चले तो हुक्म है कि हम न तो तसदीक़ करें और न झुटलायें यूँ कहें कि–

امَنْتُ بِاللّٰهِ وَ مَلٰئِكَتِهٖ وَ كُتُبِهٖ وَ رُسُلِهٖ

तर्जमा :– अल्लाह और उसके फ़रिश्तों और उसकी किताबों और उसके रसुलों पर हमारा ईमान है।"

अक़ीदा :– चुँकि यह दीन हमेशा रहने वाला है इसलिए कुरआन शरीफ़ की हिफ़ाज़त अल्लाह तआ़ला ने अपने ज़िम्मे रखी जैसा कि कुर्आन शरीफ़ में है कि

اِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَ اِنَّا لَهٗ لَحٰفِظُوْنَ

तर्जमा :– बेशक हमने कुर्आन उतारा और बेशक हम खुद उसके ज़रूर निगेहबान हैं।

इसीलिए अगर तमाम दुनिया कुर्आन शरीफ़ के किसी एक हर्फ़ लफ़्ज़ या नुक़्ते को बदलने की कोशिश करे तो बदलना मुमकिन नहीं। तो जो यह कहे कि कुर्आन के कुछ पारे या सूरतें या आयतें या एक हर्फ़ भी किसी ने कम कर दिया या बढ़ा दिया या बदल दिया वह काफ़िर है क्यों कि उसने ऐसा कहकर ऊपर लिखी आयत का इन्कार किया।

अक़ीदा :– कुर्आन मजीद अल्लाह की किताब होने पर अपने आप दलील है कि अल्लाह तआ़ला ने खुद एअ़लान के साथ फ़रमाया है कि:–

وَاِنْ كُنْتُمْ فِىْ رَيْبٍ مِّمَّا نَزَّلْنَا عَلٰى عَبْدِنَا فَاْتُوْا بِسُوْرَةٍ مِّنْ مِّثْلِهٖ وَادْعُوْا شُهَدَآءَكُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ فَاِنْ لَّمْ تَفْعَلُوْا وَلَنْ تَفْعَلُوْا فَاتَّقُوا النَّارَ الَّتِىْ وَ قُوْدُهَا النَّاسُ وَ الْحِجَارَةُ اُعِدَّتْ لِلْكٰفِرِيْنَ.

तर्जमा :–"अगर तुमको इस किताब में जो हमने अपने सबसे ख़ास बन्दे (हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पर उतारी कोई शक हो तो उसकी मिस्ल (तरह) कोई छोटी सी सूरत कह लाओ और अल्लाह के सिवा अपने सब हिमायतियों को बुलाओ अगर तुम सच्चे हो तो अगर ऐसा न कर सको और हम कहे देते हैं हरगिज़ ऐसा न कर सकोगे तो उस आग से डरो जिसका ईंधन आदमी और पत्थर हैं जो काफ़िरों के लिए तैयार की गई है"।

लिहाज़ा काफ़िरों ने उस के मुक़ाबिले में जान तोड़ कोशिश की मगर उसके मिस्ल एक सूरत

न बना सके।

मसअला :– अगली किताबें नबियों को ही ज़ुबानी याद होतीं लेकिन क़ुर्आन मजीद का मोजिज़ा है कि मुसलमानों का बच्चा बच्चा उसको याद कर लेता है।

अक़ीदा :– क़ुर्आन मजीद की सात क़िरातें हैं। मतलब यह है कि क़ुर्आन मजीद सात तरीक़ों से पढ़ा जा सकता है और यह सातों तरीके बहुत ही मशहूर हैं उनमें से किसी जगह मआनी में कोई इख़्तिलाफ़ नहीं। वह सब तरीक़े हक़ हैं। उसमें उम्मत के लिए आसानी यह है कि जिसके लिए जो क़िरात आसान हो वह पढ़े। और शरीअत का हुक्म यह है कि जिस मुल्क में जिस क़िरात का रिवाज हो अवाम के सामने वही पढ़ी जाए।

क़ुर्आन शरीफ़ पढ़ने के सात क़ारियों के तरीक़े मशहूर हैं। यह सातों क़िरात के इमाम माने जाते हैं (1)इब्ने आमिर (2) इब्ने कसीर (3) आसिम (4) नाफ़े (5) अबू उमर (6) हमज़ा (7) किसाई रहमतुल्लाहि अजमईन। हमारे मुल्के हिन्दुस्तान में आसिम की रिवायत का ज़्यादा रिवाज है। इसीलिए रिवाज को ध्यान में रखते हुए हिन्दुस्तान में आसिम की रिवायत से ही क़ुर्आन शरीफ़ पढ़ा जाता है,क्योंकि अगर दूसरी रिवायत पढ़ी जाए तो लोग ना समझी में क़ुर्आन की आयत का इन्कार कर देंगे और यह कुफ़्र है।

अक़ीदा :– क़ुर्आन मजीद ने अगली किताबों के बहुत से अहकाम मन्सूख कर दिए हैं इसी तरह क़ुर्आन शरीफ़ की बाज़ आयातें बाज़ आयतों से मन्सूख़ हो गई हैं।

अक़ीदा :– नस्ख़(मनसूख़ करने)का मतलब यह है कि कुछ अहकाम किसी ख़ास वक़्त तक के लिए होते हैं मगर यह ज़ाहिर नहीं किया जाता कि यह हुक्म किस वक़्त तक के लिए है जब मिआद पूरी हो जाती है तो दूसरा हुक्म नाज़िल होता है जिस में ज़ाहिरी तौर पर यह पता चलता है कि वह पहला हुक्म उठा दिया गया और हक़ीक़त में देखा जाए तो उसके वक़्त का ख़त्म होना बताया गया और मन्सूख़ का मतलब कुछ लोग बातिल होना कहते हैं लेकिन यह बहुत बुरी बात है। क्योंकि अल्लाह के सारे हुक्म हक़ हैं उनके बातिल होने का कोई सवाल ही पैदा नहीं होता।

अक़ीदा :– क़ुर्आन शरीफ़ की कुछ बातें मुहकम और कुछ बातें मुताशाबिह हैं। मुहकम वह बातें हैं जो हमारी समझ में आती हैं और मुताशाबेह वह बातें हैं कि उनका पूरा मतलब अल्लाह और अल्लाह के हबीब सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के सिवा कोई नहीं जानता और न जान सकता है। अगर कोई मुताशाबेह के मतलब की तलाश करे तो समझना चाहिए कि उसके दिल में कजी (टेढ़) है।

अक़ीदा :– वही अल्लाह के पैग़ाम जो नबियों के लिए ख़ास होते है उन्हें वहये नुबुव्वत कहते हैं। और वहये नुबुव्वत नबी के अलावा किसी और के लिए मानना कुफ़्र है। नबी को ख़्वाब में जो चीज़ बताई जाए वह भी वही है। उसके झूटे होने का कोई गुमान नहीं। वली के दिल में कभी कभी सोते या जागते में कोई बात बताई जाती है उसको इल्हाम कहते हैं। और वहये शैतानी वह है कि जो शैतान की तरफ़ से दिल में कोई बात आये। यह वही काहिन (ज्योतिष)जादूगरों और दूसरे काफ़िरों और फ़ासिको के लिए होती हैं।

अक़ीदा :– नुबुव्वत ऐसी चीज़ नहीं कि आदमी इबादत या मेहनत के ज़रिए से हासिल कर सके।

बल्कि यह महज़ अल्लाह तआला की देन है कि जिसे चाहता है अपने करम से देता है और देता उसी को है कि जिसको उसके लायक़ बनाता है। जो नुबुव्वत हासिल करने से पहले तमाम बुरी आदतों से पाक और तमाम ऊँचे अख़लाक़ से अपने आप को संवार कर विलायत के तमाम दर्जे तय कर चुकता है। और अपने हसब, नसब,जिस्म,क़ौल और अपने सारे कामों में हर ऐसी बात से पाक होता है जिनसे नफ़रत हो। और उसे ऐसी कामिल अक़्ल अ़ता की जाती है जो औरों की अक़्ल से कहीं ज़्यादा होती है यहाँ तक कि किसी हाकिम और फ़ल्सफ़ी की अक़्ल उसके लाखवें हिस्से तक नहीं पहुँच सकती।

اَللّٰهُ اَعْلَمُ حَيْثُ يَجْعَلُ رِسٰلَتَهٗ ذٰلِكَ فَضْلُ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَاءُ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْم

तर्जमा :– "अल्लाह खूब जानता है जहाँ अपनी रिसालत रखे। यह अल्लाह का फ़ज़्ल है जिसे चाहे दे और अल्लाह बड़े फ़ज़्ल वाला है"।

अक़ीदा :– शरीअ़त का क़ानून यह है कि अगर कोई यह समझे कि आदमी कोशिश और मेहनत से नुबुव्वत तक पहुँच सकता है या यह समझे कि नबी से नुबुव्वत का ज़वाल यानी ख़त्म होना जाइज़ है वह काफ़िर है।

अक़ीदा :– नबी का मासूम होना ज़रूरी है। इसी तरह मासूम होने की खुसूसियत फ़रिश्तों के लिए भी है। और नबियों और फ़रिश्तों के सिवा कोई मासूम नहीं। कुछ लोग इमामों को नबियों की तरह मासूम समझते हैं यह गुमराही और बद्दीनी है। नबियों के मासूम होने का मतलब यह है कि उनकी हिफ़ाज़त के लिए अल्लाह तआला का वादा है इसीलिए शरीअ़त का फ़ैसला है कि उनसे गुनाह का होना मुहाल और नामुमकिन है।अल्लाह तआला इमामों और बड़े बड़े वलियों को भी गुनाहों से बचाता है मगर शरीअ़त की रौशनी में उनसे गुनाह का हो जाना मुहाल भी नहीं।

अक़ीदा :– अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम शिर्क से,कुफ़्र से और हर ऐसी चीज़ से पाक और मासूम हैं जिस से मख़लूक़ को नफ़रत हो जैसे झूट ,ख़ियानत और जिहालत वग़ैरा बुरी सिफ़तें। और ऐसे कामों से भी पाक हैं जो उनके नुबुव्वत से पहले और नुबुव्वत के बाद वजाहत और मुरव्वत के ख़िलाफ़ है। इस पर सबका इत्तिफ़ाक़ है। और कबीरा गुनाहों से भी सारे नबी बिल्कुल पाक और मासूम हैं। और हक़ तो यह है कि नुबुव्वत से पहले और नुबुव्वत के बाद नबी सग़ीरा गुनाहों के इरादे से भी पाक और मासूम हैं।

अक़ीदा :– अल्लाह तआला ने नबियों पर बन्दों के लिए जितने अहकाम नाज़िल किए वह सब उन्होंने पहुँचा दिए। अगर कोई यह कहे कि किसी नबी ने किसी हुक्म को छुपा रखा तक़िय्या यानी डर की वजह से नहीं पहुँचाया वह काफ़िर है क्योंकि तबलीग़ी अहकाम में नबियों से भूल चूक मुमकिन नहीं। ऐसी बीमारियाँ जिनसे नफ़रत होती है जैसे कोढ़,,बर्स और जुज़ाम वग़ैरा से नबी के जिस्म का पाक होना ज़रूरी है।

अक़ीदा :– इल्मे ग़ैब के बारे में अहले सुन्नत का मज़हब और मसलक यह है कि अल्लाह तआला ने नबियों को अपने ग़ैबों पर इत्तिला दी। यहाँ तक कि ज़मीन और आसमान का हर ज़र्रा हर नबी के सामने है। इल्मे ग़ैब दो तरह का है एक इल्मे ज़ाती और दूसरा इल्मे ग़ैब अ़ताई। इल्मे ग़ैब ज़ाती सिर्फ़ अल्लाह तआला ही को है और इल्में ग़ैब अ़ताई नबियों और वलियों को अल्लाह तआला के

देने से ह़ासिल होता है अ़ताई इल्म अल्लाह तआ़ला के लिए नामुमकिन और मुहाल है। क्यूँकि अल्लाह तआ़ला की कोई सिफ़त या कमाल चाहे उसका सुनना,देखना,कलाम,ज़िन्दगी और मौत देना वग़ैरा सिफ़तें किसी की दी हुई नहीं हैं बल्कि ज़ाती हैं। और नबियों की सिफ़तें या उनका इल्म ज़ाती नहीं। जो लोग यह कहते हैं कि नबी अ़लैहिस्सलाम को किसी त़रह़ का इल्मे ग़ैब नहीं वह क़ुर्आन शरीफ़ की इस आयत के मुत़ाबिक़ है।

اَفَتُؤْمِنُوْنَ بِبَعْضِ الْكِتَابِ وَ تَكْفُرُوْنَ بِبَعْضٍ

तर्जमा :– क़ुर्आन शरीफ़ की कुछ बातें मानतें हैं और कुछ का इन्कार करते है। वह आयतें देखते हैं जिनसे इल्मे ग़ैब की नफ़ी मा़लूम होती है क्योंकि वह लोग उन आयतों को देखते और मानते हैं जिनसे नबियों से इल्मे ग़ैब की नफ़ी का पता चलता है। और उन आयतों का इन्कार करते हैं जिनमें नबियों को इल्मे ग़ैब दिया जाना (अ़ता किया जाना)बयान किया गया है जब कि नफ़ी (इल्मे ग़ैब से इन्कार) और इसबात (इल्मे ग़ैब का सुबूत)दोनों ह़क़ हैं। वह इस त़रह़ कि नफ़ी इल्मे ज़ाती की है क्यूँकि यह उलूहियत यानी अल्लाह तआ़ला के लिए ख़ास है और इसबात इल्मे ग़ैब अ़ताई का है कि यह नबियों की ही शान और उन्हीं के लाइक़ है और उलूहियत के ख़िलाफ़ है।

अगर कोई यह कहे कि नबी के लिए हर ज़र्रे का इल्म मानने से ख़ालिक़ और मख़लूक़ में बराबरी लाज़िम आएगी उसका यह कहना बिल्कुल बात़िल है। ऐसी बात काफ़िर ही कह सकता है क्योंकि बराबरी तो उस वक़्त हो सकती है जबकि जितना इल्म मख़लूक़ को मिला है उतना ही इल्म ख़ालिक़ के लिए भी माना और साबित किया जाये।

फिर यह कि ज़ाती और अ़ताई का फ़र्क बताने पर भी बराबरी और मसावात का इल्ज़ाम देना खुले त़ौर पर ईमान और इस्लाम के ख़िलाफ़ है क्योंकि अगर इस फ़र्क़ के होते हुए भी बराबरी हो जाया करे तो लाज़िम आयेगा कि मुमकिन और वाजिब वुजूद में बराबर हो जाएं। क्योंकि मुमकिन भी मौजूद है और वाजिब भी मौजूद है। इस पर भी मुमकिन और वाजिब को वुजूद में बराबर कहना खुला हुआ शिर्क है।

अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम ग़ैब की ख़बरें देने के लिए आते ही हैं क्यूँकि दोज़ख़, जन्नत, क़ियामत, ह़श्र, नश्र, और अ़ज़ाब, सवाब, ग़ैब नहीं तो और क्या हैं। नबियों का मनस़ब ही यह है कि वह बातें बतायें कि जिन तक अ़क़्ल और ह़वास की भी पहुँच न हो सके और इसी का नाम ग़ैब है। वलियों को भी इल्म ग़ैब अ़ताई होता है मगर वलियों को नबियों के ज़रिए से इल्मे ग़ैब अ़ता किया जाता है।

अ़क़ीदा :– अम्बियाए किराम तमाम मख़लूक़ात यहाँ तक कि रसूलों और फ़रिश्तों से भी अफ़ज़ल हैं और वली कितना ही बड़े मरतबे और दर्जे वाला हो किसी नबी के बराबर नहीं हो सकता। शरीअ़त का क़ानून है कि जो कोई ग़ैर नबी को नबी से ऊँचा या नबी के बराबर बताये वह काफ़िर है।

अ़क़ीदा :– नबी की ताज़ीम फ़र्ज़े ऐन यानी हर एक पर फ़र्ज़ बल्कि तमाम फ़र्ज़ों की अस्ल है। यहाँ तक कि अगर कोई नबी की अदना सी भी तौहीन करे काफ़िर है।

अ़क़ीदा :– ह़ज़रते आदम अ़लैहिस्सलाम से हमारे हुज़ूर सय्यदे आ़लम ह़ज़रत मुह़म्मद स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम तक अल्लाह तआ़ला ने बहुत से नबी भेजे कुछ नबियों का ज़िक्र क़ुर्आन

शरीफ़ में खुले तौर पर आया है और कुछ का नहीं। जिन नबियों के मुबारक नाम खुले तौर पर कुर्आन शरीफ़ में आये हैं वह हैं :–

1.हज़रते आदम अलैहिस्सलाम 2.हज़रते नूह अलैहिस्सलाम 3.हज़रते इब्रहीम अलैहिस्सलमा 4.हज़रते इस्माईल अलैहिस्सलाम 5.हज़रते इसहाक़ अलैहिस्सलाम 6.हज़रते याकूब अलैहिस्सलाम 7.हज़रते युसूफ़ अलैहिस्सलाम 8.हज़रते मूसा अलैहिस्सलाम 9.हज़रत हारून अलैहिस्सलाम 10.हज़रते शूऐब अलैहिस्सलाम 11.हज़रते लूत अलैहिस्सलाम 12.हज़रते हूद अलैहिस्सलाम 13.हज़रते दाऊद अलैहिस्सलाम 14.हज़रते सुलैमान अलैहिस्सलाम 15.हज़रते अय्यूब अलैहिस्सलाम 16.हज़रते ज़करिया अलैहिस्सलाम 17.हज़रते याहया अलैहिस्सलाम 18.हज़रते ईसा अलैहिस्सलाम 19.हज़रते इल्यास अलैहिस्सलाम 20.हज़रते अलयसअ् अलैहिस्सलाम 21.हज़रते यूनुस अलैहिस्सलाम 22.हज़रते इदरीस अलैहिस्सलाम 23.हज़रते जुलकिफ़्ल अलैहिस्सलाम 24.हज़रते सालेह अलैहिस्सलाम 25.और हम सब के आक़ा और मौला हुज़ूर सय्यदुल मुरसलीन हज़रत मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम।

अक़ीदा :– हज़रते आदम अलैहिस्सलाम को अल्लाह तआला ने बिना माँ बाप के मिट्टी से पैदा किया और अपना ख़लीफ़ा (नाइब)बनाया और तमाम चीजों का इल्म दिया। फ़रिश्तों को अल्लाह ने हुक्म दिया कि हज़रते आदम अलैहिस्सलाम को सज्दा करें। सभी ने सजदे किए लेकिन शैतान जो जिन्नात की क़िस्म में से था मगर बहुत बड़ा आबिद और ज़ाहिद होने की वजह से उसकी गिनती फ़रिश्तो में होती थी उसने हज़रते आदम को सजदा करने से इन्कार कर दिया इसी लिए वह हमेशा के लिए मरदूद हो गया।

अक़ीदा :– हज़रते आदम अलैहिस्सलाम से पहले कोई इन्सान नहीं था बल्कि सब इन्सान हज़रते आदम की ही औलाद हैं। इसीलिए इन्सान को आदमी कहते हैं यानी आदम की औलाद और चूँकि हज़रते आदम अलैहिस्सलाम सारे इन्सानों के बाप हैं इसीलिए उन्हें"अबुल बशर"कहा जाता है यानी सब इन्सानों के बाप।

अक़ीदा :– सब में पहले नबी हज़रते आदम अलैहिस्सलाम हुए और सब में पहले रसूल जो काफ़िरों पर भेजे गए हज़रते नूह अलैहिस्सलाम हैं। उन्होंने साढ़े नौ सौ बरस तबलीग़ की। उनके ज़माने के काफ़िर बहुत सख़्त थे। वह हज़रते नूह अलैहिस्सलाम को दुख पहुँचाते और उनका मज़ाक़ उड़ाते यहाँ तक कि इतनी लम्बी मुद्दत में गिनती के लोग मुसलमान हुए। बाक़ी लोगों को जब उन्होंने देखा कि वह हरगिज़ राहे रास्त पर नहीं आयेंगे और अपनी हठधर्मी और कुफ़्र से बाज़ नहीं आयेंगे तो मजबूर होकर उन्होंने अपने रब से काफ़िरों की हलाकी और तबाही के लिए दुआ की। नतीजा यह हुआ कि तूफ़ान आया और सारी ज़मीन डूब गई और सिर्फ़ वह गिनती के मुसलमान और हर जानवर का एक एक जोड़ा जो कश्ती में ले लिया गया था बच गया।

अक़ीदा :– नबियों की तादाद मुक़र्रर करना जाइज़ नहीं क्यों कि तादाद मुक़र्रर करने और उसी तादाद पर ईमान रखने से यह ख़राबी लाज़िम आयेगी कि अगर जितने नबी आये उन से हमारी गिनती कम हुई तो जो नबी थे उनको हमने नुबुव्वत से ख़ारिज कर दिया और अगर जितने नबी आए उन से हमारी गिनती ज़्यादा हुई तो जो नबी नहीं थे उन को हमने नबी मान लिया यह दोनों

बातें इस लिए ठीक नहीं कि पहली सूरत में नबी नुबुव्वत से ख़ारिज हो जाऐंगे और दूसरी सूरत में जो नबी नहीं वह नबी माने जाऐंगे और अहले सुन्नत का मज़हब यह है कि नबी का नबी न मानना या ऐसे को नबी मान लेना जो नबी न हो कुफ़ है। इसलिए एअ्तिक़ाद यह रखना चाहिए कि हर नबी पर हमारा ईमान है।

अक़ीदा :– नबियों के अलग अलग दर्जे हैं कुछ नबी कुछ से फ़ज़ीलत रखते हैं और सब में अफ़ज़ल हमारे आक़ा व मौला सय्यदुल मुरसलीन सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम हैं। हमारे सरकार के बाद सब से बड़ा मरतबा हज़रते इब्राहीम ख़लीलुल्लाह अ़लैहिस्सलाम का है। फ़िर हज़रते मूसा अ़लैहिस्सलाम फ़िर हज़रते ईसा अ़लैहिस्सलाम और हज़रते नूह अ़लैहिस्सलाम का दर्जा है।

इन पाँचों नबियों को मुरसलीने उ़लुल अ़ज़्म कहते हैं और पाँचों बाक़ी तमाम नबियों रसूलों इन्सान,फ़रिश्ते,जिन्न और अल्लाह की तमाम मख़्लूक़ से अफ़ज़ल हैं।

जिस तरह हुज़ूर तमाम रसूलों के सरदार और सबसे अफ़ज़ल हैं तो उनकी उम्मत भी उन्हीं के सदक़े और तुफ़ैल में तमाम उम्मतों से अफ़ज़ल है।

अक़ीदा :– तमाम नबी अल्लाह तआ़ला की बारगाह में इ़ज़्ज़त वाले हैं। उनके बारे में यह कहना कि वह अल्लाह तआ़ला के नज़दीक चूड़े चमार की तरह हैं,कुफ़ और बेअदबी है।

अक़ीदा :– नबी के नुबुव्वत के बारे में सच्चे होने की एक दलील यह है कि नबी अपनी सच्चाई का एलानिया दावा कर के वह चीज़ें जो आ़दत के एअ्तिबार से मुहाल हैं उन्हें ज़ाहिर करने का ज़िम्मा लेता है और जो लोग नबी की नुबुव्वत और सदाक़त का इन्कार करते हैं यह उन काफ़िरों को चैलेन्ज करते हैं कि अगर तुम में सच्चाई हो तो तुम भी ऐसा कर दिखाओ लेकिन सारे के सारे काफ़िर आ़जिज़ रह जाते हैं और नबी अपने दावे में कामयाब होकर आ़दत के एअ्तिबार से जो चीज़ मुहाल होती हैं उनको अल्लाह के हुक्म से ज़ाहिर करता है और इसी को मोजिज़ा कहते हैं जैसे हज़रते सालेह अ़लैहिस्सलाम की ऊँटनी,हज़रते मूसा अ़लैहिस्सलाम के असा (छड़ी) का साँप हो जाना,उनकी हथेली में चमक का पैदा होना और हज़रते ईसा अ़लैहिस्सलाम का मुर्दों को जिलाना और पैदाइशी अन्धों और कोढ़ियों को अच्छा कर देना। और हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के तो बहुत से मोजिज़े हैं।

अक़ीदा :– जो शख़्स नबी न हो और अपने आप को नबी कहे वह नबियों की तरह आ़दत के ख़िलाफ़ अपने दावे के मुताबिक़ कोई काम नहीं कर सकता वर्ना सच्चे और झूटे में फ़र्क़ नहीं रह जायेगा।

फ़ायदा :– किसी नबी से अगर इज़्हारे नुबुव्वत के बाद आ़दत के ख़िलाफ़ कोई काम ज़ाहिर हो तो उसे मोजिज़ा कहते हैं। नबी से उस के इज़्हारे नुबुव्वत से पहले कोई काम आ़दत के ख़िलाफ़ ज़ाहिर हो तो उसे इरहास कहते हैं। ख़िलाफ़े आ़दत काम का मतलब ऐसे काम से है जिसे अ़क़्ल तस्लीम करने से आ़जिज़ हो और जिन का करना आ़म आदमी के लिए नामुमकिन हो।

और वली से ऐसी बात ज़ाहिर हो तो उसको करामत कहते हैं। आ़म मोमिनीम से अगर इस तरह का कोई काम होता तो उसे मुऊ़नत कहते हैं और बेबाक लोगों फ़ासिक़ों,फ़ाजिरों या काफ़िरों से जो उनके मुताबिक़ ज़ाहिर हो उसे इस्तिदराज कहते हैं।

अक़ीदा :– अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम अपनी अपनी क़ब्रों में उसी तरह हक़ीक़ी ज़िन्दगी के साथ

ज़िन्दा हैं जैसे दुनिया में थे। खाते पीते हैं जहाँ चाहें आते जाते हैं। अलबत्ता अल्लाह तआ़ला के वा़दे कि "हर नफ़्स को मौत का मज़ा चखना है"के मुता़बिक़ नबियों पर एक आन के लिए मौत आई और फिर उसी त़रह़ ज़िन्दा हो गए जैसे पहले थे। उनकी ह़यात शहीदों की ह़यात से कहीं ज़्यादा बलन्द व बाला है इसीलिए शरीअ़त का क़ानून यह है कि शहादत के बा़द शहीद का तर्का (बचा हूआ माल)तक़सीम होगा। उसकी बीवी इ़द्दत गुज़ार कर दूसरा निकाह़ कर सकती है लेकिन नबियों के यहाँ यह जाइज़ नहीं। अब तक नुबुव्वत के बारे में जो अ़क़ीदे बताए गए इनमें तमाम नबी शरीक़ है।

अब कुछ वह चीज़ें जो हम सब के आक़ा व मौला मदनी ताजदार सरकारे रिसालत ह़ज़रत मुह़म्मद स़ल्लल्लाहु तआला अ़लैहि वसल्लम के लिए ख़ा़स़ है बयान किये जाते हैं।

हमारे नबी की चन्द खुसूसियात

अ़क़ीदा :– ह़ज़रत मुह़म्मद स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के अ़लावा दूसरे नबियों को किसी एक ख़ा़स़ क़ौम के लिए भेजा गया और हुजूर स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम तमाम मख़लूक़, इन्सानोंजिनों,फ़रिश्तों ,ह़ैवानात और जमादात सब के लिए भेजे गये। जिस त़रह़ इन्सान के ज़िम्मे हुजूर की इता़अ़त फर्ज़ और ज़रूरी है इसी त़रह़ हर मख़लूक़ पर हुजूर की फ़रमाँबरदारी फ़र्ज़ और ज़रूरी है।

अ़क़ीदा :– हुजूर अक़दस स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहिवसल्लम फ़रिश्ते, इन्सान,जिन्न, हूर ग़िलमान, ह़ैवानात और जमादात ग़र्ज़ तमाम आ़लम के लिए रह़मत हैं और मुसलमानों पर तो बहुत ही मेहरबान हैं।

अ़क़ीदा :– हुजूर ख़ातमुन्नबीय्यीन हैं अल्लाह तआ़ला ने नुबुव्वत का सिलसिला हुजूर पर ख़त्म कर दिया। हुजूर के ज़माने में या उनके बा़द कोई नबी नहीं हो सकता जो कोई हुजूर के ज़माने में या उनके बा़द किसी को नुबुव्वत मिलना माने या जाइज़ समझे वह काफ़िर है।

अ़क़ीदा :– अल्लाह तआ़ला की तमाम मख़लूक़ात से हुजूर स़ल्लल्लाहु अ़लैहिवसल्लम अफ़ज़ल हैं कि औरों को अलग अलग जो कमालात दिए गए हुजूर में वह सब इकट्टा कर दिए गए और उनके अलावा हुजूर को वह कमालात मिले जिन में किसी का ह़िस्सा नहीं बल्कि औरों को जो कुछ मिला हुजूर के तुफ़ैल में बल्कि हुजूर के मुबारक हाथों से मिला और 'कमाल'इसलिए कमाल हुआ कि कमाल हुजूर की सिफ़त है और हुजूर अपने रब के करम से अपने नफ़्से ज़ात में कामिल और अकमल हैं । हुजूर का कमाल किसी वस्फ़ से नहीं बल्कि उस वस्फ़ का कमाल है कि कामिल हुजूर स़ल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की सिफ़त बनकर खुद कमाल,कामिल और मुकम्मल हो गया कि जिसमें पाया जाए उसको कामिल बना दे।

अ़क़ीदा :– हुजूर जैसा किसी का होना मुह़ाल है। हुजूर की ख़ा़स़ सिफ़्तों में अगर कोई किसी को हुजूर का मिस्ल बताए वह गुमराह या काफ़िर है।

अ़क़ीदा :– हुजूर स़ल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को अल्लाह तआ़ला ने"मह़बूबियते कुबरा"का मतरबा दिया है। यहाँ तक कि तमाम मख़लूक़ मौला की रज़ा चाहती है और अल्लाह तआ़ला ह़ज़रत मुह़म्मद मुस्तफ़ा स़ल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की रज़ा चाहता है।

अक़ीदा :– हुज़ूर स़ल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के ख़स़ाइस़ में से एक यह भी है। कि उन्हें मेअ्राज हूई। हुज़ूर अ़लैहिस्सलाम अपने ज़ाहिरी जिस्म के साथ मस्जिदे ह़राम से मस्जिदे अक़्सा और वहाँ से सातों आसमानों कुर्सी और अ़र्श तक बल्कि अ़र्श से भी ऊपर रात के एक थोड़े से हिस़्से में तशरीफ़ ले गए और उन्हें वह ख़ास़ कुरबत ह़ासिल हूई जो कभी भी न किसी बशर को हुई और न किसी फ़रिश्ते को मिली और न ऐसी कुरबत किसी को मिल सकती है।

हुज़ूर स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने अल्लाह का जमाल अपने सर की आँखों से देखा और अल्लाह का कलाम बिना किसी ज़रिए के सुना और ज़मीन व आसमान के हर ज़र्रे को तफ़स़ील से देखा। पहले और बाद की सारी मख़लूक़ हुज़ूर स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की मुह़ताज और न्याज़मन्द है यहाँ तक कि ह़ज़रते इब्राहीम ख़लीलुल्लाह अ़लैहिस्सलाम भी।

अक़ीदा :– क़ियामत के दिन शफ़ाअ़ते कुबरा का मरतबा हुज़ूर अ़लैहिस्सलाम के ख़स़ाइस़ में से एक खुसूसियत है कि जब तक हुज़ूर शफ़ाअ़त का दरवाज़ा नहीं खोलेंगे किसी को शफ़ाअ़त की मजाल न होगी बल्कि जितने भी शफ़ाअ़त करने वाले होंगे हुज़ूर के दरबार में शफ़ाअ़त लायेंगे और अल्लाह के दरबार में हुज़ूर की यह "शफ़ाअ़ते कुबरा"मोमिन,काफ़िर, फ़रमाँबरदारी करने वाले और गुनाहगार सबके लिए है। क्यूँकि वह हिसाब किताब का इन्तेज़ार जो बहुत सख़्त जान लेवा होगा जिसके लिए लोग तमन्नायें करेंगे कि काश जहन्नम में फेंक दिए जाते और इस इन्तेज़ार से नजात मिल जाती,इस बला से छुटकारा काफ़िरों को भी हुज़ूर की वजह से मिलेगा जिस पर पहले के बाद के मुवाफ़िक़, मुख़ालिफ़, मोमिन और काफ़िर सब लोग हुज़ूर की ह़म्द (त़ारीफ़)करेंगे। इसी का नाम मक़ामे मह़मूद है।

शफ़ाअ़त की और भी क़िस्में हैं जैसे यह कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम बहुतों को बिना ह़िसाब जन्नत में दाख़िल करायेंगे जिनमें चार अरब नव्वे करोड़ की गिनती का पता है बल्कि और भी ज़्यादा हैं जिन्हें अल्लाह जानता है और अल्लाह तआ़ला के प्यारे रसूल ह़ज़रत मुह़म्मद स़ल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम जानते हैं।

बहुत से वह लोग होंगे जिनका ह़िसाब हो चुका है और जहन्नम के लाइक़ हो चुके, उनको हुज़ूर दोज़ख़ से बचायेंगे। और ऐसे लोग भी होंगे जिनकी शफ़ाअ़त करके जहन्नम से निकालेंगे। हुज़ूर की शफ़ाअ़त से कुछ लोगों के दर्जे बलन्द किए जायेंगे और ऐसे भी होंगे जिनका अ़ज़ाब हल्का कियाजायेगा।

शफ़ाअ़त चाहे हुज़ूर खुद फ़रमायें या किसी दुसरे को शफ़ाअ़त की इजाज़त दें हर त़रह़ की शफ़ाअ़त हुज़ूर स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के लिए साबित है। हुज़ूर की किसी क़िस्म की शफ़ाअ़त का इन्कार करना गुमराही है।

अक़ीदा :– शफ़ाअ़त का मनसब हुज़ूर स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम को दिया जा चुका। सरकार खुद इरशाद फ़रमाते हैं कि :– اُعْطِيْتُ الشَّفَاعَةَ

तर्जमा :–"मुझे शफ़ाअ़त का मनसब दिया जा चुका है ।और अल्लाह तबारक व तआ़ला फ़रमाता है

وَاسْتَغْفِرْ لِذَنْۢبِكَ وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ ‎:- कि
तर्जमा :– "मग़फ़िरत चाहो(ऐ रसूल)अपने ख़ासों के गुनाहों और आ़म मोमिनीन और मोमिनात के गुनाहों की।"

"ऐ अल्लाह हम भी तेरे मह़बूब की शफ़ाअ़त के मुह़ताज हैं। तू हमारी फ़रियाद सुन ले।" हमारी दुआ़ है कि :–

اَللّٰهُمَّ ارْزُقْنَا شَفَاعَةَ حَبِيْبِكَ الْكَرِيْمِ يَوْمَ لَايَنْفَعُ مَالٌ وَّ لَا بَنُوْنَ اِلَّا مَنْ اَتَى اللّٰهَ بِقَلْبٍ سَلِيْمٍ .
तर्जमा :– " ऐ अल्लाह हमको अपने ह़बीबे मुकर्रम स़ल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की शफ़ाअ़त अ़ता फ़रमा जिस दिन न माल काम् आयेगा न बेटे मगर वह जो अल्लाह के पास ह़ाज़िर हुआ सलामत दिल लेकर"। शफ़ाअ़त के कुछ और ह़ालात और हुज़ूर स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की और दूसरी खुसूसियतें जो क़ियामत के दिन ज़ाहिर होंगी इन्शाअल्लाहु तआ़ला आख़िरत के ह़ालात में बताई जायेंगी।

नबी से मह़ब्बत

हुज़ूर स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की मह़ब्बत अस़्ल ईमान बल्कि ईमान उसी मह़ब्बत ही का नाम है। जब तक हुज़ूर की मह़ब्बत माँ,बाप,औलाद और सारी दुनिया से ज़्यादा न हो आदमी मुसलमान हो ही नहीं सकता।

अ़क़ीदा :– हुज़ूर की इत़ाअ़त ऐन (बिल्कुल)इताअ़ते इलाही है और इत़ाअ़ते इलाही बिना हुज़ूर की इत़ाअ़त के नामुमकिन है। यहाँ तक कि कोई मुसलमान अगर फ़र्ज़ पढ़ रहा हो और हुज़ूर उसे याद फ़रमाएं मतलब आवाज़ दें तो वह फ़ौरन जवाब दे और उनकी ख़िदमत में ह़ाज़िर हो। वह शख़्स जितनी देर तक भी हुज़ूर से बात करे वह उस नमाज़ में ही है। इससे नमाज़ में कोई ख़लल नहीं।

अ़क़ीदा :– हुज़ूर अकरम स़ल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की त़ाज़ीम व अ़ज़मत का एअ़तिक़ाद रखना ईमान का ह़िस्सा और ईमान का रूक्न है और ईमान के बाद त़ाज़ीम का काम हर फ़र्ज़ से पहले है। हुज़ूर की मह़ब्बत भरी इत़ाअ़त के बहुत से वाक़िआ़त मिलते हैं। यहाँ समझाने के लिए नीचे दो वाक़िआ़त लिखे जाते हैं जो कि ह़दीसे पाक में गुज़रे।

(1)ह़दीस शरीफ़ में है कि 'ग़ज़वये ख़ैबर'से वापसी में हुज़ूर स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम 'स़ह़बा'नाम की जगह पर अ़स्र की नमाज़ पढ़कर मौला अ़ली मुश्किल कुशा रदियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के ज़ानू पर अपना मुबारक सर रख कर आराम फ़रमाने लगे। मौला अ़ली ने अ़स्र की नमाज़ नहीं पढ़ी थी। देखते देखते सूरज डूब गया और अ़स्र की नमाज़ का वक़्त चला गया लेकिन ह़ज़रते अ़ली ने अपना ज़ानू इस ख़्याल से नहीं सरकाया कि शायद हुज़ूर के आराम में ख़लल आये। जब हुज़ूर ने अपनी आँखें खोलीं तो ह़ज़रते अ़ली ने अपनी अ़स्र की नमाज़ के जाने का ह़ाल बताया। हुज़ूर ने सूरज को हुक्म दिया डुबा हुआ सूरज पलट आया। मौला अ़ली ने अपनी अ़स्र की नमाज़ अ़दा की और जब ह़ज़रते अ़ली ने नमाज़ अदा कर ली तो सूरज फिर डूब गया।

इससे साबित हुआ कि मौला अ़ली ने हुज़ूर की इत़ाअ़त और मह़ब्बत में इ़बादतों में सबसे अफ़ज़ल नमाज़ और वह भी बीच वाली(अ़स्र)की नमाज़ हुज़ूर के आराम पर कुर्बान कर दी क्यूँकि

हकीकत में बात यह है कि इबादतें भी हमें हुजूर ही के सदके में मिली हैं।

(2)एक दूसरी हदीस यह है कि हिजरत के वक़्त पहले ख़लीफ़ा हज़रते अबूबक रदियल्लाहु तआला अन्हु हुजूर के साथ थे। रास्ते में "ग़ारे सौर"मिला। ग़ारे सौर में हज़रत अबूबक पहले गए देखा कि ग़ार में बहुत से सूराख़ हैं। उन्होंनें अपने कपड़े फ़ाड़ फ़ाड़ कर ग़ार के सूराख़ बन्द किए इत्तिफ़ाक़ से एक सूराख़ बाक़ी रह गया उन्होंने उस सूराख़ में अपने पाँव का अँगूठा रख दिया फ़िर हुजूर सल्ललाहु तआला अलैहि वसल्लम को बुलाया सरकार तशरीफ़ ले गये और हज़रते अबूबक सिद्दीक़ रदियल्लाहु तआला अन्हु के जानू पर सर रखकर आराम फ़रमाने लगे। उधर अँगूठे वाले सूराख़ में एक ऐसा साँप था जो सरकार की ज़ियारत के लिए बहुत दिनों से बेताब था। उसने अपना सर हज़रते सिद्दीक़ के अँगूठे पर रगड़ा लेकिन इस ख़्याल से कि हुजूर के आराम में फ़र्क़ न आए पाँव को नहीं हटाया। आख़िरकार उस साँप ने काट लिया। साँप के काटने से हज़रते सिद्दीके अकबर रदियल्लाहु तआला अन्हु को बहुत तकलीफ़ हूई। यहाँ तक कि हज़रते अबूबक की आँखों में आँसू आ गए और आँसूओं के क़तरे हुजूर के चेहरए अनवर पर गिरे। सरकार ने आँखें खोल दीं। हज़रते अबूबक ने सरकार से अपनी तकलीफ़ और साँप के काटने का हाल बताया। हुजूर ने तकलीफ़ की जगह पर अपना लुआबे दहन लगा दिया। लुआबे दहन लगाते ही उन्हें आराम मिल गया लेकिन हर साल उन्हीं दिनों में साँप के ज़हर का असर ज़ाहिर होता था बारह बरस के बाद उसी ज़हर से हज़रते अबूब्रक की शहादत हूई।

साबित हूआ कि जुमला फ़राइज़ फ़ूरूअ् हैं।
असलुल उसूल बन्दगी उस ताजवर की हैं।

"आलाहज़रत रदियल्लाहु तआला अन्हु"

अक़ीदा :– हुजूर की ताज़ीम और तौक़ीर अब भी उसा तरह फ़र्ज़े ऐन है जिस तरह उस वक़्त थी कि जब हुजूर हमारी ज़ाहिरी आँखों के सामने थे। जब हुजूर का ज़िक्र आए तो बहुत आजिज़ी, इन्किसारी और ताज़ीम के साथ सुने और हुजूर का नाम लेते ही और उनका नामे पाक सुनते ही दुरूद शरीफ़ पढ़ना वाजिब है।

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا وَ مَوْلَانَا مُحَمَّدٍ مَعْدَنِ الْجُوْدِ وَالْكَرَمِ وَ اٰلِهِ الْكِرَامِ وَ صَحْبِهِ الْعِظَامِ وَ بَارِكْ وَ سَلِّمْ

तर्जमा :– "ऐ अल्लाह तू दूरूद, सलाम और बरकत नाज़िल फ़रमा हमारे आक़ा व मौला पर जिनका नामे पाक मुहम्मद है। जो सख़ावत और करम की कान हैं,उनकी करामत वाली औलादों और उनके अज़मत वाले दोस्तों पर भी"।

हुजूर से महब्बत की अलामत यह है कि ज़्यादा से ज़्यादा उनका ज़िक्र करे और ज़्यादा से ज़्यादा उन पर दूरूद भेजे। और जब हुजूर का नाम लिखा जाए तो "स़ल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम"पूरा लिखा जाए। कुछ लोग 'सलअम'या 'स्वाद'लिख देते हैं यह नाजाइज़ व हराम है। हुजूर से महब्बत की पहचान यह भी है। कि हुजूर के आल,असहाब, मुहाजिरीन,अन्सार तमाम सिलसिले और तअल्लुक़ रखने वालों से महब्बत रखी जाए और अगरचे अपना बाप,बेटा,भाई और ख़ानदान का कोई क़रीबी क्यों न हो अगर हुजूर से उसे किसी तरह की दुश्मनी हो तो उससे अदावत रखी जाए अगर कोई ऐसा न करे तो वह हुजूर के महब्बत के दावे में झूटा है। सब जानते

हैं। कि सहाबए किराम ने हुजूर सल्ललल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की महब्बत में अपने रिश्तेदारों क़रीबी लोगों बाप भाईयों और वतन को छोड़ा क्यूँकि यह कैसे हो सकता है कि अल्लाह और उसके रसूल से महब्बत भी हो और उनके दुश्मनों से भी महब्बत बाक़ी रहे। यह दोनों चीज़ें एक दूसरे की ज़िद हैं और दो अलग अलग रास्ते हैं,एक जन्नत तक पहुँचाता है और एक जहन्नम के घाट उतारता है।

हुजूर से महब्बत की निशानी यह भी है कि हुज़र की शान में जो अल्फ़ाज़ इस्तेमाल किए जायें वह अदब में डूबे हूए हों। कोई ऐसा लफ्ज़ जिससे ताज़ीम में कमी की बू आती हो कभी ज़ुबान पर न लाए।

अगर हुजूर को पुकारना हो तो उनको उनके नाम के साथ न पुकारो मुहम्मद या मुस्तफ़ा,या मुर्तज़ा न कहो बल्कि इस तरह कहो :–

يَا نَبِیَّ اللّٰهِ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ يَا حَبِيْبَ اللّٰهِ۔

तर्जमा :– "ऐ अल्लाह के नबी,ऐ अल्लाह के रसूल,ऐ अल्लाह के हबीब। ज़्यारत की दौलत मिल जाए तो रौज़े के सामने चार हाथ के फ़ासले से अदब के साथ हाथ बाँध कर (जैसे नमाज़ में खड़े होते हैं)खड़ा हो कर सर झुकाए हुए सलात ओ सलाम अर्ज़ करे। बहुत क़रीब न जायें और न इधर उधर देखें और ख़बरदार कभी आवाज़ बलन्द न करना क्योंकि उम्र भर का सारा किया धरा अकारत (बेकार) जाएगा।

हुजूर से महब्बत की निशानी यह भी है कि हुजूर की बातें उनके काम और उनका हाल लोंगों से पूछे और उनकी पैरवी करे। हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के अक़वाल, अफ़आल किसी अमल और किसी हालत को अगर कोई हिक़ारत की नज़र से देखे वह काफ़िर है।

अक़ीदा :– हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह तआला के नाइब हैं। सारा आलम हुजूर के तसर्रुफ़ (इख़्तियार या क़ब्ज़े) में कर दिया गया है।जो चाहें करें,जिसे जो चाहें दें,जिससे जो चाहें वापस ले लें। तमाम जहान में उनके हुक्म का फेरने वाला कोई नहीं तमाम जहान उनका महकूम है। वह अपने रब के सिवा किसी के महकूम नहीं और तमाम आदमियों के मालिक हैं। जो उन्हें अपना मालिक न जाने वह सुन्नत की मिठास से महरूम रहेगा। तमाम ज़मीन उनकी मिल्कियत है,तमाम जन्नत उनकी जागीर है,मलकूतुस्समावाति वल अर्द यानी आसमानों और ज़मीनों के फ़रिश्ते हुजूर ही के दरबार से तक़सीम होती हैं। दुनिया और आख़िरत हुजूर की देन का एक हिस्सा है। शरीअत के अहकाम हुजूर के क़ब्ज़े में कर दिए गए कि जिस पर जो चाहें हराम कर दें और जिस के लिए जो चाहें हलाल कर दें और जो फ़र्ज़ चाहें माफ़ कर दें।

अक़ीदा :– सब से पहले नुबुव्वत का मरतबा हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को मिला और 'मीसाक़ के दिन'तमाम नबयों से हुजूर पर ईमान लाने और हुजूर की मदद कर ने का वअ़दा लिया गया। और इसी शर्त पर उन नबियों को यह बड़ा मनसब दिया गया ।'मीसाक़' का मतलब यह है कि एक रोज़ अल्लाह तआला ने सब रूहों को जमा करके यह पूछा कि "क्या मैं तुम्हारा रब

नहीं हूँ"तो जवाब में सब से पहले हमारे हुज़ूर स़ल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने हाँ,कहा था तो अल्लाह तआ़ला ने सब को और सारे नबियों को हुज़ूर पर ईमान लाने और उनकी मदद करने का वादा लिया था। यही 'मीसाक़ का मत़लब है। हुज़ूर सारे आ़लम के नबी तो हैं ही लेकिन साथ ही नबियों के भी नबी हैं और सारे नबी हुज़ूर के उम्मती हैं। इसीलिए हर नबी ने अपने अपने ज़माने में हुज़ूर के क़ाइम मुक़ाम काम किया अल्लाह तआ़ला ने हुज़ूर स़ल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को मुनव्वर किया। इस त़रह़ हुज़ूर स़ल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम हर जगह मौजूद हैं। जैसा कि एक शाय़र का अ़रबी शेर है।

كَالشَّمْسِ فِیْ وَسَطِ السَّمَاءِ وَ نُوْرِهَا يَغْشَى الْبِلَادِ مَشَارِقًا وَّ مَغَارِبًا

तर्जमा :– "आप ऐसे नूर हैं जैसा कि सूरज बीच आसमान में है और उसकी रौशनी तमाम शहरों में बल्कि मशरिक़ से मग़रिब तक हर सम्त में फै़ली हुई है।"

गर न बीनद बरोज़ शप्परा चश्म
चश्मये आफ़ताब रा चे गुनाह

तर्जमा :– "अगर चमगादड़ दिन को नहीं देखता तो इसमें सूरज की किरनों का क्या कु़सूर है"।

एक ज़रूरी मसअ्ला

अम्बिया अ़लैहिमुस्सलातु वस्सलाम से जो लग़ज़िशें हुई उनका ज़िक्र कु़र्आन शरीफ़ और ह़दीस शरीफ़ की रिवायत के अ़लावा बहुत सख़्त ह़राम है। दूसरों को उन सरकारों के बारे में ज़बान खोलने की मजाल और हिम्मत नहीं। अल्लाह तआ़ला उनका मालिक है जिस त़रह़ चाहे सुलूक़ करे और वह उसके प्यारे बन्दे हैं,अपने रब के लिए जैसी चाहें इनकिसारी करें। किसी दूसरे के लिए यह ह़क़ नहीं कि नबियों ने जो अल्फ़ाज अपने लिए इनकिसारी से इस्तेमाल किए हैं उनको सनद बनाए और उनके लिए बोले।

फिर यह कि उनके यह काम जिनको लग़ज़िश कहा गया है उनसे बहुत से फ़ायदों और बरकतों का नतीजा निकलता है।

सय्यिदना ह़ज़रते आदम अ़लैहिस्सलाम की एक लग़जिश को देखिए कि उससे कितने फ़ायदे हैं। अगर वह जन्नत से न उतरते तो दुनिया आबाद न होती,किताबें न उतरतीं,नबी और रसूल न आते आदमी न पैदा होते,आदमियों की ज़रूरत की लाखों चीज़ें न पैदा की जातीं,जिहाद न होते और करोड़ों फ़ायदे की वह चीज़ें जो ह़ज़रत आदम की लग़ज़िश के नतीजे में पैदा की गई हैं उनका दरवाज़ा बन्द रहता। उन तमाम चीज़ों के वुजूद में आने के लिए ह़ज़रते आदम अ़लैहिस्सलाम की एक लग़ज़िश का मुबारक नतीजा अच्छा फ़ल है बुनियाद है। फिर यह कि नबियों की लग़ज़िश का यह आ़लम है कि सिद्दीक़ीन की नेकियों से भी फ़ज़ीलत रखती हैं। हमारी और आप की क्या गिनती। जैसा कि मसल मशहूर है कि :–

حَسَنَاتُ الْاَبْرَارِ سَيِّاتُ الْمُقَرَّبِيْنَ

तर्जमा :– "नेक लोगों के अच्छे काम मुक़र्रबीन के लिए बुराईयाँ हैं।"

मलाइका (फ़िरिश्तों)का बयान

फ़िरिश्ते नूरी हैं। अल्लाह तआ़ला ने उन को यह ताक़त दी है कि जो शक्ल चाहें बन जायें फ़िरिश्ते कभी इन्सान की शक्ल बना लेते हैं और कभी दूसरी शक्ल में।

अ़क़ीदा :– फ़िरिश्ते वही करते हैं जो अल्लाह का हुक्म होता है। फ़िरिश्ते अल्लाह के हुक्म के ख़िलाफ़ कुछ नहीं करते। न जान बूझ कर,न भूले से और न ग़लती से। क्यूँकि वह अल्लाह के मा़सूम बन्दे हैं और हर त़रह़ के सग़ीरा और कबीरा (छोटे–बड़े) गुनाहों से पाक हैं।

अ़क़ीदा :– फ़िरिश्तों के ज़िम्मे अलग अलग काम हैं। कुछ वह हैं कि जिनके ज़िम्मे नबियों के पास 'वही'लाने का काम किया गया। कोई पानी बरसाता कोई हवा चलाता है कोई रोज़ी पहुँचाता है कोई माँ के पेट में बच्चे की सूरतें बनाता है कोई इन्सान के बदन में कमी बेशी करता है कुछ वह फ़िरिश्ते हैं जो इन्सान की दुश्मनों से ह़िफ़ाज़त करते हैं। कुछ वह हैं जो अल्लाह व रसूल का ज़िक्र करने वालों के मजमे को तलाश करके उस मजमे में ह़ाज़िर होते हैं। किसी के मुतअ़ल्लिक़ इन्सान के आ़माल नामा लिखने का काम कुछ वह हैं जो सरकारे रिसालत अ़लैहिस्सलाम के दरबार में ह़ाज़िरी देने का काम करते हैं। किसी के मुतअ़ल्लिक़ सरकार की बारगाह में मुसलमानों की स़लातु सलाम पहुँचाने का काम है। किसी के ज़िम्मे मुर्दों से सवाल करने का काम है कोई रूह़ क़ब्ज़ करता है। कुछ अ़ज़ाब देने का काम करते हैं। किसी के ज़िम्मे सूर फ़ुँकने का काम है। इनके अ़लावा और भी बहुत से काम हैं जो फ़िरिश्ते अन्जाम देते हैं। इसके बावजूद यह फ़िरिश्ते न तो क़दीम हैं और न ख़ालिक़। बल्कि सब मख़लूक़ हैं। फ़िरिश्तों को क़दीम या ख़ालिक़ मानना कुफ़्र है। फ़िरिश्ते न मर्द हैं न औ़रत।

अ़कीदा :– फ़िरिश्ते अनगिनत हैं उनकी गिनती वही जाने जिसने उन्हें पैदा किया है और अल्लाह के बताये से उसके प्यारे मह़बूब जानते हैं वैसे चार फ़िरिश्ते बहुत मशहूर हैं

1–ह़ज़रते जिब्रईल अ़लैहिस्सलाम
2–ह़ज़रते मीकाईल अ़लैहिस्सलाम
3–ह़ज़रते इसराफ़ील अ़लैहिस्सलाम
4–ह़ज़रते इ़ज़राईल अ़लैहिस्सलाम

यह फ़िरिश्ते दूसरे सारे फ़िरिश्तों से अफ़ज़ल हैं। किसी फ़िरिश्ते के साथ कोई हल्की सी गुस्ताख़ी भी कुफ़्र है। जाहिल लोग अपने किसी दुश्मन या ऐसे को देखकर जिस पर ग़ुस्सा आये उसे देखते ही कहते है कि 'मलकुल मौत 'या 'इ़ज़राईल'आ गया। लेकिन उन जाहिलों को ख़बर नहीं कि यह कलिमा कुफ़्र के क़रीब है।

अ़क़ीदा :– फ़िरिश्तों के बारे में यह अ़क़ीदा रखना या ज़ुबान से कहना कि फ़िरिश्तों का वुजूद नहीं है या यह कहना कि फ़रिश्ता नेकी की कुव्वत का नाम है और इसके सिवा कुछ नहीं यह दोनों बातें कुफ़्र हैं।

जिन्न का बयान

अल्लाह तआ़ला ने जिन्नों को आग से पैदा किया। इनमें बा़ज़ को यह ता़क़त दी है कि जो शक्ल चाहें बन जायें। इनकी उ़म्रें बहुत ज्यादा होती हैं। इनके शरीरों को शैता़न कहते हैं। यह सब

इन्सान की त़रह़ अ़क़्ल वाले,रूह़ और जिस्म वाले हैं। इनकी औलादें भी होती हैं। खाते पीते हैं। जीते मरते हैं।

अ़क़ीदा :– इनमें मुसलमान भी हैं और काफ़िर भी मगर इनके कुफ़्फ़ार इन्सानों की बनिस्बत बहुत ज़्यादा हैं और इनमें नेक मुसलमान भी हैं और फ़ासिक़ भी हैं, बदमज़हब भी। इनमें फ़ासिक़ों की ता़दाद इन्सानों से ज़्यादा है।

अ़क़ीदा :– जिन्नों के वुजूद का इन्कार करना या उनको बदी की कु़व्वत का नाम देना कुफ़्र है।

आ़लमे बरज़ख़ का बयान

दुनिया और आख़िरत के बीच एक और आ़लम है जिसको बरज़ख़ कहते हैं। मरने के बा़द और क़ियामत से पहले तमाम इन्सानों और जिनों को अपने अपने मरतबे के लिहाज़ से बरज़ख़ में रहना होता है। और यह आ़लम इस दुनिया से बहुत बड़ा है। दुनिया बरज़ख़ के मुक़ाबले में ऐसी है जैसे माँ के पेट में बच्चा। बरज़ख़ में कोई आराम से है और कोई तकलीफ़ से।

अ़क़ीदा :– हर एक के लिए मौत का दिन और वक़्त मुक़र्रर है। जिस की जितनी ज़िन्दगी है उसमें कमी बेशी नहीं हो सकती जब ज़िन्दगी के दिन पूरे हो जाते हैं उस वक़्त ह़ज़रते इ़ज़राईल अ़लैहिस्सलाम रूह़ क़ब्ज़ करने के लिए आते हैं। उस वक़्त उस आदमी को उसके दाएं बाएं हर त़रफ़ और जहाँ तक निगाह काम करती है। फ़िरिश्ते दिखाई देते हैं। मुसलमान के आस पास रह़मत के फ़िरिश्ते होते हैं और काफ़िर के दाहिने बाएं अ़ज़ाब के फ़िरिश्ते होते हैं। उस वक़्त हर एक पर इस्लाम की ह़क़्क़ानियत सूरज से ज़्यादा रौशन हो जाती है। उस वक़्त अगर कोई काफ़िर ईमान लाना चाहे तो उसका ईमान नहीं माना जायेगा। क्यों कि वह इसलाम की ह़क़्क़ानियत देख कर ईमान लाना चाहता है और हुक्म ईमान बिल ग़ैब का है या़नी बे देखे ईमान लाने का और अब ग़ैब या़नी बिना देखे न रहा लिहाज़ा ईमान क़बूल नहीं।

अ़क़ीदा :– मरने के बा़द भी रूह़ का रिश्ता इन्सान के बदन के साथ बाक़ी रहता है। रूह़ अगरचे बदन से अ़लग हो गई मगर बदन पर जो बीतेगी रूह़ को पता होगा और रूह़ पर उसका असर ज़रूर पड़ेगा जैसा कि दुनिया में जब बदन का असर रूह़ पर होता है उसी त़रह़ या उससे भी ज़्यादा मरने के बा़द होता है।

इन्सान जब अपनी दुनिया की ज़िन्दगी ठंडा पानी,हवा, नर्म बिस्तर या आराम देने वाली सवारियँा अपने इस्तेमाल में लाता है तो इन चीज़ों का असर जिस्म पर पड़ता है मगर आराम और राह़त रूह़ को मिलती है। ऐसे ही जब इन्सान गर्म पानी,गर्म हवा,सख़्त बिस्तर और तकलीफ़ देने वाली सवारियों को इस्तेमाल में लाता है तो उनकी गर्मी और सख़्ती का असर इन्सान के जिस्म पर पड़ता है लेकिन तकलीफ़ रूह़ को होती है लेकिन जो चीज़ इन्सान के जिस्म पर असर कर के रूह़ के आराम और तकलीफ़ का सबब बनती है रूह़ की तकलीफ़ और आराम इन्हीं असबाब पर मौक़ूफ़ नहीं बल्कि कुछ ऐसे सबब भी हैं जिनका इन्सान के जिस्म से कोई तअ़ल्लुक़ नहीं। जैसे कि क़भी इन्सानी रूह़ को खुशी ह़ोती है और कभी ग़म। और ज़ाहिर है कि इन चीज़ों का तअ़ल्लुक़ इन्सानी

जिस्म से कुछ भी नहीं बल्कि रूह के लिए आराम और तकलीफ़ के यह असबाब अलग से हैं।

अक़ीदा :– मरने के बाद मुसलमान की रूहें अपने अपने दर्जों के मुताबिक़ अलग अलग जगहों में रहती हैं। कुछ की क़ब्र पर कुछ की चाहेज़मज़म शरीफ़ में कुछ की आसमान और ज़मीन के बीच कुछ की पहले आसमान से सातवें आसमान तक कुछ की आसमानों से भी आला इल्लीन में रहती हैं। मगर यह रूहें जहाँ कहीं भी रहें उनका अपने जिस्म से रिश्ता उसी तरह बराबर क़ाइम रहता है। जो लोग उनकी क़ब्रों पर जाते हैं उनको वह पहचान लेते हैं और उनकी बातें सुनते हैं। और रूह के देखने के लिए यही ज़रूरी नहीं कि रूहें अपनी क़ब्रों से ही देखे बल्कि ह़दीस शरीफ़ में रूह की मिसाल इस तरह है कि एक चिड़िया पहले पिंजरे में बन्द थी और अब उसे छोड़ दिया गया और इमामों ने यह लिखा है कि।

اِنَّ النُّفُوْسَ الْقُدْسِيَّةَ اِذَا تَجَرَّدَتْ عَنِ الْعَلَائِقِ الْبَدْنِيَّةِ اتَّصَلَتْ
بِالْمَلَاءِ الْاَعْلٰى وَتَرٰى وَ تَسْمَعُ الْكُلَّ كَالْمُشَاهِدِ

तर्जमा :–"बेशक पाक जानें जब बदन की गिरफ़्त से अलग होती हैं तो 'आलमे बाला' से मिल जाती हैं। और सब कुछ ऐसा देखती सुनती हैं जैसे यहीं मौजूद हैं।"

और ह़दीस शरीफ़ में भी है कि :– اِذَا مَاتَ الْمُؤْمِنُ يُخَلّٰى سَرْبُهٗ حَيْثُ شَاءَ

तर्जमा :–" जब मुसलमान मरता है तो उसका रास्ता खोल दिया जाता है कि जहाँ चाहे जाये।"

हज़रत शाह अब्दुल अज़ीज़ साहिब मुहद्दिस देहलवी लिखते हैं कि "रूह रा क़ुर्ब व बोअ्दे मकानी यकसाँ अस्त" **तर्जमा** :– रूह के लिए जगह का क़रीब और दूर होना बराबर है।

मतलब यह है कि मोमिन की रूहें बिल्कुल आज़ाद हैं कि जब चाहें और जहाँ चाहें पहुँच जाएं। उन्हें क़ैद में नहीं रखा गया है। काफ़िरों की ख़बीस रूहों का यह हाल है कि कुछ की उनके मरघट या क़ब्र पर रहती हैं कुछ को "चाहे बरहूत" में (यमन में एक नाला है जिसका नाम चाहे बरहूत है) कुछ की रूहें पहली,दूसरी सातवीं ज़मीन तक और कुछ की रूहें उनके भी नीचे 'सिज्जीन में रहती हैं और वह भी जहाँ कहीं हों जो उनकी क़ब्र या मरघट पर जाए उसे देखते पहचानते और बात सुनते हैं। उन्हें आने जाने का इख़तियार नहीं क्यूँकि वह क़ैद में हैं।

अक़ीद :– यह अक़ीदा रखना कि रूह किसी दूसरे आदमी या किसी जानवर के बदन में चली जाती है बातिल और कुफ़्री अक़ीदा है। इस अक़ीदे को 'तनासुख़' और 'आवा गवन' का अक़ीदा कहते हैं या पुनर्जन्म भी कहते हैं। पुनर्जन्म को सच जानना कुफ़्र है।

अक़ीदा :– मौत का मतलब यह है कि रूह जिस्म से अलग हो जाए। इसका मतलब यह हरगिज़ नहीं कि रूह को मौत आ जाती है या रूह फ़ना हो जाती है। अगर कोई रूह के लिए फ़ना होना माने तो वह बदमज़हब है।

अक़ीदा :– मुर्दे कलाम भी करते हैं और उनकी बातों को आम लोग जिन और इन्सान नहीं सुन सकते लेकिन तमाम क़िस्म के जानवर वग़ैरा सुनते हैं।

अक़ीदा :– जब मुर्दे को क़ब्र में दफ़न करते हैं उस वक़्त क़ब्र उसको दबाती है। अगर वह मुसलमान है तो कब्र उसे इस तरह दबाती है जैसे माँ प्यार में अपने बच्चे को चिपटा लेती है और

अगर काफ़िर है तो उसको इस ज़ोर से दबाती है कि इधर की पसलियाँ उधर हो जाती हैं।

अक़ीदा :– दफ़्न करने वाले जब दफ़्न कर के चले जाते हैं तो मुर्दे उनके जूतों की आवाज़ सुनते हैं। उस वक़्त उनके पास दो फ़िरिश्ते अपने दातों से ज़मीन चीरते हुऐ आते हैं। उनकी शक्लें निहायत डरावनी और नीली,देग के बराबर शोले की तरह होती हैं। उनके सर से पाँव तक डरावने बाल होते हैं। उनके दाँत कई हाथ के होते हैं जिनमें वह ज़मीन चीरते हुए आयेंगे। इन दोनों फ़िरिश्तों में से एक को 'मुनकर'और दूसरे को 'नकीर' कहते हैं। यह फ़िरिश्ते मुर्दे को झिंझोड़ कर झिड़क कर उठाते हैं और बहुत सख़्ती के साथ सख़्त आवाज़ में मुर्दे से सवालात करते हैं। मुर्दे से पहला सवाल यह किया जाता हैं कि :– مَــــــــنْ رَبُّكَ **तर्जमा** :– तेरा रब कौन है ? फ़रिश्ते दूसरा सवाल यह करते हैं कि :– مَــــــا دِيْــــنُكَ **तर्जमा** :– तेरा दीन क्या है? और मुर्दे से तीसरा सवाल यह किया जाता है कि :– مَــا كُـنْــتَ تَـقُـوْلُ فِـىْ هٰـذَا الـرَّجُـلِ **तर्जमा** :– "(दुनिया में) इनके बारे में तू क्या कहता था।" मुर्दा अगर मुसलमान है तो पहले सवाल के जवाब में कहेगा कि :– رَبِّــــــىَ الـــلّٰـــــهُ तर्जमा :– मेरा रब अल्लाह है। दूसरा सवाल का जवाब यह देगा कि:–دِيْنِىَ الْاِسْلَامُ **तर्जमा** :–मेरा दीन इस्लाम है। और तीसरे सवाल का जवाब मोमिन और मुसलमान मुर्दा यह देगा कि:–هُوَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ **तर्जमा** :– वह तो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम हैं।

फ़िरिश्तें उससे पुछेंगे कि यह सब चीजें तुझे किसने बताई तो वह जवाब देगा मैंने अल्लाह की किताब पढ़ी और किताब को सच्चा समझ कर उस पर ईमान लाया। कुछ और रिवायतों में यह है कि फ़िरिश्ते सवालों के जवाब पाकर यह कहेंगे कि हमें तो पता था कि तू यही कहेगा।

उस वक़्त एक आवाज़ आयेगी कि मेरे बन्दे ने सच कहा। इसके लिए जन्नत का बिछौना बिछाओ जन्नत का लिबास पहनाओ इस के लिए जन्नत की तरफ़ एक दरवाज़ा खोल दो जन्नत की हवा और ख़ुश्बू उसके पास आती रहेगी और जहाँ तक नज़र फ़ैलेगी वहाँ तक उसकी क़ब्र खोल दी जाएगी और इससे कहा जायेगा कि तू इस तरह सो जा जैसे दुल्हन सोती है। यह ख़ास लोगों के लिए है। लेकिन अल्लाह चाहे तो आम मोमिनीन के लिए भी इसी तरह का आराम मिल सकता है। हाँ क़ब्र का फैलाव मर्तबों और दर्जों के लिहाज़ से अलग अलग है। कुछ ऐसे हैं जिनकी क़ब्रें सत्तर सत्तर हाथ लम्बी चौड़ी हो जाती हैं। कुछ ऐसे हैं कि उनकी क़ब्रें इससे भी ज़्यादा लम्बाई चौड़ाई में बढ़ा दी जाती हैं कि जहाँ तक उनकी निगाह पहुँचे और मोमिन गुनहगार पर उनके गुनाह के लाइक़ अज़ाब भी होगा। फ़िर वह अल्लाह की रहमत,अपने बड़े बड़े पीरों मज़हबे इस्लाम के इमाम यां अल्लाह के वलियों की शफ़ाअत से अगर अल्लाह चाहे तो नजात पायेंगे।

कुछ लोगों ने यह भी कहा है कि गुनहागार मोमिन पर अज़ाबे क़ब्र जुमा की रात आने तक है। उस रात के आते ही अज़ाब उठा लिया जायेगा। हाँ यह हदीस से साबित है कि जो मुसलमान जुमे की रात में जुमे के दिन या रमज़ान शरीफ़ के किसी दिन में या रात में मरेगा वह मुनकर नकीर के सवाल से और क़ब्र के अज़ाब से बचा रहेगा।

मोमिन मुर्दे के लिए जन्नत की खिड़की इस तरह खुलेगी कि पहले उसके बायें हाथ की तरफ़ से जहन्नम की खिड़की खोली जाएगी जिससे आग की लपट,जलन,गर्म हवा और तेज़ बदबू आयेगी। फिर यह खिड़की फ़ौरन बन्द कर दी जायेगी और मुर्दे की दाहिनी तरफ़ से जन्नत की खिड़की खुलेगी और इस से कहा जायेगा कि अगर तू इन सवालों के ठीक जवाब न देता तो तेरे

वास्ते वह खिड़की थी लेकिन अब यह है कि ताकि वह अपने रब की नेमत की क़द्र जाने कि उसने कैसी बड़ी बला से उसे नजात दी और कैसी बड़ी नेमत उसे अ़ता की।

मुनाफ़िक़ के लिए इसका उलटा होगा कि पहले जन्नत की खिड़की खुलेगी ताकि मुनाफ़िक़ उसकी खुश्बू,उसकी ठन्डक,आराम और नेमत की झलक देख ले और फ़िर वह खिड़की फ़ौरन बन्द कर दी जायेगी और दोज़ख़ की खिड़की खोल दी जायेगी ताकि उस पर बड़ी बला भी हो और दिल से ईमान न लाने की ह़सरत भी बाक़ी रहे कि हुज़ूर स़ल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को न मान कर या उनकी शान में गुस्ताख़ी करके कैसी दौलत खोई और कैसी आफ़त पाई।

मुनाफ़िक़ मुर्दा हर सवाल के जवाब में कहेगा।

هَاهْ هَاهْ لَا اَدْرِیْ

तर्जमा :– "अफ़सोस मुझे तो कुछ पता नहीं"। और यह भी कहेगा कि –

كُنْتُ اَسْمَعُ النَّاسَ يَقُوْلُوْنَ شَيْئًا فَاَقُوْلُ

तर्जमा :– "मैं लोगों को कुछ कहते सुनता था तो मैं भी कहता था।"

उस वक़्त ग़ैब से एक आवाज़ आयेगी कि यह झूटा है। इसके लिए आग का बिछौना बिछाओ,आग का लिबास पहनाओ और जहन्नम की त़रफ़ दरवाज़ा खोल दो। फ़िरिश्ते खिड़की खोल देंगे। उसकी गर्मी और लपट पहुँचेगी और उस पर अ़ज़ाब देने के लिए दो फ़रिश्ते मुक़र्रर होंगे जो अंधे और बहरे होंगे। उन के साथ लोहे का ऐसा गुर्ज़ होगा कि अगर उसे पहाड़ पर भी मारा जाये तो पहाड़ टुकड़े टुकड़े हो जाये। उस गुर्ज़ से मुनाफ़िक़ को वह फ़रिश्ते मारते रहेंगे। साँप और बिच्छू उसे डसते रहेंगे और उसके गुनाह कुत्ते या भेड़िये की शक्ल में ज़ाहिर हो कर उसे तकलीफ़ पहुँचायेंगे।

नेक लोगों के अच्छे अ़मल महबूब और अच्छी अच्छी सूरतों में ढलकर उनके दिल बहलायेंगे।

अ़क़ीदा :– क़ब्र के अ़ज़ाब और क़ब्र की नेमतें ह़क़ हैं यह दोनों चीजें जिस्म और रूह दोनों पर हैं जैसा कि ऊपर बताया गया। अगरचे जिस्म गल जाये जल जाये या खाक हो जाये मगर उसके अस़ली टुकड़े क़ियामत तक बाक़ी रहेंगे और उन्हीं पर अ़ज़ाब या सवाब होगा और क़ियामत के दिन दोबारा इन्हीं पर जिस्म की बनावट होगी। यह अजज़ा टुकड़े 'अ़जबुज़्ज़नब'कहलाते हैं। यह इतने बारीक होते है कि न किसी खुर्दबीन से नज़र आ सकते हैं न उन्हें आग जला सकती है न ज़मीन उन्हें गला सकती है। यही जिस्म के बीज हैं। इसीलए क़ियामत के दिन रूहें अपने उसी जिस्म ही में लौटेंगी। किसी दूसरे ब़दन में नहीं। जिस्म के ऊपरी ह़िस्सों के बढ़ने घटने से जिस्म नहीं बदलता। जैसे कि बच्चा पैदा होता है तो छोटा होता है फ़िर बड़ा और हट्टा कट्टा जवान होता है फ़िर वही बीमारी में दुबला पतला हो जाता है और उस पर जब नया गोश्त पोस्त आता है तो वह फिर अपनी अस़ली ह़ालत में आ जाता है। इन तबदीलियों से यह नहीं कहा जा सकता कि शख़्स बदल गया। ऐसे ही क़ियामत के दिन का लौटना है कि जिस्म के गोश्त और हड्डियाँ जो ख़ाक या राख हो गई हों और उनके ज़र्रे जहाँ कहीं भी फ़ैले हुए हों अल्लाह तबारक व तआ़ला उन्हें जमा कर के उसको पहली ह़ालत पर लायेगा। और वह अस़ली अजज़ा जो पहले से महफ़ूज़ हैं उनसे जिस्म को मुरक्कब करेगा य़ानी बनायेगा और हर रूह़ को उसी पुराने जिस्म में भेजेगा। इसका नाम

हमे बड़ी मुसर्रत हो रही है कि अल्लाह त'आला और उसके हबीब सल्लल्लाहु त'आला अलैहि वसल्लम के हुक्म फ़ज़्ल-ओ-करम से और बुज़ुर्गाने दीन सिलसिला-ए-क़ादिरिया बिलख़ुसूस पिराने पीर दस्तगीर हुज़ूर ग़ौस-ए-आज़म शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी रादिअल्लाहु त'आला अन्हू के फ़ैज़ से क़िताब बहार-ए-शरीअत (**हिस्सा 01 से 10**) हिंदी में पीडीएफ **[PDF]** में आप की खिदमत में पेश की जा रही है।

ज़माना-ए- क़दीम से अवमुन्नास की इस्लाहे हाल और हिदायते उख़रवी व दुनयवी के लिए हक़ सदाक़त के जाम की फ़राहमी की जाती रही हैं और ये इलतेज़ाम ख़ालिक़-ए-क़ायनात जल्ला जलालहु ने ब अहसान अपनी मख़लूक़ के लिए फ़रमाया है। अम्बिया व मुर्सलीन के बेहतरीन दौर के बाद उसने यह ख़िदमत अपने मुक़र्रबीन रिज़वानुल्लाह त'आला अलैहिम अजमईन के सुपुर्द की और यह सिलसिला अला हालही जारी व सारि है।

मज़हब-ए-इस्लाम अल्लाह त'आला का पसंदीदा दीन है । ज़िंदगी का कोई ऐसा शोबा नही जिसके लिए इस्लाम ने हमे क़ानून न दिया हो ।

आज जिस दौर से हम गुज़र रहे है हमारा मुस्लिम तबका उर्दू की तरफ ध्यान नही दे रहा है और नई नस्ल तो बिल्कुल ही उर्दू से नावाक़िफ़ होती जा रही है । नतीजे के तौर पर दीनी और मज़हबी दिलचस्पियाँ कम हो रही है और हम अपने हाल को ग़ैर मुंज़बित तरीके पे छोड़े रहते है ।

लिहाज़ा ये किताब हिंदी में लिखी गई है और आप सब की आसानी के लिए हम ने इस किताब को पीडीएफ फ़ाइल में आप की ख़िदमत में पेश किया है।
आप सब से हमारी गुज़ारिश है कि अपनी मसरूफ ज़िन्दगी में से रोज़ाना वक़्त निकाल कर बुज़ुर्गो की तस्नीफ़ करदा किताबो को मुताला में रखें , इंशा अल्लाह त'आला दीन और दुनिया दोनो में मक़बूल होंगे।

दुआओं के तलबगार

वसीम अहमद रज़ा खान और साथी

+91-8109613336

'हश्र'है। क़ब्र के अज़ाब और सवाब का इन्कार करना गुमराही है।

अक़ीदा :– मुर्दा अगर क़ब्र में दफ़्न न किया जाये तो जहाँ पड़ा रह गया,फेंक दिया गया या जला दिया गया ग़रज़ कहीं भी हो उससे वहीं सवालात होंगे। यहाँ तक कि उसे शेर या और कोई दरिन्दा खा गया तो उस मुर्दे से पेट में ही सवालात किये जायेंगे और उसे वहीं सवाब या अज़ाब पहुँचेगा।

एक ज़रूरी बात

मसअ्ला :– अल्लाह के वह ख़ास बन्दे जिनके बदन को मिट्टी नहीं खा सकती वह अम्बिया अलैहिमुस्सलाम औलियाए किराम दीन के आलिम क़ुर्आन शरीफ़ के हाफ़िज़ (जो क़ुरआन पर अमल करते हों)जिनको अल्लाह और उसके रसूल से महब्बत हो,वह जो अल्लाह के महबूब हों वह जिस्म जिसने कभी अल्लाह की नाफ़रमानी न की हो और वह लोग जो ज़्यादा से ज़्यादा दुरूद शरीफ़ पढ़ते हैं उनके बदन सलामत रहते हैं।अगर कोई किसी नबी की शान में गुस्ताख़ी और बेअदबी की यह बात कहे कि–'मर के मिट्टी में मिल गये'तो वह गुमराह और बद्दीन है।

आख़िरत और हश्र का बयान

बेशक ज़मीन,आसमान जिन,इन्सान और फ़रिश्ते सब एक दिन फ़ना हो,जायेंगे सिर्फ़ अल्लाह तआला ही हमेशा से है और हमेशा रहेगा।

दुनिया के फ़ना होने से पहले कुछ निशानियाँ ज़ाहिर होंगी जैसे :–

(1)तीन ख़ुसूफ़ होंगे मतलब यह कि आदमी ज़मीन में धँस जायेंगे यह ख़ुसूफ़ पूरब में दूसरा पश्चिम में और तीसरा अरब के जज़ीरे में।

(2)दीन का इल्म उठ जायेगा मतलब आलिम उठा लिए आयेंगे। ऐसा भी नहीं कि आलिम बाक़ी रहें और उनके दिलों से इल्म मिट जाये और ख़त्म हो जाये।

(3)जिहालत बहुत बढ़ जायेगी मतलब दीन का इल्म रखने वाले बहुत कम हो जायेंगे।

(4)ज़िना की ज़्यादती होगी और बेहयाई और बेशर्मी इतनी बढ़ जायेंगी बड़े छोटे का अदब लिहाज़ ख़त्म हो जायेगा।

(5)मर्द कम होंगे और औरतें इतनी ज़्यादा होंगी कि एक मर्द की मातहती में पचास पचास औरतें होंगी।

(6)उस बड़े दज्जाल के अलावा तीस और दज्जाल होंगे और यह सब नुबुव्वत का दावा करेंगे जबकि नुबुव्वत ख़त्म हो चुकी है। उन नुबुव्वत के दावा करने वालों में से कुछ गुज़र चुके हैं जैसे मुसैलमा कज़्ज़ाब तलीहा इब्ने खुवैलद असवद अंसी, सज्जाह(एक औरत जो बाद में इस्लाम ले आई)और गुलाम अहमद क़ादियानी के अलावा ज़ाहिर हेंगे।

(7)माल बहुत ज़्यादा हो जायेगा यहाँ तक कि फ़ुरात की नदी में से सोने के पहाड़ निकलेंगे।

(8)अरब जैसे मुल्क में खेती बाग़ और नहरें हो जायेंगी।

(9)दीन पर क़ाइम रहना इतना मुश्किल होगा जैसा कि मुठ्ठी में अंगारा लेना मुश्किल है। यहाँ तक कि नेक और शरीफ़ आदमी कब्रिस्तान में जाकर तमन्ना करेगा कि काश मैं इस क़ब्र में होता।

(10)वक़्त में बरकत न होगी यहाँ तक कि एक साल महीने की तरह महीना हफ़्ते की तरह हफ़्ता दिन की तरह और दिन ऐसा हो जायेगा कि जैसा किसी चीज़ को आग लगी और जल्दी ही

बुझ गई। यानी बहुत जल्दी जल्दी वक़्त गुज़रेगा।
(11)लोगों पर ज़कात देना भारी होगा लोग ज़कात को तावान जुर्माना समझेंगे
(12)कुछ लोग इल्मे दीन पढ़ेंगे लेकिन दीन के लिए नहीं बल्कि दुनिया के लिये।
(13)मर्द अपनी औरत का फ़रमाँबरदार होगा।
(14)औलादें अपने माँ बाप की नाफ़रमानी करेंगी।
(15)लड़के अपने दोस्तों से मेल जोल रखेंगे और माँ बाप से जुदा हो जायेंगे।
(16)लोग मस्जिदों में दुनिया की बेकार बातें करेंगे और चिल्लायेंगे ।
(17)गाने बजाने की ज़्यादती होगी
(18)लोग अगले लोगों पर लानत करेंगे। और उन्हें बुरा कहेंगे।
(19)दरिन्दे जानवर आदमी से बात करेंगे। कोड़े की फुंची और जूते के फ़ीते भी बात करेंगे। जब आदमी बाज़ार जायेगा तो जो कुछ उसके घर में हुआ होगा जूते के तस्मे उससे बतायेंगे। यहाँ तक कि इन्सान की रान भी इन्सान को ख़बर देगी।
(20)ज़लील और गंवार लोग जिनको तन का कपड़ा और पाँव की जूतियाँ नसीब न थी बड़े बड़े महलों में गुरूर के साथ रहेंगे।
(21) **दज्जाल का ज़ाहिर होना** :– दज्जाल चालीस दिन में (हरमैन शरीफ़ैन के अलावा) सारी दुनिया फिरेगा चालीस दिन में पहला दिन साल भर के बराबर होगा दूसरा दिन महीने भर के बराबर तीसरा दिन हफ़्ते के बराबर और बाक़ी दिन चौबीस घन्टे के होंगे दज्जाल आँधी तूफ़ान की तरह तेज़ी के साथ जैसे बादल को हवा उड़ाती हो सैर करेगा। उसका फ़ितना बहुत सख़्त होगा। उसके साथ एक आग होगी और एक बाग़ दज्जाल जहाँ जायेगा उसके साथ यह दोनों चीज़ें जायेंगी। आग को वह जहन्नम बतायेगा और बाग़ को जन्नत लेकिन जो देखने में आग होगी और जिसे जहन्नम समझा जायेगा वही हक़ीक़त में आराम की जगह होगी और जो देखने में बाग होगा वह हक़ीक़त में आग होगी

दज्जाल अपने आप को खुदा कहेगा जो उस पर ईमान लायेगा और उसे खुदा मान लेगा वह उसे अपनी जन्नत में डालेगा और जो उसे खुदा मानने से इन्कार करेगा उसको वह अपने जहन्नम में डाल देगा। दज्जाल मुर्दे जिलायेगा ज़मीन उसके हुक्म से सब्ज़े उगायेगी वह आसमान से पानी बरसायेगा लोगों के जानवर खूब लम्बे चौड़े तैयार और दूध वाले हो जायेंगे। और जब वह वीरान जंगलों में जायेगा तो शहद की मक्खियों की तरह दल के दल ज़मीन के खज़ाने उसके साथ हो जायेंगे इसी किस्म के वह बहुत से करतब और करिश्में दिखलायेगा लेकिन हक़ीक़त में कुछ भी न होगा यह सब जादू और शैतानों के करश्मे और तमाशे होंगे इसलिए दज्जाल के वहाँ से जाते ही लागों के पास कुछ न रहेगा। दज्जाल जब हरमैन शरीफ़ैन में जाना चाहेगा तो फ़रिश्ते उसका मुँह फेर देंगे। अलबत्ता मदीने शरीफ़ में तीन ज़लज़ले आयेंगे वहाँ के जो लोग ज़ाहिर में मुसलमान बने होंगे और दिल से काफ़िर होंगे और वह लोग जिनके बारे में अल्लाह जानता है कि वे दज्जाल पर ईमान लाकर काफ़िर होंगे वह सब लोग इन ज़लज़लों के डर से शहर छोड़कर भागेंगे और दज्जाल के फ़ितने का शिकार होंगे दज्जाल के साथ यहूदियों की फ़ौज होगी दज्जाल के माथे पर

'काफ'फे–रे यानी काफ़िर लिखा होगा यह लफ्ज़ सिर्फ मुसलमान ही पढ़ सकेंगे किसी काफ़िर को नज़र न आयेंगे।

दज्जाल जब सारी दुनिया मे फिर फिरा कर मुल्के शाम में पहुँचेगा तो उस वक़्त हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम आसमान से दमिश्क़ की जामे मसिज्द के पूर्वी मीनार पर सुब्ह के वक़्त ऐसे वक़्त पर उतरेंगे जब कि फज्र की नमाज़ के लिए तकबीर हो चुकी होगी हज़रते इमाम मेहदी भी उस जमाअ़त में मौजूद होंगे उन से हज़रते ईसा अ़लैहिस्सलाम इमामत के लिए कहेंगे हज़रते इमाम मेहदी रदियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु नमाज़ पढ़ायेंगे।

उधर दज्जाल का हाल यह होगा कि वह हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम की साँस की खुश्बू से पिघलना शुरू होगा जैसे पानी में नमक घुलता है और साँस को खुश्बू दूर दूर तक फ़ैलेगी। दज्जाल भागता फिरेगा और हज़रते ईसा अ़लैहिस्सलाम उसका पीछा करते हुए उसकी पीठ पर नेज़ा मारेंगे और उस जहन्नमी को मौत के घाट उतार देंगे।

(22) **हज़रते ईसा अ़लैहिस्सलाम का दौर** :– अब हज़रते ईसा अ़लैहिस्सलाम का दौर होगा। आपके ज़माने में माल इतना ज़्यादा होगा कि अगर कोई किसी को कुछ देना चाहेगा तो वह लेने से इन्कार कर देगा।उस ज़माने में दुश्मनी,हसद और जलन नाम की कोई चीज़ न होगी। हज़रते ईसा अ़लैहिस्सलाम ख़िंज़ीर को 'मार डालेंगे और सलीब को तोड़ देंगे। तमाम अहले किताब मत़लब तौरात,ज़बूर,इन्जील और कुर्आन शरीफ़ के मानने वाले जो दज्जाल के ज़ुल्म से बच जायेंगे, वह हज़रते ईसा अ़लैहिस्सलाम पर ईमान लायेंगे। सारी दुनिया में एक ही दीन इस्लाम और एक ही मज़हब मज़हबे अहल–ए–सुन्नत'होगा बच्चे साँप से खेलेंगे। शेर और बकरी एक साथ नज़र आयेंगे। हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम चालीस साल तक रहेंगे। यह निकाह़ करेंगे और उनकी औलाद भी होगी। वफ़ात के बाद रोज़ए अनवर में दफ़न होंगे।

(23) **हज़रते इमाम मेहदी का ज़ाहिर होना** :– हज़रते इमाम मेहदी रदियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के ज़ाहिर होने का वाकिआ़ यह है कि दुनिया में जब सब जगह से इस्लाम सिमट कर मक्के मदीने में पहुँच जायेगा। उस वक़्त सारे अबदाल और औलिया हिजरत कर के वहीं पहुँच जायेंगे। सारी ज़मीन क़ब्रिस्तान होगी। रमज़ान शरीफ़ का महीना होगा। अबदाल क़ाबे का त़वाफ़ करते होंगे।हज़रते इमाम मेहदी भी वहीं होंगे। औलिया उन्हें पहचान कर उनसे बैअ़त के लिए कहेंगे। वह इन्कार करेंगे। अचानक ग़ैब से यह आवाज आयेगी कि

هٰذَا خَلِيْفَةُ اللّٰهِ الْمَهْدِىُّ فَاسْمَعُوْا لَهٗ وَ اَطِيْعُوْهُ ؕ

तर्जमा :– "यह अल्लाह के ख़लीफ़ा मेहदी हैं इनकी बात सुनो और इनका हुक्म मानो।"

तमाम लोग उनके हाथों पर बैअ़त करेंगे और वहाँ से सब को अपने साथ लेकर मुल्के शाम को तशरीफ़ ले जायेंगे दज्जाल के क़त्ल के बाद अल्लाह तआ़ला का हज़रते ईसा अ़लैहिस्सलाम के लिए हुक्म होगा कि मुसलमानों को कोहे तूर (एक पहाड़ का नाम)पर ले आओ। इसलिए कि कुछ ऐसे लोग ज़ाहिर होंगे जिनसे लड़ने की किसी में त़ाक़त न होगी।

(24) **याजूज माजूज का निकलना** :– जब हज़रते ईसा अ़लैहिस्सलाम अल्लाह के हुक्म से

मुसलमानों को कोहे तूर पर ले जायेंगे तो याजूज माजूज निकलेंगे यह इतने ज़्यादा होंगे कि दस मील की एक नदी या झील 'बूहैरये तबरीय्या'पर से जब उनकी पहली जमाअ़त गुज़रेगी तो जमाअ़त के लोग उस नदी या झील का पानी पीकर इस तरह सुखा देंगे कि बाद में आने वाली दूसरी जमाअ़त यह कहेगी कि यहाँ कभी पानी था।

यह याजूज माजूज जब दुनिया में क़त्ल और ग़ारत से फ़ुरसत पायेंगे तो कहेंगे कि ज़मीन वालों को तो क़त्ल कर चुके अब आसमान वालों को भी क़त्ल किया जाये। यह कह कर वे अपने तीर आसमान की तरफ़ फेकेंगे। अल्लाह की कुदरत से उनके तीर खून में लिथड़े हुए गिरेंगे यह अपनी इन्ही हरकतों में मशग़ूल होंगे और वहाँ पहाड़ पर हज़रते ईसा अ़लैहिस्सलाम अपने साथियों के साथ घिरे हुए होंगे। यहाँ तक कि उन के नज़्दीक गाय के सर की वह हैसियत होगी जो आज तुम्हारे नज़्दीक सौ अशरफ़ियों की नहीं उस वक़्त हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम अपने साथियों के साथ दुआ़ फ़रमायेंगे अल्लाह तआ़ला उन की गर्दनों में कोड़े पैदा कर देगा कि एक दम में वह सब मर जायेंगे याजूज माजूज के मरने के बाद जब पहाड़ से उतरेंगे तो सारी ज़मीन पर उन्हें याजूज माजूज की सड़ी हुई इतनी लाशें मिलेंगी कि एक बालिश्त ज़मीन भी ख़ाली नहीं मिलेगी। फिर हज़रते ईसा अ़लैहिस्सलाम और उनके साथियों की दुआ़ओं से अल्लाह तआ़ला कुछ परिन्दे भेज देगा जो उन की लाशों को जहाँ अल्लाह चाहेगा फेंक आयेंगे और उन के तीर व कमान व तर्कश को मुसलमान सात साल तक जलायेंगे। फिर ऐसी बारिश होयी कि ज़मीन को हमवार कर छोड़ेगी जिस से फल पैदा होंगे अल्लाह के हुक्म से ज़मीन और आसमान से इतनी बरकत नाज़िल होगी कि एक अनार से जमाअ़त का पेट भर जायेगा और उसके छिलके के साये में दस आदमी बैठ सकेंगे दूध में इतनी बरकत होगी कि एक ऊँटनी का दूध एक जमाअ़त कि लिए एक गाय का दूध क़बीले के लिए और एक बकरी का दूध एक ख़ानदान के लिए काफ़ी होगा

(25) उसके बाद एक ऐसा वक़्त आयेगा कि अल्लाह के हुक्म से ऐसा धुआँ ज़ाहिर होगा कि ज़मीन से आसमान तक अँधेरा ही अँधेरा होगा

(26) **दाब्बतुल अर्द का निकलना** :– दाब्बतुल अर्द एक ऐसा जानवर होगा जिसके हाथ में हज़रते मूसा अ़लैहिस्सलाम का अ़सा(लाठी)और हज़रते सुलैमान अ़लैहिस्सलाम की अँगूठी होगी वह उस अ़से से हर मुसलमान की पेशनी पर एक नूरानी निशान बनायेगा और अँगूठी से हर काफ़िर के माथे पर एक बहुत काला धब्बा बनायेगा उस वक़्त सारे मुसलमान और काफ़िर साफ़ ज़ाहिर होंगे मुसलमानों और काफ़िरों की यह निशानियाँ कभी न बदलेंगी। जो काफ़िर है वह कभी ईमान न लायेगा और जो मोमिन है हमेशा ईमान पर क़ाइम रहेगा।

(27) **सूरज का पश्चिम से निकलना** :– इस निशानी के ज़ाहिर होते ही तौबा का दरवाज़ा बन्द हो जायेगा। अगर उस वक़्त कोई इस्लाम क़बूल करना चाहे तो उस का इस्लाम क़बूल नहीं किया जायेगा।

(28) हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम की वफ़ात के एक ज़माने के बाद जब कियामत क़ायम होने को सिर्फ़ चालीस साल बाक़ी रह जायेंगे तो एक खुश्बूदार ठंडी हवा चलेगी जो लोगों की बग़लों से

गुज़रेगी जिसका नतीजा यह होगा कि मुसलमानों की रूह क़ब्ज़ हो जायेगी और काफ़िर ही काफ़िर रह जायेंगे और उन्ही पर क़यामत क़ाइम होगी। यह कुछ निशानियाँ थीं जो बयान की गईं इनमें से कुछ तो ज़ाहिर हो चुकीं और कुछ बाक़ी हैं। जब सारी निशानियाँ पूरी हो जायेंगी और मुसलमानों की बग़लों के बीच से वह ख़ुश्बूदार हवा गुज़र लेगी जिस से सारे मुलसमान वफ़ात पायेंगे तो उसके बाद फ़िर चालीस साल का ज़माना ऐसा गुज़रेगा कि उसमें किसी की औलाद न होगी। मतलब यह कि चालीस साल से कम उ़म्र का कोई न होगा। वह एक ऐसा वक़्त होगा कि हर तरफ़ काफ़िर ही काफ़िर होंगे और अल्लाह कहने वाला कोई न होगा।

लोग अपने अपने कामों में लगे होंगे कि अचानक हज़रते इस्राफ़ील अ़लैहिस्सलाम सूर फूँकेंगे। पहले पहले उसकी आवाज़ बहुत धीमी होगी फ़िर धीरे धीरे बहुत ऊँची हो जायेगी। लोग कान लगा कर उसकी आवाज़ सुनेंगे और बेहोश होकर गिरेंगे और फिर मर जायेंगे। आसमान,ज़मीन पहाड़,चाँद सूरज,सितारे सूर,इस्राफ़ील और तमाम फ़रिश्ते फ़ना हो जायेंगे।उस वक़्त सिवा उस खुदाये जुलजलाल के कोई न होगा। उस वक़्त वह पूरे जलाल के साथ फ़रमायेगा। कि :–
لِمَنِ الْمُلْكُ الْيَوْمَ **तर्जमा** :– आज किस की बादशाहत है कहाँ हैं वह जाबिर और कहाँ है मुतकब्बिर मगर है कौन जो जवाब दे फिर खुद ही फ़रमायेगा कि– لِلّٰهِ الْوَاحِدِ الْقَهَّارِ **तर्जमा** :– "सिर्फ़ अल्लाह वाहिद क़ह्हार की सलतनत है फिर जब अल्लाह तआ़ला चाहेगा इस्राफ़ील अ़लैहिस्सलाम ज़िन्दा किये जायेंगे और सूर को पैदा करके दोबारा फुँकने का हुक्म देगा। सूर फूँकते ही तमाम पहले और बा़द वाले इन्सान, जिन्नात हैवानात फ़रिश्ते मौजूद हो जायेंगे।

सबसे पहले नबियों के सरदार,अल्लाह के महबूब,हम सब के आक़ा व मौला ह़ज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम अपनी क़ब्रे मुबारक से इस शान से निकलेंगे कि उनके दाहिने हाथ में पहले ख़लीफ़ा हज़रते अबूबक का हाथ और बायें हाथ में दूसरे ख़लीफ़ा ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ रदि़यल्लाहु अ़न्हुमा का हाथ होगा। फ़िर मक्का शरीफ़ और मदीना शरीफ़ की क़ब्रों में जितने भी मुसलमान दफ़न हैं सबको अपने साथ लेकर ह़श्र के मैदान में तशरीफ़ ले जायेंगे।

अक़ीदा :– क़यामत बेशक क़ाइम होगी और इसका इन्कार करने वाला काफ़िर है।

अक़ीदा :– ह़श्र सिर्फ़ रूह़ का ही नहीं होगा बल्कि रूह़ और जिस्म दोनों का होगा। अगर कोई यह कहे कि रूहें उठेंगी और जिस्म ज़िन्दा नहीं होंगे तो वह भी गुमराह और बद्दीन है। दुनिया में जो रूह़ जिस जिस्म के साथ थी उस रूह़ का ह़श्र उसी जिस्म के साथ होगा। ऐसा नहीं होगा कि कोई नया जिस्म पैदा कर के उसके साथ रूह़ लगा दी जाये।

अक़ीदा : – जिस्म के टुकड़े अगरचे मरने के बा़द अलग अलग हो गये हों या उन्हें जानवर खा गये हों अल्लाह तआ़ला जिस्म के उन तमाम टुकड़ों को इकट्ठा कर के क़ियामत के दिन उठायेगा।

क़ियामत के दिन लोग अपनी अपनी क़ब्रों से नंगे बदन नंगे पाँव उठेंगे और वह लोग ऐसे होंगे कि उनकी ख़तना न हुई होगी। कोई सवार होगा कोई पैदल। कुछ अकेले सवार होंगे और किसी सवारी पर दो किसी पर तीन किसी पर चार और किसी पर दस सवार होंगे। काफ़िर मुँह के बल

चलते चलते मैदाने हश्र में जायेंगे। किसी को फ़रिश्ते घसीट कर ले जायेंगे। किसी को आग घेर कर लायेगी। यह हश्र का मैदान मुल्के शाम की ज़मीन पर क़ाइम होगा। ज़मीन ताँबे की होगी और इतनी चिकनी और बराबर होगी कि एक किनारे पर राई का दाना गिर जाये ते दूसरे किनारे से साफ़ दिखाई देगा। उस दिन सूरज एक मील की दूरी पर होगा। इस हदीस के रिवायत करने वाले कहते हैं कि पता नहीं मील का मतलब सुर्मे की सलाई है या रास्ते की दूरी है।अगर रास्ते की दूरी भी मान ली जाये तो भी सूरज बहुत क़रीब होगा। क्यों कि अब सूरज की दूरी चार हज़ार साल सफ़र की दूरी है और हमारी दुनिया की तरफ़ सूरज की पीठ है तो फिर भी जब सूरज सामने आ जाता है तो घर से निकलना दूभर हो जाता है लेकिन जब सूरज एक मील की दूरी पर होगा और सूरज का मुँह हमारी तरफ़, होगा तो आग और गर्मी का क्या हाल होगा। और अब तो मिट्टी की ज़मीन है तो पैरों में छाले पड़ते हैं तो उस वक़्त जब ताँबे की ज़मीन होगी और सूरज क़रीब होगा। तो उस गर्मी का कौन अन्दाज़ा कर सकता है। अल्लाह पनाह में रखे।

उस वक़्त हाल यह होगा कि सर के भेजे खौलते होंगे और इतना ज़्यादा पसीना निकलेगा कि पसीने को ज़मीन सत्तर गज़ तक सोख लेगी। फिर जो पसीना ज़मीन न पी सकेगी वह पसीना ज़मीन के ऊपर चढ़ते चढ़ते किसी के टख़नों,किसी के घुटनों,किसी की कमर,किसी के सीने और किसी के गले तक पहुँच जायेगा और काफ़िर के मुँह तक पहुँच कर लगाम की तरह जकड़ लेगा जिस में वह डुबकियाँ खायेगा।

इस गर्मी में प्यास का यह हाल होगा कि ज़ुबानें सूख कर काँटा हो जायेंगी। और मुँह से बाहर निकल आयेंगी। दिल उबल कर गले को आ जायेंगे। हर एक को उसके गुनाह के मुताबिक सज़ा मिलेगी। जिसने चाँदी सोने की ज़कात न दी होगी उस माल को गर्म कर के उसकी करवट,पेशानी और पीठ पर दाग़ दिया जायेगा। जिसने जानवर की ज़कात न दी होगी उसके जानवर क़ियामत के दिन खूब मोटे ताज़े होकर आयेंगे और उस आदमी को वहाँ लिटा कर वह जानवर अपने सींग से मारते और अपने पैरों से रौंदते हुए उस पर से उस वक़्त तक गुज़रते रहेंगे जब तक कि लोगों का हिसाब ख़त्म हो।

इसी तरह और दूसरी सज़ायें होंगी। फ़िर यह कि इन मुसीबतों में कोई एक दूसरे का पूछने वाला न होगा भाई से भाई भागता दिखाई देगा। माँ बाप औलाद से पीछा छुड़ायेंगे अलग बीवी बच्चे अलग जान चुरायेंगे। हर एक अपनी मुसीबत में गिरफ़्तार होगा। कोई किसी का मददगार न होगा।

उस वक़्त हज़रते आदम अ़लैहिसलाम को हुक्म होगा कि वह दोज़ख़ियों की जमाअ़त अलग करें। वह पूछेंगे कि कितने में से कितनों को अलग करूँ? अल्लाह फ़रमायेगा कि हर हज़ार से नौ सौ निन्नानवे।

यह वह वक़्त होगा कि बच्चे ग़म के मारे बूढ़े हो जायेंगे। हमल वाली औरत का हमल गिर जायेगा। लोग ऐसे दिखाई देंगे कि जैसे नशे में हों हालाँकि नशा में न होंगे। अल्लाह तआ़ला का अ़ज़ाब बहुत सख़्त होगा। और लोगों को हज़ारों मुसीबतों का सामना होगा। और यह मुसीबतें दो चार दिन या दो चार महीनों की नहीं होंगी। बल्कि क़ियामत का दिन पचास हज़ार बरस का होगा।

हश्र के आधे दिन तक लोग इसी तरह मुसीबतों में रहते हुये अपने लिए किसी सिफ़ारिशी की तलाश करेंगे कि वह खुदाये जुलजलाल के सामने उनकी शफ़ाअ़त कर सके।

मुसीबत के मारे लोग गिरते पड़ते हज़रते आदम अ़लैहिस्सलाम के पास पहुँचेंगे और फ़रियाद करेंगे कि ऐ आदम। आप अबुल बशर (आदमी के बाप) हैं। अल्लाह तआ़ला ने अपको अपने दस्ते कुदरत से बनाया है। आप में अपनी चुनी हुई रूह डाली है। फ़रिश्तों से आप को सजदा कराया। जन्नत में आपको रख कर तामम चीज़ों के नाम सिखाये। अल्लाह ने आपको सफ़ी (दोस्त चुना हुआ और खालिस़) बनाया आप देखते नहीं कि हम कितनी मुसीबतों में हैं आप हमारी शफ़ाअ़त कीजिए कि अल्लाह तआ़ला हमें इस से नजात दे। हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम फ़रमायेंगे कि मेरा यह मरतबा नहीं मुझे आज अपनी जान की फ़िक्र है आज अल्लाह ने अपना ऐसा ग़ज़ब और जलाल ज़ाहिर किया है कि न तो ऐसा कभी हुआ और न कभी होगा तुम किसी और के पास जाओ। लोग पूछेंगे कि आप ही बतायें कि हम किस के पास जायें वह कहेंगे कि तुम हज़रते नूह़ के पास जाओ क्यूँकि वह पहले रसूल हैं कि ज़मीन पर हिदायत के लिए भेजे गये लोग रोते पीटते मुसीबत के मारे हज़रते नूह़ अ़लैहिस्सलाम पास पहुँचेंगे और उन से उन की फ़ज़ीलतें बयान कर के अपनी शफ़ाअ़त के लिए फ़रियाद करेंगे कि आप अपने पालनहार से हमारी शफ़ाअ़त कर दीजिये कि वह हमारा फ़ैसला दे लेकिन वह भी यही जवाब देंगे कि मैं इस लाइक़ नहीं मुझे अपनी पड़ी है तुम किसी और के पास जाओ और उनके बताने से मुसीबत के मारे लोग हज़रते इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम के पास जायेंगे जिन्हें अल्लाह ने ख़लील होने का शरफ़ बख़्शा वहाँ भी यही जवाब मिलेगा तो लोग हज़रते मूसा अ़लैहिस्सलाम और हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम के पास जायेंगे। हज़रते ईसा अ़लैहिस्सलाम इरशाद फ़रमायेंगे कि तुम उनके पास जाओ जो शफ़ाअ़त का दरवाज़ा खोलेंगे जिन्हें कोई ख़ौफ़ नहीं जो तमाम आदम की औलाद के सरदार हैं और वही ख़ातमुन्नबीय्यीन हैं।

अब लोग फिरते फिराते ठोकरें खाते रोते चिल्लाले और दुहाई देते उस बेकस पनाह के दरबार में हाज़िर होंगे जो अल्लाह के महबूब हज़रत मुहम्मद स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लै वसल्लम हैं। सरकार की बहुत सी फ़ज़ीलतें बयान कर के कहेंगे कि सरकार देखिये तो हम कितनी मुसीबतों में हैं आप अल्लाह के दरबार में हमारी शफ़ाअ़त कर दीजिये, हमको इस मुसीबत से नजात दिलवाईये। सरकार मुसीबत के मारों की फरियाद सुनेंगे और फ़रमायेंगे कि :–

اَنَا لَهَا **तर्जमा** :– "मैं इस क़ाम के लिये हूँ

اَنَا صَاحِبُكُمْ **तर्जमा** :– "मैं ही वह हूँ जिसे तुम तमाम जगह ढूँढ आये हो।

यह कह कर हुजूर अल्लाह के दरबार में जायेंगे और सजदा करेंगे। अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमायेगा। कि –

يَا مُحَمَّدُ اِرْفَعْ رَأْسَكَ وَقُلْ تُسْمَعْ وَسَلْ تُعْطَهْ وَاشْفَعْ تُشَفَّعْ

तर्जमा :– "ऐ मुहम्मद अपना सर उठाईये और कहिये आपकी बात सुनी जायेगी और आप जो कुछ **माँगेंगे दिया** जायेगा और शफ़ाअ़त कीजिये आप की शफ़ाअ़त मक़बूल है"।

और एक दूसरी रिवायत में यह भी है कि –

وَقُلْ تُطَعْ

तर्जमा :– आप फ़रमा दीजिये कि आपकी इताअ़त की जायेगी।

फिर तो शफ़ाअ़त का सिलसिला शुरू हो जायेगा यहाँ तक कि जिसके दिल में राई के दाने के बराबर भी ईमान होगा उसे भी शफ़ाअ़त कर के जहन्नम से निकालेंगे। और जो सच्चे दिल से मुसलमान हो और उसका कोई नेक अ़मल न हो उसे भी दोज़ख़ से निकालेंगे।

फिर तमाम नबी अपनी अपनी उम्मतों के लिए शफ़ाअ़त करेंगे। फिर वली,शहीद, आ़लिम, हाफ़िज़ और हाजी लोग शफ़ाअ़त करेंगे बल्कि हर वह आदमी अपने अपने रिश्तेदारों की शफ़ाअ़त करेगा जिसको कोई दीनी दर्जा या मरतबा अ़ता किया गया हो नाबालिग़ बच्चे जो मर गये है अपनी बाप माँ की शफ़ाअ़त करेंगे यहाँ तक कि कुछ लोग आ़लिमों के पास जाकर कहेंगे कि हमने आप के लिए एक वक़्त वुज़ू के लिये पानी दिया था। कोई कहेगा कि हमने आपको इस्तिन्जे के लिये ढेले दिये थे तो आ़लिम उनकी भी शफ़ाअ़त करेंगे।

अ़क़ीदा :– हिसाब किताब हक़ है और हर अच्छे बुरे कामों का हिसाब होगा।

अ़क़ीदा :– जो हिसाब का इन्कार करे वह काफ़िर है किसी से इस तरह हिसाब लिया जायेगा कि उससे चुपके से पूछा जायेगा कि तूने यह किया और यह किया। अ़र्ज़ करेगा ऐ रब यहाँ तक कि तमाम गुनाहों का इक़रार लेलेगा अब यह अपने दिन में समझेगा कि अब गये फ़रमायेगा कि हम ने दुनिया में तेरे ऐब छुपाये और अब बख़्शते हैं और किसी से सख़्ती के साथ एक एक बात पूछी जायेगी। जिससे इस तरह सवाल होगा उसकी हलाकत सामने है।

अल्लाह तआ़ला किसी से पुछेगा कि ऐ फुलाने क्या मैंने तुझे इज़्ज़त न दी क्या तुझे सरदार न बनाया?और क्या तुझे घोड़े ऊँट वग़ैरा का मालिक न बनाया?और जो कुछ भी उसे अ़ता किया गया होगा वह सब उसे याद दिलाया जायेगा। वह सब का इक़रार करेगा। फ़िर अल्लाह पूछेगा कि क्या तुझे मुझ से मिलने का ध्यान था?वह कहेगा कि नहीं। तब अल्लाह फ़रमायेगा कि जब तूने मुझे भुला दिया तो हम भी तुझे अ़ज़ाब में डालते हैं।

कुछ काफ़िर ऐसे भी होंगे कि जब अल्लाह तआ़ला अपनी दी हुई दौलतों को उन्हें याद दिला कर उनसे पूछेगा कि तुमने क्या किया ?

तो वह जवाब देंगे कि हम तेरे हुक्म को मानते हुए तुझ पर तेरी बिताबों और तेरे रसूलों पर ईमान लाये। नमाज़ें पढ़ीं,रोज़े रखे,सदक़े दिये और बहुत से नेक कामों की फ़ेहरिस्त खुदा के सामने पेश करेंगे। अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा। अच्छा रूको तुम पर गवाह पेश होंगे। काफ़िर अपने जी में सोचेगा कि कौन गवाही देगा। लेकिन अल्लाह के हुक्म से उनके मुँह पर ताले पड़ जायेंगे और उनके जिस्म और बदन के हर हिस्से को हुक्म होगा कि बोल चलो। उस वक़्त उनकी रान,हाथ पाँव,गोश्त,पोस्त,हड्डियाँ वग़ैरा सब गवाही देंगे और उनके सारे बुरे करतूत अल्लाह के सामने पेश करेंगे। अल्लाह उन्हें जहन्नम में डाल देगा।

हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है कि मेरी उम्मत से सत्तर हज़ार बे हिसाब जन्नत में दाख़िल होंगे। और उनके तुफ़ैल वसीले से हर एक के साथ सत्तर हज़ार। और अल्लाह तआला तीन जमाअतें और देगा। जिनकी गिनती के बारे में वही जाने।

तहज्जुद पढ़ने वाले बिना हिसाब जन्नत में जायेंगे हुज़ूर की उम्मत में ऐसा आदमी भी होगा कि जिनके निन्नानवे के दफ़्तर गुनाहों होंगे और हर दफ़्तर इतना होगा जहाँ तक निगाह पहुँचे और वह सब दफ़रत खोले जायेंगे। फिर अल्लाह पूछेगा कि इनमें से तुम्हें किसी बात का इन्कार तो नहीं है ? मेरे फ़रिश्ते'किरामन कातिबीन'ने तुम पर ज़ुल्म करते हुए ग़लत बातें तो नहीं लिख दीं? या तेरे पास कोई बहाना तो नहीं ? तो वह अपने रब के सामने अपने गुनाहों को तस्लीम करेगा। अल्लाह तआला फ़रमायेगा कि हाँ तेरी एक नेकी हमारे सामने है और उसी की वजह से आज तुझे नजात मिलेगी। फिर एक पर्चा निकाला जायेगा जिस पर लिखा होगा कि–

اَشْهَدُ اَنْ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَ اَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّداً عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ

तर्जमा :– "मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं और बेशक मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम उसके बन्दे और उसके रसूल हैं।"

और अल्लाह उसे हुक्म देगा कि जाओ मीज़ान पर उन दफ़तरों के सामने इस पर्चे को रख कर तौल करा लो। वह कहेगा कि या अल्लाह उन दफ़्तरों के सामने यह पर्चा क्या हक़ीक़त रखता है। अल्लाह फ़रमायेगा कि तेरे साथ इन्साफ़ किया जायेगा। फिर एक पल्ले पर वह सब दफ़तर रखे जायेंगे और एक में वह पर्चा अल्लाह की मर्ज़ी से वह पर्चे वाला पल्ला दफ़तरों से भारी हो जायेगा। यह उसकी रहमत है और उसकी रहमत की कोई थाह नहीं। वह रहम फ़रमाए तो थोड़ी चीज़ भी बहुत है।

अक़ीदा :– क़ियामत के दिन हर एक को उसका 'आमालनामा'दिया जायेगा। जो नेक होंगे उनके दाहिने और जो गुनाहगार होंगे उनके बायें हाथ में और जो काफ़िर होंगे उनका सीना तोड़ कर उनका बायाँ हाथ पीछे निकाल कर पीठ के पीछे दिया जायेगा।

अक़ीदा :– हक़ बात यह है कि 'हौज़े कौसर'हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को दिया गया है। उस हौज़ की लम्बाई चौड़ाई इतनी है कि जैसे एक महीने का रास्ता हो। इस महीने के बारे में नहीं बताया जा सकता कि महीने का मतलब क्या है। हौज़ के किनारे पर मोती के कुब्बे हैं। उसकी मिट्टी बहुत खुश्बूदार मुश्क की है। उसका पानी दूध से ज़्यादा सफ़ेद और शहद से ज़्यादा मीठा है। उस पर बरतन इतने ज़्यादा हैं कि जैसे सितारे अनगिनत होते हैं। उसमें सोने और चाँदी के दो जन्नती परनाले हर वक़्त गिरते रहते हैं।

अक़ीदा :– मीज़ान हक़ है उस पर लोगों के अच्छे बुरे आमाल तौले जायेंगे। दुनिया में पल्ला भारी होने का मतलब यह होता है कि नीचे को पल्ला झुकता है।लेकिन वहाँ उस का उल्टा होगा और जिसका पल्ला भारी होगा ऊपर को उठ जायेगा।

अक़ीदा :– हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को अल्लाह तआला मक़ामे महमूद अता

फ़रमाएगा उसका मतलब यह है कि तमाम अगले पिछले हुज़ूर की ह़म्द(तारीफ़)करेंगे।

अक़ीदा :– हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहिवसल्लम को एक ऐसा झंडा दिया जायेगा जिसको 'लिवाउल ह़म्द कहते हैं। उस झंडे के नीचे ह़ज़रते आदम अ़लैहिस्सलाम से लेकर आख़िर तक के सारे मोमिन इकट्ठा होंगे।

अक़ीदा :– पुल सिरात हक़ है। यह एक ऐसा पुल है जो जहन्नम के ऊपर लगाया जायेगा। बाल से ज़्यादा बारीक और तलवार से ज़्यादा तेज़ होगा जन्नत में जाने का यही रास्ता है। सब से पहले हमारे हुज़ूर अ़लैहिस्सलाम गुज़रेंगे फ़िर दूसरे नबी व रसूल। उसके बाद हुज़ूर की उम्मत और फ़िर दुसरी उम्मतें गुज़रेंगी। लोगों के जैसे अच्छे या बुरे काम होंगे उसी त़रह़ पुल सिरात के पार करने के ढंग भी होंगे। बाज़ तो ऐसी तेज़ी के साथ गुज़रेंगे जैसे बिजली का कौंदा कि अभी चमका और अभी ग़ायब हो गया और बाज़ तेज हवा की त़रह़ कोई ऐसे जैसे कोई परिन्द उड़ता है और कुछ जैसे घोड़ा दौड़ता है और बाज़ जैसे आदमी दौड़ता है यहाँ तक कि बाज़ चूतड़ों के बल घिसटते हुये और कुछ चींटी की त़रह़ रेंगते हुये पुल सिरात को पार करेंगे। पुलसिरात के दोनों त़रफ़ बड़े बड़े आंकड़े लटकते होंगे। अल्लाह ही जाने वह कितने बड़े होंगे जिसके बारे में अल्लाह का हुक्म होगा उसे पकड़ लेंगे।इनमें से कुछ ज़ख़्मी होकर बच जायेंगे। और कुछ जहन्नम में गिराये जायेंगे और हलाक होंगे।

इधर तमाम मह़शर वाले तो पुल पार करने में लगे होंगे मगर वह बे गुनाह गुनाह गारों का शफ़ीअ़ पुल के किनारे ख़ड़ा हुआ अपनी उम्मत के गुनाहगारों के लिए गिरया–ओ–जारी कर के यह दुआ कर रहा होगा।

رَبِّ سَلِّمْ سَلِّمْ

तर्जमा :– "इलाही इन गुनाहगारों को बचा ले बचा ले।"

उस दिन हुज़ूर किसी एक ही जगह पर नहीं ठहरेंगे बल्कि कभी मीज़ान पर होंगे और जिसकी नेकियों में कमी देखेंगे उसकी शफ़ाअ़त करके उसे नजात दिलायेंगे। कभी हौज़े कौसर पर प्यासों को सैराब करते हुये नज़र आयेंगे और आन की आन में फ़िर पुल पर। ग़रज़ हर जगह उन्हीं की पहुँच होगी। हर एक उन्हीं की दुहाई देगा। उन्हीं से फ़रियाद करता होगा और उनके सिवा पुकारा भी किसको जा सकता है क्यों कि हर एक को अपनी पड़ी होगी। सिर्फ़ सरकार ही की ज़ात ऐसी है कि जिन्हें अपनी कोई फ़िक्र नहीं बल्कि सारे आ़लम का बोझ उन्हीं पर है। दूरूद हो उन पर :–

صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَ اَصْحَابِهٖ وَ بَارَكَ وَ سَلَّمَ اَللّٰهُمَّ نَجِّنَا مِنْ اَهْوَالِ الْمَحْشَرِ بِجَاهِ هٰذَا النَّبِيِّ الْكَرِيْمِ عَلَيْهِ وَ عَلٰى اٰلِهٖ وَ اَصْحَابِهٖ اَفْضَلُ الصَّلٰوةِ وَالتَّسْلِيْمِ اٰمِيْنَ.

तर्जमा :– "अल्लाह तआ़ल उन पर रह़मत नाज़िल फ़रमाये और उनकी औलाद और उनके असह़ाब पर। (उन्हें) बरकत और सलामती दे। ऐ अल्लाह! हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के वसीले से हमको ह़श्र की मुसीबतों से नजात दे। और उन पर उनकी औलाद और उनके असह़ाब पर अफ़ज़ल दुरूद और सलाम,और रह़मत नाज़िल कर,आमीन।

यह क़ियामत का दिन पचास हज़ार साल का दिन होगा जिस की मुसीबतें अनगिनत होंगी।

लेकिन जो अल्लाह के ख़ास बन्दे हैं उनके लिए क़ियामत का दिन इतना हल्का कर दिया जायेगा कि जितनी देर में आदमी फ़र्ज़ की नमाज़ पढ़ ले उतनी ही देर का दिन मालूम होगा। कुछ लोगों के लिए पलक झपकते ही सारा दिन ख़त्म हो जायेगा। जैसा कि अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि–

وَمَا أَمْرُ السَّاعَةِ إِلَّا كَلَمْحِ الْبَصَرِ أَوْ هُوَ أَقْرَبُ

तर्जमा :– क़ियामत का मुआमला नहीं मगर जैसे पलक झपकना बल्कि उससे भी कम।" यानी अल्लाह के ख़ास बन्दों के लिए क़ियामत का दिन पलक झपकने के बराबर या उससे भी कम है।

सब से बड़ी नेमत जो मुसलमानों को उस रोज़ मिलेगी वह अल्लाह का दीदार होगा क्योंकि अल्लाह तआला का दीदार हर दौलत से बड़ी दौलत है जिसे एक बार उस की ज्यारत नसीब होगी वह उसकी लज़्ज़त को कभी नहीं भूल सकता। और सब से पहले अल्लाह का दीदार दोनों जहान के सरदार हुज़ूर अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को होगा।

अब तक तो हश्र के मुख़तसर हालात बताये गये। और उन तमाम कामों के बाद हमेशा के लिए जन्नत या जहन्नम ठिकाना होगा। किसी को आराम का घर मिलेगा जिस में आराम की कोई थाह नहीं ,उस आराम के घर को जन्नत कहते हैं। और किसी को तकलीफ़ के घर में जाना होगा जिसे जहन्नम कहते हैं। यह जन्नत और दोज़ख़ हक़ हैं। इनका इन्कार करने वाला काफ़िर है।

अक़ीदा :– अल्लाह तआला ने जन्नत और दोज़ख़ को हज़ारों साल से भी पहले पैदा किया। और जन्नत और दोज़ख़ आज भी मौजूद हैं। ऐसा अक़ीदा रखना कि क़ियामत से पहले या क़ियामत के दिन जन्नत और दोज़ख़ बनाये जायेंगे गुमराही और बद्दीनी है।

अक़ीदा :– क़ियामत, बअ़्स यानी मौत के बाद ज़िन्दा होना,हश्र,हिसाब सवाब,अ़ज़ाब,जन्नत और दोज़ख़ सब का वही मतलब है जो मुसलमानों में मशहूर है। कुछ लोगों ने कुछ नये मतलब गढ़ लिये हैं जैसे सवाब का मतलब अपनी अच्छाईयों को देखकर खुश होना। अ़ज़ाब का मतलब अपने बुरे कामों को देखकर ग़मगीन होना। या सिर्फ़ रूहों का हश्र समझना बहुत बड़ी गुमराही और बद्दीनी है।

अब मुख़्तसर तौर पर जन्नत और दोज़ख़ का हाल लिखा जा रहा है।

जन्नत का बयान

जन्नत एक मकान है जिसे अल्लाह तआला ने ईमान वालों के लिये बनाया है उसमें ऐसी ऐसी नेमतें रखी गई हैं जिनको न आँखों ने देखा न कानों ने सुना और न कोई उन नेमतों का गुमान कर सकता है यानी बे देखे वर्ना देख कर तो आप ही जानेंगे, तो जिन्होंने दुनियावी हयात की हालत में मुशाहदा किया वह इस हुक्म से अलग हैं ख़ास हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम इसलिए जन्नत की कोई मिसाल दी ही नहीं जा सकती क्योंकि काबा शरीफ़ जन्नत से आला है और हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की तुर्बत तो काबा बल्कि अ़र्श से भी अफ़ज़ल है मगर यह दुनिया की चीज़ें नहीं। हाँ जिन्होंने अल्लाह के करम से अपनी दुनियावी ज़िन्दगी में जन्नत को देखा है वह जानते हैं कि जन्नत में क्या क्या चीज़ें हैं और उसमें कितना आराम है।

जन्नत की कोई औरत अगर ज़मीन की तरफ़ देख ले तो ज़मीन से आसमान तक रौशन हो जाये,चाँद सूरज की रौशनी मंद पड़ जाये और पूरी दुनिया उसकी ख़ुश्बू से भर जाये। एक रिवायत

में यह भी है कि अगर हूर ,अपनी हथेली ज़मीन और आसमान के बीच निकाले तो सिर्फ हथेली की खुबसूरती को देख कर लोग फ़ितने में पड़ जायेंगे। अगर जन्नत की कोई ज़र्रा बराबर भी चीज़ दुनिया में आ जाये तो आसमान ज़मीन सब में सजावट पैदा हो जाये। जन्नती का कंगन चाँद सूरज और तारों को मांद कर दे। जन्नत की थोड़ी सी जगह जिस में कूड़ा रख सकें वह पूरी दुनिया से बेहतर है। जन्नत की लम्बाई चौड़ाई के बारे में किसी को कुछ पता नहीं। अल्लाह और उसके रसूल ज़्यादा अच्छा जानते हैं।

मुख़्तसर यह है कि जन्नत में सौ दर्जे हैं। एक दर्जे से दूसरे दर्जे में इतनी दूरी है कि जैसे ज़मीन से आसमान तक। तिर्मिज़ी शरीफ़ की एक ह़दीस का मतलब यह है कि जन्नत के एक दर्जे में अगर सारा आ़लम समा जाये तो फ़िर भी जगह बाक़ी रहेगी जन्नत में एक इतना बड़ा पेड़ है कि अगर उसके साये में कोई सौ बरस तक तेज़ घोड़े से चलता रहे फ़िर भी वह साया ख़त्म न होगा। जन्नत के दरवाज़ों की चौड़ाई इतनी होगी कि उसके एक सिरे से दूसरे सिरे तक तेज़ घोड़े से सत्तर साल का रास्ता होगा। फ़िर भी जन्नत में जाने वाले इतने ज़्यादा होंगे कि मोंढे से मोंढा छिलता होगा बल्कि भीड़ से दरवाज़ा चरचराने लगेगा। जन्नत में त़रह़ त़रह़ के साफ़ सुथरे ऐसे मह़ल होंगे कि अन्दर की चीज़ें बाहर से और बाहर की चीज़ें अन्दर से दिखाई देंगी।

जन्नत की दीवारें सोने चाँदी की ईटों और मुश्क के गारे से बनी हैं। ज़मीन ज़ाफ़रान की होगी। कंकरियों की जगह मोती और याकूत होंगे। एक रिवायत में यह भी है कि जन्नते अ़द्न की एक ईंट सफ़ेद मोती की, एक लाल याकूत की और एक हरे ज़बरजद की और मुश्क का गारा है। घास की जगह ज़ाफ़रान और अ़म्बर की मिट्टी है। जन्नत में एक मोती का खेमा होगा जिसकी ऊँचाई साठ मील की होगी।

जन्नत में पानी,दूध शहद और शराब की चार दरियायें है। उनसे नहरें निकल कर हर एक जन्नती के मकान में बह रही हैं। जन्नत की नहरें ज़मीन खोद कर नहीं बहती बल्कि ज़मीन के ऊपर जारी हैं।नहरों का एक किनारा मोती का दूसरा याकूत का उन नहरों की ज़मीन ख़ालिस़ मुश्क की है।

जन्नत की शराब दुनिया की शराब की त़रह नहीं जिस में कड़वाहट,बदबू और नशा होता है और उसे पीकर लोग बेहोश हो जाते हैं और आपे से बाहर होकर गाली गलौच बकते हैं। जन्नत की शराब इन बातों से पाक है। जन्नत में जन्नतियों को हर क़िस्म के मज़ेदार खाने मिलेंगे और जो चाहेंगे फ़ौरन उनके सामने मौजूद हो जायेगा। अगर जन्नती किसी चिड़िया का गोश्त खाना चाहे तो उसी वक़त भुना हुआ गोश्त उसके सामने आ जायेगा। अगर कोई पानी पीना चाहे तो पानी का कूज़ा (प्याला)उसकी प्यास के मुत़ाबिक़ उस के पास आ जायेगा। ज़रूरत से न एक बूंद कम होगा न एक बूंद ज़्यादा। पीने के बाद वह आबख़ोरा (पानी पीने का बर्तन)खुद उस के पास से चला जायेगा। जन्नत में नजासत, गन्दगी,पाखाना, पेशाब, थूक, रेंठ, कान का मैल और बदन का मैल वग़ैरा कोई गन्दगी नहीं होगी। जन्नती लोगों को पेशाब पाख़ाना नहीं होगा। सिर्फ़ एक खुश्बूदार

पसीना निकलेगा। जन्नतियों का खाया हुआ सब खाना हज़म हो जायेगा और निकले हुये पसीने और डकार की खुश्बू मुश्क की होगी।

हर आदमी की खुराक सौ आदमियों की होगी और हर एक को सौ बीवियों के रखने की ताक़त दी जायेगी। हर वक़्त ज़ुबान से तस्बीह व तकबीर वग़ैरा बिना इरादे के बिना मेहनत के जैसे साँस चलती है उसी तरह आदमी की ज़ुबान से अल्लाह की तस्बीह और तकबीर जारी रहेगी। हर जन्नती के सिरहाने दस हज़ार ख़ादिम खड़े होंगे। इन ख़ादिमों के एक हाथ में चाँदी का प्याला और दूसरे हाथ में सोने का प्याला होगा और हर प्याले में नई नई नेमतें होंगी। जन्नती जितना खाता जायेगा। उन चीज़ों की लज़्ज़त बढ़ती जायेगी। हर लुकमे और निवाले में सत्तर मज़े होंगे। हर एक मज़ा अलग अलग होगा और जन्नती सब को एक साथ महसूस करेंगे। न तो जन्नतियों के कपड़े मैले होंगे और न उनकी जवानी ढलेगी।

जन्नत में जो पहला गिरोह जायेगा उनके चेहरे चौदहवीं रात के चाँद की तरह चमकते होंगे। दूसरा गिरोह वह जैसे कोई निहायत रौशन सितारा। जन्नतियों के दिल में कोई भेद भाव न होगा। आपस में सब एक दिल होंगे। जन्नतियों में से हर एक को ख़ास हूरों में से कम से कम दो बीवियाँ ऐसी मिलेंगी कि सत्तर सत्तर जोड़े पहने होंगी फिर भी उन जोड़ों और गोश्त के बाहर से उनकी पिंडलियों का गूदा दिखाई देगा जैसे सफ़ेद गिलास में सुर्ख़ शराब दिखाई देती है। यह इसलिए कि अल्लाह ने उन हूरों को याकूत की तरह कहा है और याकूत में अगर छेद कर के धागा डाला जाये तो ज़रूर बाहर से दिखाई देगा। आदमी अपने चेहरे को उनके रूख़्सार में आईने से भी ज़्यादा साफ़ देखेगा उसके रूख़्सार पर एक मामूली मोती होगा लेकिन उस मोती में इतनी चमक होगी कि उससे पूरब से पश्चिम तक रौशन हो जायेगा जन्नत का कपड़ा दुनिया में पहना जाये तो उसे देखने वाला बेहोश हो जाये। मर्द जब जन्नत की औरतों के पास जाएगा तो उन्हें हर बार कुँवारी पाएगा मगर इसकी वजह से मर्द व औरत किसी को कोई तकलीफ़ न होगी। हूरों की थूक में इतनी मिठास होगी कि अगर कोई हूर समुन्दर में या सात समुन्दरों में थूक दे तो सारे समुन्दर शहद से ज़्यादा मीठे हो जायेंगे।

जब कोई आदमी जन्नत में जायेगा तो उस के सरहाने पैताने दो हूरें बहुत अच्छी आवाज़ से गाना गायेंगी मगर उनका गाना ढोल बाजों के साथ नहीं होगा बल्कि वह अपने गानों में अल्लाह की तारीफ़ करेंगी। उन की आवाज़ में इतनी मिठास होगी कि किसी ने वैसी आवाज़ न सुनी होगी। और वह यह भी गायेंगी कि हम हमेशा रहने वालियाँ हैं कभी न मरेंगे हम चैन वालियाँ हैं कभी तकलीफ़ में न पड़ेंगे और हम राज़ी हैं नाराज़ न होंगे और यह भी कहेंगी कि उस के लिए मुबारक बाद जो हमारा और हम उस के हों। जन्नतियों के सर पलकों और भवों के अलावा कहीं बाल न होंगे। सब बे बाल के होंगे उनकी आँखें सुर्मगी होंगी। तीस बरस से ज़्यादा कोई मालूम न होगा। मामूली जन्नती के लिए अस्सी हज़ार ख़ादिम और बहत्तर हज़ार बीवियाँ होंगी। और उनको ऐसे ताज दिये जायेंगे कि उसमें के कम दर्जे के मोती से भी पूरब से पश्चिम तक चमक हो जायेगी

अगर कोई यह चाहे कि उसके औलाद हो तो औलाद होगी लेकिन आन की आन में बच्चा तीस साल का हो जायेगा। जन्नत में न तो नींद आयेगी और न कोई मरेगा क्यूँकि जन्नत में मौत नहीं।

हर जन्नती जब जन्नत में जायेगा तो उसको उसके नेक कामों के मुताबिक़ मर्तबा मिलेगा और अल्लाह के करम की कोई थाह नहीं। फ़िर जन्नतियों को एक हफ़्ते के बाद इजाज़त दी जायेगी कि वह अपने परवरदिगार की ज़ियारत करें। फिर अल्लाह का अर्श ज़ाहिर होगा और अल्लाह तआला ,जन्नत के बाग़ों में से एक बाग़ में तजल्ली फ़रमायेगा। जन्नतियों के लिये नूर के, मोती के याकूत के,ज़बरजद के,सोने के और चाँदी के मिम्बर होंगे। और कम से कम दर्जे के जन्ती मुश्क और काफ़ूर के टीले पर बैठेंगे।और उनमें आपस में अदना और आला कोई नहीं होगा। ख़ुदा का दीदार ऐसा साफ़ होगा जैसे सूरज और चौदहवीं रात के चाँद को हर एक अपनी जगह से देखता है।

अल्लाह की तजल्ली हर एक जन्नती पर होगी। अल्लाह तआला उन जन्नतियों में से किसी को उसके गुनाह याद दिलाकर फ़रमायेगा। कि ऐ फ़लाँ का लड़के फ़लाँ तुझे याद है कि जिस दिन तूने ऐसा ऐसा किया था?बन्दा जवाब देगा कि ऐ मेरे अल्लाह क्या तूने मुझे बख़्श नहीं दिया था ? अल्लाह फ़रमायेगा कि हाँ मेंरी मग़फ़िरत की वुसअत की वजह ही से तू इस मर्तबे को पहुँचा है।

वह सब इसी हालत में होंगे कि बादल छा जायेंगे और उन पर ऐसी ख़ुश्बू की बारिश होगी कि उन लोगों ने ऐसी ,ख़ुश्बु कभी न पाई होगी। फिर अल्लाह फ़रमायेगा कि उस तरफ़ जाओ जो मैंने तुम्हारे लिए इज़्ज़त तैयार कर रखी है। उसमें से जो चाहो ले लो।

लोग फिर एक ऐसे बाज़ार में पहुँचेंगे जिसे फ़रिश्तों ने घेर रखा होगा और उनमें ऐसी चीज़ें होंगी कि न तो आँखों ने देखा होगा न कानों ने सुना होगा और न उन चीज़ों का कभी किसी ने ध्यान किया होगा। जन्नती उस में से जो चीज़ पसन्द करेंगे उनके साथ कर दी जायेगी। जन्नती जब आपस में एक दूसरे से मिलेंगे और छोटे रूतबे वाला बड़े रूतबे वाले के लिबास को देख कर पसन्द करेगा तो अभी बातें ख़त्म भी न होंगी कि छोटे मरतबे वाला अपने कपड़े को बड़े मरतबे वाले से अच्छा समझने लगेगा यह इसलिए कि जन्नत में किसी के लिए ग़म नहीं। फिर वहाँ से अपने अपने मकानों को वापस आयेंगे। उनकी बीवियाँ उनका इस्तिक़बाल करेंगी और मुबारक बाद देकर कहेंगी कि आपका जमाल यानी ख़ुबसूरती पहले से भी कहीं ज़्यादा बढ़ गई है। वह जवाब देंगे चुँकि हमें अल्लाह के दरबार में हाज़िरी नसीब हुई इसलिए हमें ऐसा ही होना चाहिए।

जन्नती बाज़ आपस में एक दूसरे से मिलना चाहेंगे तो इसके दो तरीक़े होंगे। एक यह कि एक का तख़्त दूसरे के पास चला जायेगा। दूसरी सूरत यह होगी कि जन्नतियों को बहुत अच्छे क़िस्म की सवारियाँ जैसे घोड़े वग़ैरा दिये जायेंगे कि उन पर सवार होकर जब चाहें और जहाँ चाहें चले जायेंगे। सबसे कम दर्जे का वह जन्नती है कि उसके बाग़ बीवियाँ ,ख़ादिम और तख़्त इतने ज़्यादा होंगे कि हज़ार बरस के सफ़र की दूरी तक यह तमाम चीज़ें फैली हुई होंगी। उन जन्नतियों में अल्लाह के नज़दीक सबसे, इज़्ज़त वाला वह है जो उसका दीदार हर सुबह और शाम करेगा। जन्नती जब जन्नत में पहुँच जायेंगे और जन्नत की नेमतें उनके सामने होंगी और जन्नत में चैन आराम को जान जायेंगे तो अल्लाह तबारक व तआला उनसे पूछेगा कि क्या कुछ और चाहते हो?तो

वह कहेंगे कि या अल्लाह तूने हमारे चेहरे रौशन किये जन्नत में दाख़िल किया और जहन्नम से नजात दी उस वक़्त मख़लूक़ पर पड़ा हुआ पर्दा उठ जायेगा और उन्हें अल्लाह का दीदार नसीब होगा। दीदारे इलाही से बढ़ कर कोई चीज़ नहीं।

اَللّٰھُمَّ ارْزُقْنَا زِیَارَۃَ وَجْھِکَ الْکَرِیْمِ بِجَاہِ حَبِیْبِکَ الرَّءُوْفِ الرَّحِیْمِ عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَ التَّسْلِیْمِ اٰمِیْن

तर्जमा :–"या अल्लाह! हमको अपने महबूब सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम जो रऊफ़ ओ रहीम हैं उनके वसीले से अपना दीदार नसीब फ़रमा। आमीन!"

दोज़ख का बयान

दोज़ख एक ऐसा मकान है जो अल्लाह तआला की शाने जब्बारी और जलाल की मज़हर (ज़ाहिर करने वाली) है। जिस तरह अल्लाह की रहमत और नेमत की कोई हद नहीं कि इन्सान शुमार नहीं कर सकता और जो कुछ इन्सान सोचता है वह शुम्मह (ज़र्रा) बराबर भी नहीं,उसी तरह उसके ग़ज़ब और जलाल क़ी कोई हद नहीं। इन्सान जिस क़द्र भी दोज़ख़ की आफ़तों मुसीबतों और तकलीफ़ों को सोच सकता है वह अल्लाह के अज़ाब का एक बहुत छोटा सा हिस्सा होगा। क़ुर्आन व अहादीस में जो दोज़ख़ के अज़ाब का बयान है उसमें से कुछ बातें ज़िक्र की जाती हैं मुसलमान देखें और दोज़ख़ से पनाह माँगें। हदीस शरीफ़ में है कि जो बन्दा जहन्नम से पनाह माँगता है जहन्नम कहता है कि ऐ रब ! यह मुझ से पनाह माँगता है तू इसको पनाह दे। क़ुर्आन शरीफ़ में कई जगहों पर आया है कि जहन्नम से बचो और दोज़ख़ से डरो। हमारे सरकार हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम हमें सिखाने के लिए ज़्यादा तर जहन्नम से पनाह माँगा करते थे। जहन्नम का हाल यह होगा कि उसकी चिंगारियाँ ऊँचे ऊँचे महलों के बराबर इस तरह उड़ेंगी कि जैसे ज़र्द ऊँटों की क़तारें लगातार आ रही हों। पत्थर, आदमी जहन्नम के ईंधन हैं। दुनिया की आग जहन्नम की आग के सत्तर हिस्सों में उसे एक हिस्सा है। जिस जिस जहन्नमी को सब से कम दर्जे का अज़ाब होगा उसे आग की जूतियाँ पहनाई जायेंगी जिससे उसके सर का भेजा ऐसा खौलेगा जैसे तांबे की पतीली खौलती है और वह यह समझेगा कि सब से ज़्यादा अज़ाब उसी पर हो रहा है जबकि यह हल्का अज़ाब है जिस पर सब से हल्के दर्जे का अज़ाब होगा उस से अल्लाह तआला पूछेगा कि अगर सारी ज़मीन तेरी हो जाये तो क्या तू इस अज़ाब से बचने के लिए सारी ज़मीन फ़िदये में दे देगा ? वह जवाब देगा कि हाँ हाँ मैं दे दूँगा । फिर अल्लाह तआला इरशाद फ़रमायेगा कि ऐ बन्दे मैंने तेरे लिये बहुत आसान चीज़ का हुक्म उस वक़्त दिया था जब कि तू आदम की पीठ में था लेकिन तू न माना।

जहन्नम की आग हज़ार बरस तक धैंकाई गई यहाँ तक कि बिल्कुल लाल हो गई। फिर हज़ार बरस और जलाई गई यहाँ तक कि सफ़ेद हो गई। उस के बाद फिर हज़ार साल जलाई गई यहाँ तक कि बिल्कुल काली हो गई और अब वह बिल्कुल काली है और उस में रौशनी का नामो निशान नहीं।

जहन्नम का हाल बताते हुए हज़रते जिब्रील अलैहिस्सलाम ने हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से क़सम खा कर कहा। कि अगर जहन्नम से एक सुई के नाके के बराबर खोल दिया जाये तो ज़मीन के सारे बसने वाले उसकी गर्मी से मर जायें। और इसी तरह यह भी कहा कि

अगर जहन्नम का कोई दारोग़ा दुनिया वालों के सामने आ जाये तो उसकी डरावनी सूरत के डर से सब के सब मर जायें। और उन्हों ने यह भी बताया कि अगर जहन्नमियों के ज़ंजीर की एक कड़ी दुनिया के पहाड़ पर रख दी जाये तो थरथर कांपने लगे और यह पहाड़ ज़मीन तक धंस जायें।

दुनिया की यह आग जिसकी गर्मी और तेज़ी को सब जानते हैं कि कुछ मौसमों में उसके पास जाना भी दूभर होता है फिर भी यह आग खुदा से दुआ करती है कि या अल्लाह! हमें जहन्नम में फ़िर न भेज देना लेकिन तअ़ज्जुब की बात यह है कि इन्सान जहन्नम में जाने का काम करता है और उस आग से नहीं डरता जिससे आग भी पनाह माँगती है।

दोज़ख़ की गहराई के बारे में कुछ नहीं बताया जा सकता फ़िर भी ह़दीसों के देखने से पता चलता है कि अगर पत्थर की चट्टान जहन्म के किनारे से उस की गहराई में फेंकी जाये तो सत्तर बरस में भी त़ह तक़ न पहूँचेगी। जब के इन्सान के सर के बराबर सीसे का गोला अगर आसमान से ज़मीन को फ़ेंका जाये तो रात आने से पहले प़हले ज़मीन तक पहुँच जायेगा। ह़ालाँकि आसमान से ज़मीन तक पाँच सौ साल तक का रास्ता है। फिर उसमें अलग अलग तबक़े वादियाँ और कूचे हैं। कुछ वादियाँ ऐसी भी हैं कि जिनसे जहन्नम भी हर रोज़ सत्तर बार पनाह माँगता है। अब आप अन्दाज़ा लगाईये कि जहन्नम की गहराई क्या होगी। जहन्म जैसे डरावने घर में अ़गर और कुछ अ़ज़ाब न होता फिर भी यह बहुत बड़ी सज़ा और तकलीफ़ की जगह थी लेकिन जहन्नम में काफ़िरों के लिये अलग अलग सज़ायें भी हैं जैसा कि बताया गया अब कुछ और जहन्नम का ह़ाल और उसके अज़ाब लिखे जा रहे हैं।

काफ़िरों को फ़रिश्ते लोहे के ऐसे ऐसे भारी गुर्जो से मारेंगे कि अगर कोई गुर्ज़ ज़मीन पर रख दिया जाये और उसे दुनिया के सारे इन्सान और जिन्नात मिलकर एक साथ उठाना चाहें तो न उठा सकें जहन्नम में बहुत बड़े बड़े साँप और बुख़्ती ऊँट के बराबर बिच्छू होंगे जो अगर एक बार काट लें तो उस से दर्द,जलन और बेचैनी हज़ार साल तक रहे। बुख़्ती ऊँट ऐसे ऊँट कहलाते हैं जो हर तरह के ऊँटों से ब़ड़े होते हैं। जहन्नमियों को तेल की जली हुई तलछट की त़रह़ बहुत खौलता हुआ पानी पीने को दिया जायेगा कि जैसे ही उस पानी को मुँह के क़रीब ले जायेंगे उसकी गर्मी और तेज़ी से चेहरे की खाल जल कर गिर जायेगी। सर पर वह गर्म पानी बहाया जायेगा । और जहन्नमियँा के बदन से निकली हुई पीप उन्हें पिलाई जायेगी। काँटेदार थूहड़ उन्हें खाने को दिया जायेगा। वह ऐसा होगा कि अगर उसकी एक बुँद दुनिया में आ जाये तो उस की जलन और बदबू से सारी दुनिया का रहन सहन बरबाद हो जाये। जहन्नमी जब थूहड़ को खायेंगे तो उनके गले में फँस जायेगा। उसे उतारने के लिये जब वह पानी मांगेंगे तो उन्हें वही पानी दिया जायेगा जिस का ज़िक्र पहले किया जा चुका है। वह तलछट की तरह पानी पेट में जाते ही आंतों के टुकड़े टुकड़े कर देगा और आँतें शोरबे की त़रह़ बह कर क़दमों की त़रफ़ निकलेंगीं। प्यास इस बला की होगी कि जहन्नमी उस पानी पर भी ऐसे गिरेंगे जैसे 'तौंस' के मारे हुए ऊँट गिरते हैं।

काफ़िर जब जहन्नम की मुसीबतों और तकलीफ़ों से अपनी जान से अ़जिज़ आजायेंगे तो आपस में राय करके ह़ज़रत मालिक (अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम)को पुकारते हुए फ़रयाद करेंगे कि ऐ

मालिक! तेरा रब हमारा किस्सा तमाम कर दे। लेकिन वह हज़ार बरस तक कोई जवाब न देंगे। हज़ार साल के बाद कहेंगे कि तुम मुझ से क्या कहते हो उससे कहो जिसकी तुमने नाफ़रमानी की है। फिर वह अल्लाह को उसके रहमत भरे नामों से हज़ार साल तक पुकारेंगे। वह भी हज़ार साल तक जवाब न देगा। उसके बाद फ़रमायेगा कि दूर हो जाओ जहन्नम में पड़े रहो मुझ से बात न करो।

फिर यह काफ़िर हर तरह की भलाईयों से नाउम्मीद हो कर गधों की तरह रोना और चिल्लाना शुरू करेंगे। पहले आँसू निकलेंगे और जब आँसू ख़त्म हो जायेंगे तो ख़ून के आँसू रोयेंगे रोते रोते उन के गालों में ख़न्दकों की तरह गढ़े पड जायेंगे। उन के रोने से ख़ून और पीप इतना निकलेगा कि अगर उस में कश्तियाँ डाल दी जायें तो वह भी चलने लगें। जहन्नमियों की सूरतें ऐसी बुरी होंगी कि अगर कोई जहन्नमी अपनी उसी सूरत के साथ इस दुनिया में लाया जाये तो उसकी सूरत और उसकी बदबू से तमाम लोग मर जायें और उनका बदन इतना बड़ा कर दियां जायेगा कि उन के एक मोंढे से दूसरे मोंढे तक की दूरी तेज़ सवार के लिये तीन दिन होगी। एक एक दाढ़ उहुद पहाड़ के बराबर होगी। उनके बदन की खाल की मोटाई 'बियालीस ज़िराअ'42 हाथ, या 42 गज़ की होगी। उनकी जुबानें एक दो कोस तक मुँह से बाहर घसिटती होंगी कि लोग उन्हें रौंदते हुए चलेंगे। बैठने की जगह इतनी होगी कि जैसे मक्के से मदीने तक और वह जहन्नम में मुँह सिकोड़े हुए होंगे। उन के ऊपर का होंट सिमट कर बीच सर को पहुँच जायेगा और नीचे का लटक कर नाफ़ तक आ जायेगा।

इन मज़ामीन से यह पता चलता है। कि जहन्नम में काफ़िरों की सूरत इन्सानों जैसी न होगी इसलिए कि इन्सान की सूरत को अहसने तक़वीम, कहा गया है और अल्लाह को इन्सान की सूरत इसलिए पसन्द है कि आदमी की सूरत उस के महबूब सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से कुछ न कुछ मिलती जुलती है इसलिए अल्लाह ने जहन्नमियों की सूरत को आदमियों की सूरत से अलग कर दिया है। आख़िर में काफ़िरों के लिए यह होगा कि उनमें से हर एक को उनके क़द के बराबर आग के सन्दूक़ में बन्द किया जायेगा सन्दूक़ में आग भड़काई जायेगी और आग का ताला लगाया जायेगा फिर उस बक्स को आग के एक दूसरे सन्दूक़ में रखा जायेगा और उन दोनों के बीच आग जलाई जायेगी और उस दूसरे सन्दूक़ में भी आग का ताला लगाया जायेगा फिर उस बक्स को एक तीसरे आग के सन्दूक़ में डाला जायेगा और उसे भी आग के ताले में बन्द किया जायेगा और आग में डाल दिया जायेगा अब हर एक काफ़िर यह समझेगा कि उस के सिवा अब कोई भी आग में नहीं रहा। और यह अज़ाब तमाम अज़ाबों से बड़ा है और अब हमेशा उस के लिए अज़ाब ही अज़ाब है।

जब सब जन्नती जन्नत में दाख़िल हो जायेंगे और जहन्नम में सिर्फ़ वही रह जायेंगे जिन को हमेशा के लिए उस में रहना है। उस वक़्त जन्नत और दोज़ख के बीच 'मौत' को मेंढे की शक्ल में लाकर खड़ा किया जायेगा। फिर जन्नत वालों को पुकारा जायेगा। वह डरते हुए झाँकेंगे कि कहीं ऐसा न हो कि यहाँ से निकलना पड़े फिर जहन्नमियों को आवाज़ दी जायेगी वह खुश होते हुए झाँकेंगे कि शायद उन्हें इस मुसीबत से छुटकारा मिल जाये। फिर जन्नतियों और जहन्नमियों को

वह मेढा दिखाकर पूछा जायेगा कि क्या तुम लोग इसे पहचानते हो ? तो जवाब में सब कहेंगे कि हाँ यह मौत है तो फ़िर वह मौत ज़िबह कर दी जायेगी और कहा जायेगा कि ऐ जन्नत वालों हमेशगी है अब मौत नहीं आयेगी और ऐ दोज़ख वालों। तुम्हें अब हमेशा जहन्नम ही में रहना है और अब तुम्हें भी मरना नहीं है उस वक़्त जन्नतियों के लिए बेहद खुशी होगी और जहन्नमियों को बेइन्तिहा ग़म।

نَسْأَلُ اللّٰهَ الْعَفْوَ وَالْعَافِيَةَ فِى الدِّيْنِ وَالدُّنْيَا وَ الْاٰخِرَةِ

तर्जमा :– "दीन दुनिया और आख़िरत में हम अल्लाह से माफ़ी और आफ़ियत का सवाल करते है"।

ईमान और कुफ़्र का बयान

ईमान इसे कहते हैं कि सच्चे दिल से उन तमाम बातों की तस्दीक़ करे जो दीन की ज़रूरियात में से हैं और किसी एक ज़रूरी दीनी चीज़ के इन्कार को कुफ़्र कहते हैं अगरचे बाक़ी तमाम ज़रूरियात को हक़ और सच मानता हो मतलब यह कि अगर कोई सारी ज़रूरी दीनी बातों को मानता हो लेकिन किसी एक का इन्कार कर बैठे तो अगर जिहालत और नादानी की वजह से है तो कुफ़ है और जान बूंझ कर इन्कार करे तो काफ़िर है। दीन की ज़रूरियात में वह बातें हैं जिनको हर ख़ास और आम लोग जानते हों जैसे:–अल्लाह तआला की वहदानियत यानी अल्लाह तआला को एक मानना,नबियों की नुबुव्वत,जन्नत,दोज़ख़ हश्र,नश्र वग़ैरा। मिसाल के तौर पर एअ्तिक़ाद रखता हो कि हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम 'ख़ातमुन्नबीय्यीन'हैं (यानी हुजूर के बाद अब कोई नया नबी कभी नहीं आएगा)

अवाम से मुराद वह लोग हैं जिनकी गिनती आलिमों में तो न हो मगर आलिमों के साथ उनका उठना बैठना रहता हो और वह दीनी और इल्मी बातों का शौक़ रखते हों। ऐसा नहीं कि वह जंगल बियाबानों और पहाड़ों के रहने वाले हों जो कलिमा भी ठीक से नहीं पढ़ सकते हों ऐसे लोग अगर दीन की ज़रूरी बातों को न जानें तो उनके न जानने से दीन की ज़रूरी बातें ग़ैर ज़रूरी नहीं हो जायेंगी। अलबत्ता उनके मुसलमान होने के लिए यह बात ज़रूरी है कि वह दीन और मज़हब की ज़रूरी चीजों का इन्कार न करें और यह एअ्तिक़ाद रखते हों कि इस्लाम में जो कुछ है हक़ है और उन सब पर उनका ईमान हो।

अक़ीदा :– अस्ले ईमान सिर्फ़ तस्दीक़ का नाम है यानी जो कुछ अल्लाह व रसूल जल्ला व अला सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है उसको दिल से हक़ मानना। आमाल (यानी नमाज़,रोज़ा वग़ैरा) जुज़्वे ईमान यानी ईमान का हिस्सा नहीं। अब रही बात इक़रार की तो अगर तस्दीक़ के बाद उसको अपना ईमान ज़ाहिर करने का मौक़ा नही मिला तो यह अल्लाह के नज़दीक मोमिन है और अगर उसे मौक़ा मिला और उसे इक़रार करने को न कहा गया तो अहकामे दुनिया में काफ़िर समझा जायेगा न उस के जनाज़े की नमाज़ पढ़ी जायेगी। और न वह मुसलमानों के क़ब्रिस्तान में दफ़न किया जायेगा। लेकिन अगर उस से इस्लाम के ख़िलाफ़ कोई बात न ज़ाहिर हो तो वह अल्लाह के नज़दीक मोमिन है।

अक़ीदा :– मुसलमान होने के लिए यह भी ज़रूरी शर्त है कि ज़ुबान से किसी ऐसी चीज़ का

इन्कार न करे जो दीन की ज़रूरियात से है अगरचे बाक़ी बातों का इक़रार करता हो। और अगर कोई यह कहे कि सिर्फ़ जुबान से इन्कार है और दिल में इन्कार नहीं तो वह भी मुसलमान नहीं क्यूँकि बिना किसी ख़ास शरई मजबूरी के कोई मुसलमान कुफ़्र का कलिमा निकाल ही नहीं सकता इसलिए कि ऐसी बात वही मुँह पर ला सकता है जिस के दिल में इस्लाम और दीन की इतनी ही जगह हो कि जब चाहा इन्कार कर दिया और इस्लाम ऐसी तस्दीक़ का नाम है जिस के ख़िलाफ़ हरगिज़ कोई गुन्जाइश नहीं।

मसअ्ला :– अगर कोई आदमी मजबूर किया गया कि वह(मआज़ल्लाह)कोई कुफ़्री बात कहे यानी वह मुसलमान अगर कुफ़्री बात न कहेगा तो ज़ालिम उसे मार डालेगा या उसके बदन का कोई हिस्सा काट देगा तो उस मुसलमान के लिए इजाज़त है कि मजबूरी में वह जुबान से कुफ़्री बात बक दे मगर शर्त यह है कि दिल में उसके वही ईमान बाक़ी रहे जो पहले था लेकिन ज़्यादा अच्छा यही है कि जान चली जाये मगर जुबान से भी कुफ़्री बात न बके ।

मसअ्ला :– अ़मले जवारेह(यानी हाथ पैर वग़ैरा से किए जाने वाले अ़मल या काम)ईमान के अन्दर दाख़िल नहीं है। अलबत्ता कुछ ऐसे काम हैं जो बिल्कुल ईमान के ख़िलाफ़ हैं उन कामों के करने वालों को काफ़िर कहा जायेगा। जैसे बुत, चाँद या सूरज को सजदा करने किसी नबी के क़त्ल या नबी की तौहीन करने वाले या क़ुर्आन शरीफ़ या काबे की तौहीन करने वाले और किसी सुन्नत को हल्का बताने वाले यक़ीनी तौर पर काफ़िर हैं। ऐसे ही जुन्नार(जनेऊ)बाँधने वाले,सर पर चोटी रखने वाले और क़शक़ा (मज़हबी टीका) लगाने वाले को भी फुक़हाए किराम ने काफ़िर कहा है। ऐसे लोगों के लिए हुक्म है कि वह तौबा कर के दोबारा इस्लाम लायें और फिर अपनी बीवी से दोबारा निकाह करें।

अ़क़ीदा :– दीन की ज़रूरियात में से जिस चीज़ का हलाल होना नस्से क़तई (यानी क़ुर्आन और अहादीस)से साबित हो उसको हराम कहना और जिसका हराम होना यक़ीनी हो उसे हलाल बताना कुफ़्र है जबकि यह हुक्म दीन की ज़रूरियात से हो और अगर मुन्किर उस दीन की ज़रूरी बात से आगाह है तो काफ़िर है।

मसअ्ला :– उसूले अ़क़ाइद (यानी बुनियादी अ़क़ीदों में)किसी की तक़लीद या पैरवी जाइज़ नही बल्कि जो बात हो वह क़तई यक़ीन के साथ हो चाहे वह यक़ीन किसी तरह भी हासिल हो उस के हासिल करने से ख़ास कर इल्मे इस्तिदलाली की ज़रूरत नहीं। हाँ कुछ फ़रूए अ़क़ाइद में तक़लीद हो सकती है इसी बुनियाद पर खुद अहले सुन्नत में दो गिरोह हैं।

(1)**मातुरीदिया** :– यह गिरोह इमाम इलमुल हुदा हज़रत अबू मन्सूर मातुरीदी रदियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के पैरवी करने वाले हैं।

(2)**अशाइरा** :– यह दूसरा गिरोह हज़रत इमाम शैख़ अबुल हसन अशअ़री रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह की पैरवी करने वाला है। और ये दोनों जमाअ़तें अहले सुन्नत की ही जमाअ़तें और दोनों हक़ पर हैं। अलबत्ता आपस में कुछ फ़ुरूई बातों का इख़्तिलाफ़ है। इनका इख़्तिलाफ़ हनफ़ी शाफ़ेई की तरह है कि दोनों हक़ पर हैं। कोई किसी को गुमराह और फ़ासिक़ नहीं कहता है।

मसअ्ला :– ईमान में ज़्यादती और कमी नहीं इसलिये कि कमी बेशी उस में होती है जिस में

लम्बाई,चौड़ाई,मोटाई या गिनती हो और ईमान दिल की तस्दीक़ का नाम है और तस्दीक़ कैफ़ **यानी** एक हालते इज़आनिया (यक़ीनिया) है कुछ आयतों में ईमान का ज़्यादा होना जो फरमाया गया **है।** उससे मुराद वह है जिस पर ईमान लाया गया और जिसकी तस्दीक़ की गई कि क़ुर्आन शरीफ़ के नाज़िल होने के ज़माने में उसकी कोई हद मुक़र्रर न थी बल्कि अहकाम उतरते रहते और जो हुक्म नाज़िल होता हो। उस पर ईमान लाज़िम होता। ऐसा नहीं कि नफ़से ईमान बढ़ घट जाता हो। अलबत्ता ईमान में सख़्ती और कमज़ोरी होती है कि यह कैफ़ के अवारिज़ से है। हज़रते सिद्दीके अकबर रदियल्लाहु तआला अन्हु का ईमान ऐसा है कि अगर इस उम्मत के सारे लोगों के ईमानों को जमा कर लिया जाये तो उनका तन्हा ईमान सब पर भारी होगा।

अक़ीदा :– ईमान और कुफ़्र के बीच की कोई कड़ी नहीं यानी आदमी या तो मुसलमान होगा या काफ़िर तीसरी कोई सूरत नहीं कि न मुसलमान हो न काफ़िर।

नोट :– हाँ यह मुमकिन है कि हम शुबह की वजह से किसी को न मुसलमान कह न काफ़िर जैसे यज़ीद पलीद और इसमाईल देहलवी जैसे लोग। इन जैसे लोगों के बारे में हमारे उल्मा ने ख़ामोशी का हुक्म फ़रमाया कि न तो हम इन्हें मुसलमान कहेंगे न काफ़िर हमारे सामने अगर कोई मुसलमान कहे तो भी हम ख़ामोश रहेंगे और काफ़िर कहे तो भी ख़ामोशी इख़्तियार करेंगे। यह शक की वजह से है। यज़ीद के बारे में इमाम आज़म इमाम अबू हनीफ़ा रदियल्लाहु तआला अन्हु का यही हुक्म है कि शक की वजह से उसे न मुसलमान कहेंगे न काफ़िर बल्कि ख़ामोशी इख़्तेयार करेंगे।

मसअ्ला :– निफ़ाक़ उस को कहते हैं कि ज़बान से इस्लाम का दावा करे और दिल में इस्लाम का इन्कार करे ऐसे शख़्स को मुनाफ़िक़ कहते है। निफ़ाक़ भी ख़ालिस कुफ़्र है और मुनाफ़िक़ों के लिये जहन्नम का सब से नीचे का दर्जा है। हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के मुबारक ज़माने में इस तरह के कुछ लोग मुनाफ़िक़ के नाम से मशहूर हुए उनके छिपे हुए कुफ़्र को कुरआन ने बताया और ग़ैब जानने वाले नबी सल्ललाहु तआला अलैहि वसल्लम ने भी एक एक को पहचान कर फ़रमाया कि यह मुनाफ़िक़ है। अब इस ज़माने में किसी ख़ास आदमी के बारे में उस वक़्त तक यकीन के साथ यह नहीं कहा जा सकता कि वह मुनाफ़िक़ है जब तक कि उसकी कोई बात या उसका कोई काम ईमान के ख़िलाफ़ न देख लिया जाये कयूँकि हमारे सामने जो अपने आप को मुसलमान क़हे हम उसे मुसलमान समझेंगे। अलबत्ता निफ़ाक़ के सिलसिले की एक कड़ी इस ज़माने में पाई जाती है कि बहुत से बदमज़हब अपने आप को एक तरफ़ तो मुसलमान कहते हैं और दूसरी तरफ़ दीन की कुछ ज़रूरी बातों का इन्कार भी करते हैं। ज़ाहिर है कि ऐसे लोग मुनाफ़िक़ और काफ़िर माने जायेंगे।

अक़ीदा :– शिर्क का मतलब यह है कि अल्लाह के अलावा किसी दूसरे को वाजिबुल वुजूद या इबादत के लाइक़ मांना जाये यानी खुदा तआला के साथ अल्लाह और माबूद होने में किसी दूसरे को शरीक किया जाये और यह कुफ़्र की सब से बदतरीन किस्म है। इसके सिवा कोई बात अगरचे कैसी ही बुरी और सख़्त कुफ़्र हो फिर भी हक़ीक़त में शिर्क नहीं है। इसीलिये शरीअत ने किताबी काफ़िरों मतलब तौरात, ज़बूर या इन्जील के मानने वालों और मुशरिकीन में फ़र्क़ किया है जैसे

किताबी का ज़िबह किया हुआ जानवर हलाल होगा और मुशरिक का नहीं। ऐसे ही किताबी औरतों से मुसलमान निकाह कर सकता है और मुशरिक औरत से नहीं। इमामे शाफ़ेई रहमतुल्लाहि तआला अलैहि यह भी कहते हैं कि किताबी से जिज़या लिया जायेगा और मुशरिक से नहीं लिया जाएगा। और कभी ऐसा भी होता है कि शिर्क बोल कर कुफ़्र मुराद लिया जाता है। चाहे अल्लाह तआला के साथ कोई शरीक करे या किसी नबी की तौहीन करे यह सब शिर्क में शामिल होते हैं। यह जो कुर्आन शरीफ़ में आया है कि शिर्क नहीं बख़्शा जायेगा वह हर कुफ़्र के मअ्ना पर है यानी हरगिज़ किसी तरह के कुफ़्र की बख़्शिश न होगी। कुफ़्र के अलावा बाक़ी सारे गुनाहों के लिए अल्लाह तआला की मर्ज़ी है चाहे वह सज़ा दे या बख़्श दे।

अक़ीदा :– जिस मुसलमान ने गुनाहे कबीरा किया हो वह मुसलमान जन्नत में जायेगा। चाहे अल्लाह अपने करम से उसे बख़्श दे या हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम उसकी शफ़ाअत कर दें या अपने किये की सज़ा पाकर जन्नत में जायेगा फिर कभी न निकलेगा।

अक़ीदा :– जो कोई किसी काफ़िर के लिए मग़फ़िरत की दुआ करे या किसी मरे हुए मुरतद को मरहूम या मग़फ़ूर या किसी मरे हुए हिन्दू को बैकुन्ठबासी(स्वर्गवासी)कहे वह खुद काफ़िर है।

अक़ीदा :– मुसलमान को मुसलमान और काफ़िर को काफ़िर जानना दीन की ज़रूरी बातों में से है,अगरचे किसी ख़ास आदमी के बारे में यह यक़ीन के साथ नहीं कहा जा सकता कि जिस वक़्त उसकी मौत हुई हक़ीक़त में वह मोमिन था या काफ़िर जब तक कि उस के ख़ातमे और मौत का हाल शरीअत की दलील से न साबित हो मगर इसका यह मतलब भी नहीं कि जिसने यक़ीनी तौर पर कुफ़्र किया हो उसके कुफ़्र में भी शक किया जाये क्यूँकि जो यक़ीनी तौर पर काफ़िर हो उस के काफ़िर होने के बारे में शक करने वाला भी काफ़िर हो जाता है।

कोई आदमी अपने ख़ातिमे के वक़्त मोमिन है या काफ़िर इसकी जानकारी की बुनियाद क़यामत के दिन पर है लेकिन शरीअत का क़ानून ज़ाहिर पर है। इसे यूँ समझिये कि एक आदमी सूरत से बिल्कूल मुसलमान है,नमाज़ी है,हाजी है लेकिन दिल में ऐसे लोगों को अच्छा समझता हो जिन लोगों ने हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की शान में गुस्ताख़ी की है तो चुँकि उस का यह कुफ़्र किसी को मालूम नहीं है वह मुसलमान ही माना जायेगा। दूसरी बात यह है कि अगर कोई यहूदी नसरानी या कोई बुतपरस्त मरा है। मगर अल्लाह और रसूल का यही हुक्म है कि उसे काफ़िर ही जानें और उस के साथ उसी तरह बर्ताव किया जायेगा जैसा कि उसकी ज़िन्दगी में काफ़िरों के साथ किया जाता है। जैसे मेल, जोल,शादी,नमाज़े जनाज़ा और कफ़न दफ़न वग़ैरा में मुसलमानों का काफ़िरों के साथ बर्ताव है। इसलिए कि जब उसने कुफ़्र किया है तो ईमान वालों के लिये फ़र्ज़ है कि वह उसे काफ़िर ही समझें और ख़ातिमे का हाल अल्लाह पर छोड़ दें। इसी तरह जो ज़ाहिर में मुसलमान हो और उसकी कोई बात या उसका कोई काम ईमान के ख़िलाफ़ न हो तो उसे मुसलमान ही समझना फ़र्ज़ है अगरचे हमें उसके ख़ातिमे का भी हाल नहीं मालूम।

इस ज़माने में कुछ लोग यह कहते हैं जितनी देर काफ़िर को काफ़िर कहने में लगाओगे

उतनी देर अल्लाह अल्लाह करो तो सवाब मिलेगा। इस का जवाब यह है कि हम कब कहते हैं कि काफ़िर काफ़िर का वज़ीफ़ा कर लो बल्कि मतलब यह है कि काफ़िर को दिल से काफ़िर जानो और उसके बारे में अगर पूछा जाये तो उसे बेझिझक साफ़ साफ़ काफ़िर कह दो। सुलह कुल्लियों की तरह उस के कुफ़्र पर पर्दा डालने की ज़रूरत नहीं।

कुछ फ़िरक़ों के बारे में

हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया है कि

سَتَفْتَرِقُ اُمَّتِیْ ثَلٰثًا وَّ سَبْعِیْنَ فِرْقَةً كُلُّهُمْ فِی النَّارِ اِلَّا وَاحِدَةً

तर्जमा :– "यह उम्मत तिहत्तर फ़िरके हो जायेगी। एक फ़िरक़ा जन्नती होगा बाक़ी सब जहन्नमी होंगे।" तो हुज़ूर के सहाबा ने पूछा कि

مَنْ هُمْ یَا رَسُوْلَ اللهِ

तर्जमा :– या रसूलल्लाह वह कौन लोग हैं जो जन्नती हैं?

हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अ़लैहि वसल्लम ने जवाब इरशाद फ़रमाया कि

مَااَنَا عَلَیْهِ وَ اَصْحَابِیْ

तर्जमा :– वह जिस पर मैं और मेरे सहाबा हैं, यानी सुन्नत की पैरवी करने वाले हैं।

एक दूसरी रिवायत में यह भी है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि–

هُمُ الْجَمَاعَةُ

तर्जमा :– वह जमाअ़त है। यानी मुसलमानों का बड़ा गिरोह जिसे 'सवादे आज़म' कहा गया है।

और हुज़ूर ने यह भी फ़रमाया कि जो इस जमाअ़त से अलग हुआ वह जहन्नम में अलग हुआ। इसीलिए इस जन्नती और नजात पाने वाले फ़िरके का नाम 'अहले सुन्नत व जमाअ़त' हुआ।

और गुमराह फ़िरक़ों में से बहुत से फ़िरके हुए। कुछ ऐसे भी थे जिनका अब नाम निशान भी नहीं। और कुछ ऐसे हैं जो हिन्दुस्तान से बाहर के हैं। हम इस वक़्त सिर्फ़ हिन्दुस्तान के कुछ बातिल फ़िरक़ों के बारे में बतायेंगे ताकि हमारे मुसलमान भाई उन बदमज़हबों के चक्कर में पड़ कर धोखा न खायें।

हदीस शरीफ़ में यह भी आया है कि :–

اِیَّا كُمْ وَ اِیَّا هُمْ لَا یُضِلُّوْنَكُمْ وَ لَا یُفْتِنُوْنَكُمْ

तर्जमा :– "तुम अपने को उनसे (बद मज़हबों से) दूर रखो और उन्हें अपने से दूर करो कहीं वह तुम्हें गुमराह न कर दें और वह फ़ितने में डाल दें।

(1)क़ादयानी फ़िरक़ा

मिर्ज़ा गुलाम अहमद क़ादियानी के मानने वालों को क़ादियानी कहते हैं मिर्ज़ा गुलाम अहमद ने अपनी नुबुव्वत का दावा किया। नबियों की शान में गुस्ताख़ियाँ कीं। हज़रते ईसा अ़लैहिस्लाम और उनकी माँ तय्यबा ताहिरा सिद्दीक़ा हज़रते मरयम की शान में वह बेहूदा अल्फ़ाज़ इस्तेमाल किए जिनसे मुसलमानों की जानें दहल जाती हैं। यही नहीं बल्कि हज़रते मूसा अ़लैहिस्सलाम और हमारे सरकार नबियों के सरदार हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अ़लैहि वसल्लम की तौहीन की क़ुर्आन शरीफ़ का इन्कार किया और हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अ़लैहि वसल्लम के ख़ातमुन्नबीय्यीन (यानी आख़िरी

नबी) होने को उसने तसलीम नहीं किया और नबियों को झुटलाया। इनके अलावा और भी उसने सैकड़ों कुफ़्र किये हैं कि अगर उन्हें लिखा जाये तो एक दफ़्तर चाहिए। शरीअत का क़ानून है कि अगर किसी ने किसी एक नबी को झुटलाया तो सबको झुटलाया। कुर्आन शरीफ़ में आया है कि–

كَذَّبَتْ قَوْمُ نُوحٍ ن الْمُرْسَلِيْنَ

तर्जमा :– हज़रते नूह अलैहिस्सलाम की क़ौम ने पैग़म्बरों को झुटलाया। मिर्जा ने तो बहुतों को झुटलाया और अपने को नबी से बेहतर बताया। इसीलिए ऐसे आदमी ओर उसके मानने वालों के काफ़िर होने के बारे में किसी मुसलमान को शक हो ही नहीं सकता। और अगर कोई मुसलमान उसकी कही या लिखी बातों को जान के उसके काफ़िर होने में शक करे वह खुद काफ़िर है। अब मिर्ज़ा गुलाम अहमद क़ादियानी की कुछ लिखी हुई बातें और किताबों के नाम पेज न. के साथ इसलिए लिखी जा रही हैं कि जो देखना चाहे उसकी ख़बासतों को देख ले। मिर्ज़ा गुलाम अहमद क़ादियानी ने जो ख़बीस हरकतें कीं वह उस की इन इबारतों से साबित हैं।

1. खुदाए तआला ने 'बराहीने अहमदीया' में इस आजिज़ का नाम उम्मती भी रखा और नबी भी। (इज़ालए औहाम स न 533)

2. ऐ अहमद! तेरा नाम पूरा हो जायेगा क़ब्ल इसके जो मेरा नाम पूरा हो (अनजाम आथम स न 52)

3. तुझे खुश ख़बरी हो ऐ अहमद! तू मेरी मुराद है और मेरे साथ है (अनजाम आथम स न 55)

4. तुझको तमाम जहान की रहमत के वास्ते रवाना किया। (अनजाम आथम स न. 78)

नोट :– हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की फ़ज़ीलत के बारे में कुर्आन शरीफ़ में अल्लाह तआला ने यह फ़रमाया है कि :–

وَمَا اَرْسَلْنَا كَ اِلَّا رَحْمَةً لِّلْعٰلَمِيْنَ

तर्जमा :– " और हमने तुम्हें न भेजा मगर रहमत सारे जहान के लिए" इस आयत को मिर्जा ने अपने ऊपर जमाने की कोशिश की है।

وَمُبَشِّراً بِرَسُوْلٍ يَّاْتِىْ مِنْ بَعْدِىْ اسْمُهٗ اَحْمَدُ

से अपनी ज़ात मुराद लेता है दाफ़ेउल बला सफ़ा छः में है

5. "मुझको अल्लाह तआला फ़रमाता है।

اَنْتَ مِنِّىْ بِمَنْزِلَةِ اَوْلَادِىْ اَنْتَ مِنِّىْ وَ اَنَا مِنْكَ -

तर्जमा :– "ऐ गुलाम अहमद। तू मेरी औलाद की जगह है तू मुंझ से और मैं तुझ से हूँ। (दाफ़िउ बला पेज न.6)

6. हज़रत रसूले खुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के इलहाम व वही ग़लत निकली थी। (इज़ालए औहाम पेज न.688)

7. हज़रते मूसा की पेशगोईयाँ भी उस सूरत पर जुहूरपज़ीर (ज़ाहिर)नहीं हुई जिस सूरत पर हज़रते मूसा ने अपने दिल में उम्मीद बाँधी थी। (इज़ालए औहाम पेज न. 8)

8. सूरए बक़रह में जो एक क़त्ल का ज़िक्र है कि गाय की बोटियाँ लाश पर मारने से वह मक़तूल ज़िन्दा हो गया था और अपने क़ातिल का पता दे दिया था यह महज़ मूसा अलैहिस्सलाम की धमकी थी और इल्मे मिसमरेज़म था। (इज़ालए औहाम पेज न. 775)

9. हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम का चार परिन्दे के मोजिज़े का ज़िक्र जो कुर्आन में है वह भी उनका मिसमरेज़म का अमल था। (इज़ालए औहाम पेज नं. 553)

10. एक बादशाह के वक़्त में चार सौ नबियों ने उसके फ़तह के बारे में पेशीनगोई की और वह झूटे निकले और बादशाह की शिकस्त हुई बल्कि वह उसी मैदान में मर गया।(इज़ालये औहाम पेज नं. 629)

11. कुर्आन शरीफ़ में गन्दी गालियाँ भरी हैं और कुर्आन अज़ीम सख़्त ज़बानी के तरीक़े को इस्तेमाल कर रहा है। (इज़ालए औहाम पेज नं. 26,28)

12. अपनी किताब 'बराहीने अहमदीया'के बारे में लिखता है:– बराहीने अहमदीया खुदा का कलाम है। (इज़ालए औहाम पेज नं. 533)

13. कामिल महदी न मूसा था न ईसा। (अरबईन पेज न 2,13) इन उलूल अज़्म मुरसलीन का हादी होना तो दर किनार पूरे राह याफ़्ता भी न माना अब ख़ास हज़रत ईसा अलैहिस्सलातु वस्सलाम की शान में जो गुस्तख़ियाँ कीं उन में से चन्द यह हैं।

तर्जमा :– हमारा रब मसीह है मत कहो और देखो رَبُّنَا الْمَسِيْحُ 14 ऐ ईसाई मिशनरयो! अब कि आज तुम में एक है जो उस मसीह से बढ़ कर है। (मेआर पेज नं. 13)

15. खुदा ने इस उम्मत में से मसीहे मौऊद भेजा जो उस पहले मसीह से अपनी तमाम शान में बहुत बढ़ कर है। और उस ने दूसरे मसीह का नाम गुलाम अहमद रखा तो यह इशारा है कि ईसाईयों का मसीह कैसा खुदा है जो अहमद के अदना गुलाम से भी मुक़ाबला नहीं कर सकता यानी वह कैसा मसीह है जो अपने कुर्ब और शफ़ाअत के मरतबे में अहमद के गुलाम से भी कमतर है।(कशती पेज न 13)

16. मसीले मूसा मूसा से बढ़ कर और मसील इब्ने मरयम इब्ने मरयम से बढ़ कर।(कशती पेज नं. 13)

17. खुदा ने मुझे खबर दी है कि मसीह मुहम्मदी मसीहे मूसवी से अफ़ज़ल है (दाफ़ेउल बला पेज नं.20)

18. अब खुदा बतलाता है कि देखो मैं उसका सानी पैदा करूँगा जो उससे भी बेहतर है। जो गुलाम अहमद है यानी अहमद का गुलाम।

इब्ने मरयम के ज़िक्र को छोड़ो
उससे बेहतर गुलाम अहमद है

(इज़ालए औहाम पेज न 688)

यह बातें शायराना नहीं बल्कि वाक़ई हैं। और अगर तजर्बे की रू से में खुदा की ताईद मसीह इब्ने मरयम से बढ़कर मेरे साथ न हो तो मैं झूठा हूँ। (दाफ़िउल बला पेज नं. 20)

19. खुदा तो ब–पाबन्दी अपने वादों के हर चीज़ पर क़ादिर है लेकिन ऐसे शख़्स को दोबारा दुनिया में नहीं ला सकता जिसके पहले फ़ितने ने ही दुनिया को तबाह कर दिया। (दाफ़िउल बला पेज नं. 15)

20. मरयम का बेटा कौशल्या के बेटे से कुछ ज्यादत नहीं रखता। (अनजाम आथम पेज नं. 41)

21. मुझे क़सम है उस ज़ात की जिसके हाथ में मेरी जान है कि अगर मसीह इब्ने मरयम मेरे ज़माने में होता तो वह काम जो मैं कर सकता हूँ वह हरगिज़ न कर सकता और वह निशान जो मुझ से ज़ाहिर हो रहे हैं वह हरगिज़ दिखला न सकता। (कशतीए नूह पेज नं. 56)

22. यहूद तो हज़रते ईसा के मामले में और उनकी पेशगोईयों के बारे में ऐंसे क़वी एअ्तराज़ रखते हैं कि हम भी जवाब में हैरान हैं बग़ैर उस के कि यह कह दें कि ज़रूर ईसा नबी हैं क्यूँकि कुर्आन

ने उसको नबी करार दिया है और कोई दलील उनकी नुबुव्वत पर क़ायम नहीं हो सकती बल्कि इबताले नुबुव्वत (यानी नबी न होने पर)पर कई दलाइल क़ाइम हैं। (एजाज़े अहमदी पेज नं.13)

मिर्ज़ा ने अपनी इस बात में यहूदियों की इस बात को ठीक होना बताया और कुर्आन शरीफ़ पर भी साथ ही यह एअ्तेराज़ लगाया कि कुर्आन ऐसी बात की तालीम दे रहा है कि जिसको बहुत सी दलीलों से बातिल किया जा चुका है।

23. ईसाई तो उनकी (हज़रते ईसा अलैहिस्सलाम की)खुदाई को रोते हैं मगर यहाँ नुबुव्वत भी उनकी साबित नहीं। (एअ्जाज़ अहमदी पेज नं.14)

24. कभी आपको शैतानी इलहाम भी होते थे। (एअ्जाज़ अहमदी पेज नं. 24)

मुसलमानों तुम्हें मअ्लूम है कि शैतानी इलहाम किस को होता है।

कुर्आन में आया है कि –

تَنَزَّلُ عَلٰى كُلِّ اَفَّاكٍ اَثِيْمٍ

तर्जमा :– "बड़े बुहतान वाले सख़्त गुनाहगार पर शैतान उतरते हैं।"

इससे अन्दाज़ा हुआ कि शैतानी इलहाम सिर्फ़ गुनाहगारों को ही हो सकता हैं। लेकिन मिर्ज़ा ने हज़रते ईसा अलैहिस्सलाम के बारे में इस तरह की बातें लिखकर उनकी तौहीन की हैं।

25. उनकी अकसर पेशीनगोईयाँ ग़लती से पुर हैं। (एअ्जाज़े अहमदी)

26. अफ़सोस से कहना पड़ता है कि उनकी पेशींनगोईयों पर यहूद के सख़्त एतेराज़ हैं जो हम किसी तरह उनको दफ़ा नहीं कर सकते (एअ्जाज़े अहमदी पेज नं.13)

27. हाय किसके आगे यह मातम ले जायें कि हज़रते ईसा अलैहिस्सलाम की तीन पेशीनगोईयाँ साफ़ तौर पर झूठी निकलीं (एअ्जाज़े अहमदी पेज नं.14)

28. मुमकिन नहीं कि नबियों की पेशीनगोईयाँ टल जायें (कशती–ए–नूह पेज नं.5)

29. हम मसीह को बेशक एक रास्त बाज़ आदमी जानते हैं कि अपने ज़माने के अकसर लोगों से अलबत्ता अच्छा था (वल्लाहु तआलाआ अअ्लम) मगर वह हक़ीक़ी मुनजी(नजात दिलाने वाला) न था। हक़ीक़ी मुनजी वह है जो हिजाज़ में पैदा हुआ था और अब भी आया मगर बरोज़ के तौर पर। ख़ाकसार गुलाम अहमद अज़ क़ादियान (दाफ़िउ़ल बला पेज नं. 3)

30. यह हमारा बयान नेक ज़नी के तौर पर है वर्ना मुमकिन है कि ईसा के वक़्त में बाज़ रास्तबाज़ अपनी रास्तबाज़ी में ईसा से भी आला हों। (दाफ़िउ़ल बला पेज नं 3)

31. मसीह की रास्तबाज़ी अपने ज़माने में दूसरे रास्तबाज़ों से बढ़ कर साबित नहीं होती बल्कि यहया को उस पर एक फ़ज़ीलत है क्यूँकि वह शराब न पीता था और कभी न सुना कि किसी फ़ाहिशा औरत ने अपनी कमाई के माल से उसके सर पर इत्र मला था या हाथों और अपने सर के बालों से उसके बदन को छुआ था या कोई बे तअल्लुक़ जवान औरत उसकी ख़िदमत करती थी। इसी वजह से खुदा ने कुर्आन में यहया का नाम हसूर रखा मगर मसीह का न रखा क्यों कि ऐसे क़िस्से उस नाम के रखने से मानेअ् (रुकावट) थे। (दाफ़िउ़ल बला पेज नं.4)

32. आप का कन्जरियों से मैलान और सुहबत भी शायद इसी वजह से हो कि जद्दी मुनासबत दरमियान है वर्ना कोई परहेज़गार इन्सान एक जवान कन्जरी को यह मौक़ा नहीं दे सकता कि वह

उसके सर पर अपने नापाक हाथ लगा दे और ज़िनाकरी की कमाई का पलीद इत्र उसके सर पर मले और अपने बालों को उसके पैरों पर मले। समझने वाले समझ लें कि ऐसा इन्सान किस चलन का आदमी हो सकता है।(ज़मीमा अनजाम आथम पेज न.7) इस के अलावा इस रिसाले में उस मुक़द्दस रसूल की शान में बहुत बुरे अल्फ़ाज़ इस्तेमाल किये हैं जैसे शरीर,मक्कार बद–अक़्ल, फ़हशगो, बदज़बान झूटा,चोर,ख़लल दिमाग़ वाला,बदकिस्मत,निरा फ़रेबी और पैरो शैतान वग़ैरा। और हद यह कि मिर्ज़ा ने उनके ख़ानदान को भी नहीं बख़्शा। लिखता है कि :–

33. आपका ख़ानदान भी निहायत पाक व मुतह्हर है तीन दादियाँ और नानियाँ आपकी ज़िनाकार और कसबी औरतें थीं जिनके ख़ून से आपका वुजूद हुआ। (अन्जाम आथम)

34. यसू मसीह के चार भाई और दो बहनें थीं। यह सब यसू के हक़ीकी बहनें थीं यानी युसूफ़ और मरयम की औलाद थे।(कशती–ए–नूह)

35. हक़ बात यह है कि आप से कोई मोजिज़ा न हुआ। (अनजाम आथम)

36. उस ज़माने में एक तालाब से बड़े निशान ज़ाहिर होते थे। आप से कोई मोजिज़ा हुआ भी तो वह आपका नहीं उस तालाब का है । आप के हाथ में सिवा मक्र व फ़रेब के कुछ न था।(अन्जाम अथम पेज न.7)

इन तमाम बातों से अच्छी तरह अन्दाज़ा हो गया होगा कि मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी काफ़िर है और उसके मानने वाले भी काफ़िर हैं।

37. तो सिवाये इसके अगर मसीह के असली कामों का उन हवाशी से अलग कर के देखा जाये जो महज़ इफ़्तरा या ग़लतफ़हमी से गढ़े हैं तो कोई अजूबा नज़र नहीं आता बल्कि मसीह के मोजिज़ात पर जिस क़दर एअ्तेराज़ हैं मैं नहीं समझ सकता कि किसी और नबी के ख़वारिक़ पर ऐसे शुबहात हों क्या तालाब का क़िस्सा मसीही मोजिज़ात की रौनक़ नहीं दूर करता।

इन बातों के अलावा क़ादियानी ने और भी बहुत सी तौहीन से भरी हुई बातें लिखी हैं कि जिन को जान कर कोई मुसलमान उसे मुसलमान नहीं कह सकता और न उसे काफ़िर समझने में शक कर सकता है। शरीअत का हुक्म है कि :

مَنْ شَكَّ فِيْ عَذَابِهٖ و كُفْرِهٖ فَقَدْ كَفَرَ

तर्जमा :–"जो उन ख़बासतों को जान कर उसके अज़ाब और कुफ़्र में शक करे वह ख़ुद काफ़िर है।"

2.राफ़िज़ी फ़िरक़ा

राफ़िज़ी मज़हब के बारे में शाह अब्दुल अज़ीज़ मुहद्दिस देहलवी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि ने अपनी किताब 'तुह़फ़ए इसना अशरीया' में बहुत तफ़सील से लिखा है। इस वक़्त राफ़िज़ियों के बारे में कुछ थोड़ी सी बातें लिखी जाती हैं।

(1) राफ़िज़ी फ़िरक़े के लोग कुछ सहाबियों को छोड़ कर ज़्यादा तर सहाबए किराम रदियल्लाहु तआला अन्हुम की शान में गुस्ताख़ियाँ करते और गालियों की बकवास करते हैं बल्कि कुछ को छोड़ कर सबको काफ़िर और मुनाफ़िक़ कहते हैं।

(2) यह लोग हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के पहले ख़लीफ़ा हज़रते अबूबक सिद्दीक़ रदियल्लाहु तआला अन्हु, दूसरे ख़लीफ़ा हज़रते उमर फ़ारूक़ रदियल्लाहु तआला अन्हु और तीसरे ख़लीफ़ा हज़रते उसमाने ग़नी रदियल्लाहु तआला अन्हु के बारे में यह कहते हैं कि उन लोगों ने

ग़सब कर के ख़िलाफ़त हासिल की है। यह लोग ख़िलाफ़त का हक़दार हज़रते अली रदियल्लाहु तआला अन्हु को मानते हैं। हज़रते अली ने उन तीनों खुलफ़ा की तारीफ़ें और बड़ाईयाँ की हैं उनको राफ़िज़ी लोग 'तक़िय्या' और बुज़दिली कहते हैं। यह हज़रते अली पर एक बहुत बड़ा इलज़ाम है क्यूँकि यह कैसे मुमकिन है कि एक तरफ़ तो हज़रते अली शेरे खुदा उन सहाबियों को ग़ासिब, काफ़िर और मुनाफ़िक़ समझें और दूसरी तरफ़ उनकी तारीफ़ करें और उन्हें ख़लीफ़ा मानकर उनके हाथों पर बैअत करें।

फिर यह कि क़ुर्आन उन सहाबियों को अच्छे और ऊँचे ख़िताब से याद करता है और उनकी पैरवी करने वालों के बारे में यह फ़रमाया है कि अल्लाह उनसे राज़ी वह अल्लाह से राज़ी क्या काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों के लिये अल्लाह तआला के ऐसे फ़रमान हो सकते हैं?हरगिज़ नहीं।

अब उन सहाबियों के बारे में कुछ ख़ास बातें बग़ौर मुलाहज़ा फ़रमायें :–

एक यह कि हज़रते अली शेरे खुदा ने अपनी चहीती बेटी हज़रते उमर फ़ारूक़ के निकाह में दी। राफ़िज़ी फ़िरक़ा यह कह कर उन पर इल्ज़ाम लगाता है कि उन्होंने तक़िय्या किया था। सोचने की बात यह है कि क्या कोई मुसलमान किसी काफ़िर को अपनी बेटी दे सकता है?कभी नहीं। फिर ऐसे पाक लोग जिन्होंने इस्लाम के लिये अपनी जानें दी हों और जिनके बारे में

لَا يَخَافُوْنَ لَوْمَةَ لَائِمٍ

तर्जमा :– " किसी मलामत करने वाले की मलामत का अन्देशा न करेंगे।"

कहा गया हो। और हक़ बात कहने में हमेशा निडर रहे हों वह कैसे तक़िय्या कर सकते हैं?

यह कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की दो शहज़ादियाँ यके बाद दीगरे हज़रत उसमान जुन्नूरैन के निकाह में आईं।

यह कि हज़रते अबू बक सिद्दीक और हज़रते उमर फ़ारूक़ रदियल्लाहु तआला अन्हुमा की साहिबज़ादियाँ हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के निकाह में आईं।

पहले,दूसरे और तीसरे खुलफ़ा को हुज़ूर से ऐसे रिश्ते और हुज़ूर के इन सहाबियों से ऐसे रिश्ते के होते हुए अगर कोई उन सहाबियों की तौहीन करे तो आप खुद फ़ैसला करें कि वह क्या होगा?

इस फ़िरक़े का एक अक़ीदा यह है कि अल्लाह तआला पर असलह' वाजिब है। यानी जो काम बन्दे के हक़ में नफ़ा देने वाला हो अल्लाह पर वही करना वाजिब है और उसे वही करना पड़ेगा। इस फ़िरक़े का एक अक़ीदा यह भी है कि इमाम नबियों से अफ़ज़ल है। (जबकि यह मानना कुफ़्र है)

राफ़िज़ियों का एक अक़ीदा यह कि क़ुर्आन मजीद महफ़ूज़ नहीं बल्कि उसमें से कुछ पारे या सूरतें या आयतें या कुछ ,लफ़्ज़ हज़रते उसमाने ग़नी या दूसरे सहाबा ने निकाल दिये।(मगर तअज्जुब है कि मौला अली रदियल्लाहु तआला अन्हु ने भी उसे नाक़िस ही छोड़ा और यह अक़ीदा भी कुफ़्र है कि क़ुर्आन मजीद का इन्कार है।)

राफ़िज़ीयों का एक अक़ीदा यह भी है कि अल्लाह तआला कोई हुक्म देता है फ़िर यह मालूम कर के कि यह मसलेहत उसके ख़िलाफ़ या उसके ग़ैर में है पछताता है।(और यह भी यक़ीनी कुफ़्र है कि खुदा को जाहिल बताना है।)

राफ़िज़ियों का एक अक़ीदा यह है कि नेकियों का ख़ालिक़ (पैदा कर ने वाला)अल्लाह है और बुराईयों के ख़ालिक़ यह खुद हैं। (मजूसियों ने तो दो ही ख़लिक़ माने थे 'यज़दान' को अच्छाई का और बुराई का ख़ालिक़ 'अहरमन'को। इस त़रह से तो मजूसियों के दो ही ख़ालिक़ हुए लेकिन राफ़िज़ियों के तो इस अक़ीदे से अरबों और संखों ख़ालिक़ हुए।)

इस तरह हम देखते हैं कि राफ़िज़ी अपने इन बुनियादी अक़ीदों की बिना पर काफ़िर व मुरतद हैं व गुमराह व बद्दीन हैं। इनके दीन की बुनियाद ऐसे गन्दे अक़ीदे और सहाबा की तौहीन है।

3. वहाबी फ़िरक़ा

यह एक नया फ़िरक़ा है जो सन बारह सौ नौ हिजरी (1209) मे पैदा हुआ। इस मज़हब का बानी अ़ब्दुल वह्हाब नजदी का बेटा मुहम्मद था। उसने तमाम अ़रब और ख़ास़ कर ह़रमैन शरीफ़ैन में बहुत ज़्यादा फ़ितने फैलाये। आ़लिमों को क़त्ल किया। सह़ाबा,इमामों, अ़लिमों और शहीदों की क़ब्रें खोद डालीं। हुज़ूर स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के रौज़े का नाम स़नमे अक़बर (बड़ा बुत)रखा था और त़रह़ त़रह के ज़ुल्म किये। जैसा कि स़ही ह़दीस मे हुज़ूर अक़दस स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने ख़बर दी थी कि नज्द से फितने उठेंगे और शैत़ान का गिरोह निकलेगा। वह गिरोह बारह सौ बरस बाद ज़ाहिर हुआ। अ़ल्लामा शामी रह़मतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि ने इसे ख़ारिजी बताया।

इस अ़ब्दुल वह्हाब के बेटे ने एक किताब लिखी जिसका नाम 'किताबुत्तौह़ीद'रखा। उसका तर्जमा हिन्दुस्तान में इसमाईल देहलवी ने किया जिसका नाम 'तक़वीयतुल ईमान' रखा।और हिन्दुस्तान में वहाबियत उसी ने फ़ैलाई। उन वहाबियों का एक बहुत बड़ा अक़ीदा यह है जो उनके मज़हब पर न हो वह काफ़िर मुशरिक है। यही वजह है कि बात बात पर बिला वजह मुसलमानों पर कुफ़्र और शिर्क का हुक्म लगाते और तमाम दुनिया को मुशरिक बताते हैं। चुनाँचे तक़वीयतुल ईमान पेज न .45 में वह ह़दीस लिखकर कि आख़िर ज़माने में अल्लाह तआ़ला एक हवा भेजेगा जो सारी दुनिया से मुसलमानों को उठा लेगी उसके बाद साफ़ लिख दिया सो पैग़म्बरे ख़ुदा के फ़रमाने के मुत़ाबिक़ हुआ यानी,वह हवा चल गई और कोई मुसलमान रूए ज़मीन पर न रहा। मगर यह न समझा कि इस सूरत में खुद भी काफ़िर हो गया।

इस मज़हब की बुनियाद अल्लाह तआ़ला और उसके मह़बूबों की तौहीन और तज़लील पर है। यह लोग हर चीज़ में वही पहलू इख्तियार करेंगे। जिससे शान घटती हो। इस मज़हब के सरगिरोहों के कुछ क़ौल नक़्ल किये जाते हैं। ताकि हमारे अ़वाम भाई उनके दिलों की ख़बासतों को जान कर उनके फ़रेब और धोके से बचते रहें और उनके जुब्बा और दस्तार पर न जायें।

बरादराने इस्लाम! ग़ौर से सुनें और ईमान की तराज़ू में तौलें कि ईमान से अ़ज़ीज़ मुसलमान के नज़दीक कोई चीज़ नहीं और ईमान अल्लाह और रसूल की ताज़ीम ही का नाम है। ईमान के साथ जिसमें जितने फ़ज़ाइल पाये जायें वह उसी क़द्र ज्यादा फ़ज़ीलत रखता है और ईमान नहीं तो मुसलमानों के नज़दीक वह कुछ वक़अ़त (हैसियत)नहीं रखता अगरचे कितना ही बड़ा आ़लिम,ज़ाहिद और तारिकुद्दुनिया बनता हो। मत़लब यह है कि उनके मोलवी, आ़लिम, फ़ाज़िल होने की वजह से तुम उन्हें अपना पेशवा न समझो जब कि वह अल्लाह और उसके रसूलों के दुश्मन हैं। यहूदियों,

नसरानियों और हिन्दुओं में भी उनके मज़हब के आलिम और तारिकुद्दुनिया होते हैं तो क्या तुम उनको अपना पेशवा तसलीम कर सकते हो? हरगिज़ नहीं। इसी तरह यह ला मज़हब औ बदमज़हब तुम्हारे किसी तरह7 पेशवा नहीं हो सकते।

अब वहाबियों के कुछ कौल पेश किये जाते हैं।

(1)ईज़ाहुल हक़ सफ़ा न.35,36,में है कि

تنزیہ اوتعالیٰ اززمان ومکان وجہت واثبات رویت بلاجہت ومحاذات ہمہ ازقبیل
بدعات حقیقہ است اگر صاحب آں اعتقادات مذکورہ ازجنس عقائد دینیہ می شمارد

तर्जमा :– "अल्लाह तआ़ला का वक़्त और जगह और सम्त (दिशा)से पाक होना और उसका दीदार बिला सम्त और मुहाज़ात (बिला आमने सामने)के मानना सब ह़क़ीक़ी बिदअ़तों की क़िस्म से हैं,अगर वह शख़्स ज़िक किये गये एअ़तिक़ादात को अक़ाइदे दीनिया की क़िस्म से मानता है।"

इसमें साफ़ लिखा हुआ है कि अल्लाह तआ़ला को वक़्त जगह और सम्त से पाक जानना और उसका दीदार बिला कैफ़ मानना बिदअ़त और गुमराही है। ह़ालाँकि यह तमाम अहले सुन्नत का अक़ीदा है तो उस कहने वाले ने तमाम अहले सुन्नत के पेशवाओं को गुमराह और बिदअ़ती बताया। दुर्रेमुख़्तार, बह़रुराईक़ और आलमगीरी में है कि अल्लाह तआ़ला के लिए जो मकान साबित करे वह काफ़िर है।

(2)तक़वीयतुल ईमान सफ़ा न. 60 में इस ह़दीस

اَرَاَیْتَ لَوْ مَرَرْتَ بِقَبْرِیْ اَکُنْتَ تَسْجُدُ لَہٗ

(तर्जमा :– "ज़रा ख़्याल तो कर कि अगर तू गुज़रे मेरी कब्र पर क्या तू उसको सजदा करेगा?"के लिखने के बाद (ف)लिख कर फ़ायदा यह जड़ दिया कि मैं भी एक दिन मर कर मिट्टी में मिलने वाला हूँ के बाद ह़ालाँकि हुज़ूर स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम फ़रमाते हैं कि :–

اِنَّ اللّٰہَ حَرَّمَ عَلَی الْاَرْضِ اَنْ تَاْکُلَ اَجْسَادَالْاَنْبِیَاءِ

तर्जमा :– "अल्लाह तआ़ला ने अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम के ज़िस्मों का ख़ाना ज़मीन पर ह़राम कर दिया है" और

فَنَبِیُّ اللّٰہِ حَیٌّ یُرْزَقُ

तर्जमा : तो अल्लाह के नबी ज़िन्दा हैं रोज़ी दिये जाते हैं।

इन बातों से पता चलता है कि अल्लाह के नबी ज़िन्दा हैं और रोज़ी दिए जाते हैं।

(3)तक़वीयतुल ईमान सफ़ा 19 में है कि

"हमारा जब ख़ालिक़ अल्लाह है और उसने हमको पैदा किया तो हमको भी चाहिए कि अपने हर कामों पर उसी को पुकारें और किसी से हमको क्या काम जैसे कोई एक बादशाह का गुलाम हो चुका तो वह अपने हर काम का इलाक़ा उसी से रखता है दूसरे बादशाह से भी नहीं रखता और किसी चुहड़े चमार का तो क्या ज़िक्र"

अम्बिया–ए–किराम और औलियाये इ़ज़ाम की शान में ऐसे मलऊ़न अलफ़ाज़ इस्तेमाल करना क्या मुसलमान की शान हो सकती है ?

(4)सिराते मुस्तक़ीम–सफ़ा न. 95 में है ظُلُمٰتٌ بَعْضُهَا فَوْقَ بَعْضٍ ब मुक़तज़ाए'

तर्जमा :– अंधेरे कुछ अंधेरों से बढ़ कर होते हैं) के मुताबिक़

از وسوسہ زنا خیال مجامعت زوجہ خود بہتر است وصرف ہمت بسوئے شیخ وامثال آں از معظمین گو جناب رسالت مآب باشند بچندیں مرتبہ بدتر از استغراق درصورت گاؤ خر خود است

तर्जमा :– "औरतों के ज़िना करने के ख़्याल से अपनी बीवी से वती (हमबिस्तरी) करना बेहतर है और अपने ख़्याल को अपने शैख़ वग़ैरा बुज़ुर्गाने दीन अगरचे सरकारे रिसालत मआब ही क्यूँ न हों अपनी गाय और गधे की सूरत में डूब जाने से कई गुना ज़्यादा बुरा है।"

मुसलमानो!यह हैं वहाबियों के गुरू घंटाल के बेहूदा कलिमात और वह भी हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की शान में। जिसके दिल में राई बराबर भी ईमान है वह ज़रूर यह कहेगा कि इस क़ौल में गुस्ताख़ी ज़रूर है। (5) तक़वीयतुल ईमान सफ़ा न. 10में है कि :–

"रोज़ी की कशाइश और तंगी करनी और तन्दरुस्त व बीमार कर देना,इक़बाल व इदबार देना,हाजतें बर लानी, बलायें टालनी,मुश्किल में दस्तगीरी करनी यही सब अल्लाह की शान है और किसी अम्बिया औलिया भूत परी की यह शान नहीं जो किसी को ऐसा तसर्रुफ़ साबित करे और उससे मुरादें माँगे और मुसीबत के वक़्त उसको पुकारे सो वह मुशरिक हो जाता है फिर ख़्वाह यूँ समझे कि अल्लाह ने उनको क़ुदरत बख़्शी है हर तरह शिर्क है।"जब कि क़ुर्आन शरीफ़ में यह है कि :– اَغْنٰهُمُ اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ مِنْ فَضْلِهٖ

तर्जमा :– "अल्लाह और रसूल ने अपने फ़ज़्ल से उनको ग़नी कर दिया"

इससे पता चलता है कि अल्लाह ने अपने नबी को तसर्रुफ़ का इख़्तियार दिया है। और फिर क़ुर्आन में हज़रते ईसा अलैहिस्सलाम के बारे में यह आया है कि–

وَ تُبْرِئُ الْاَ كْمَهَ وَالْاَبْرَصَ بِاِذْنِیْ

"ऐ ईसा ! तू मेरे हुक्म से मादरज़ाद अन्धे और सफ़ेद दाग़ वाले को अच्छा कर देता है। एक दूसरी जगह क़ुर्आन ने हज़रते ईसा अलैहिस्सलाम के फ़रमान को इस तरह बताया है कि:–

اُبْرِئُ الْاَ كْمَهَ وَ الْاَبْرَصَ وَ اُحْيِ الْمَوْتٰى بِاِذْنِ اللّٰهِ

तर्जमा :– मैं अल्लाह के हुक्म से अच्छा करता हूँ मादरज़ाद अंधे और सफ़ेद दाग़ वालों को और मुर्दों को जिला देता हूँ"

अब क़ुर्आन का तो यह हुक्म है और वहाबी यह कहते हैं कि तन्दुरुस्त करना अल्लाह ही की शान है जो किसी को ऐसा तसर्रुफ़ साबित करे मुशरिक है। अब वहाबी बतायें कि अल्लाह तआला ने ऐसा तसर्रुफ़ हज़रते ईसा अलैहिस्सलाम के लिए साबित किया तो उस पर क्या हुक्म लगाते हैं और लुत्फ़ यह कि अल्लाह तआला ने अगर उनको क़ुदरत बख़्शी है जब भी शिर्क है तो मालूम कि उन के यहाँ इस्लाम किस चीज़ का नाम है?

(6) तक़वीयतुल ईमान सफ़ा 11 में है कि :–

"गिर्द व पेश के जंगल का अदब करना यानी वहाँ शिकार न करना दरख़्त न काटना यह काम अल्लाह ने अपनी इबादत के लिये बनाये हैं फिर जो कोई किसी पैग़म्बर या भूत के मकानों के गिर्द व पेश के जंगल का अदब करे उस पर शिर्क साबित है ख़्वाह यूँ समझे कि यह आप ही इस ताज़ीम के लाइक़ या यूँ कि उनकी इस ताज़ीम से अल्लाह खुश होता है हर तरह शिर्क है।"

कई सही हदीसों में इरशाद फ़रमाया कि इबराहीम ने मक्का को हरम बनाया और मैंने मदीने को हरम किया। उसके बबूल के दरख़्त न काटे जायें और उसका शिकार न किया जाये।

मुसलमानों ! ईमान से देखना कि उस शिर्क फ़रोश का शिर्क कहाँ तक पहुँचता है ?तुमने देखा कि इस गुस्ताख़ ने नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम पर क्या हुक्म जड़ा।

(7) **तक़्वीयतुल ईमान** सफ़ा न. 8 में है कि :–

पैग़म्बरे ख़ुदा के वक़्त में काफ़िर भी अपने बुतों को अल्लाह के बराबर नहीं जानते थे बल्कि उसी का मख़लूक़ और उसका बन्दा समझते थे और उनको उसके मुक़ाबिल की ताक़त साबित नहीं करते थे मगर यही पुकारना और मन्नत माननी और नज़र व नियाज़ करनी और उनको अपना वकील व सिफ़ारिशी समझना यही उनका कुफ़्र व शिर्क था सो जो कोई किसी से यह मुआमला करेगा कि उसको अल्लाह का बन्दा व मख़लूक़ ही समझे सो अबू जहल और वह शिर्क में बराबर हैं।''

यानी जो नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की शफ़ाअत माने कि हुज़ूर अल्लाह तआला के दरबार में हमारी सिफ़ारिश फ़रमायेंगे तो मआज़ल्लाह उसके नज़दीक वह अबू जहल के बराबर मुशरिक है। इसमें शफ़ाअत के मसअ्ले का सिर्फ़ इन्कार ही नहीं बल्कि उसको शिर्क साबित किया और तमाम मुसलमानों सहाबा,ताबेईन.दीन के इमाम और औलियाए सालेहीन सब को मुशरिक और अबू जहल बना दिया।

(8) **तक़्वीयतुल ईमान** सफ़ा न. 58 में है कि :–

''कोइ शख़्स कहे फ़लाने दरख़्त में कितने पत्ते हैं या आसमान में कितने तारे हैं तो उसके जवाब में यह न कहे कि अल्लाह और रसूल जानें क्योंकि ग़ैब की बात अल्लाह ही जानता है रसूल को क्या ख़बर?''

सुबहानल्लाह ख़ुदाई इसी काम का नाम रह गया कि किसी पेड़ के पत्ते की तादाद जान ली जाये

(9) **तक़्वीयतुल ईमान** सफ़ा न.7 में यह है कि :– अल्लाह साहब ने किसी को आलम में तसर्रुफ़ करने की क़ुदरत नहीं दी इसमें अम्बियाये किराम के मोजिज़ात और औलियाए इज़ाम की करामत का साफ़ इन्कार है। अल्लाह फ़रमाता है कि :– وَالْمُدَبِّرَاتِ اَمْرًا

तर्जमा :– '' क़सम फ़रिश्तों की जो कामों की तदबीर करते हैं''। क़ुर्आन तो यह कहता है। लेकिन तक़्वीयतुल ईमान वाला क़ुर्आन का साफ़ इन्कार कर रहा है।

(10) **तक़्वीयतुल ईमान** सफ़ा 22 में है कि :–

''जिसका नाम मुहम्मद या अली है वह किसी चीज़ का मुख़्तार नहीं'। तअज्जुब है कि वहाबी साहब तो अपने घर की तमाम चीज़ों का इख़्तियार रखें और मालिके हर दोसरा सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम किसी चीज़ के मुख़्तार न हों। इस गिरोह का एक मशहूर अक़ीदा यह है कि अल्लाह तआला झूठ बोल सकता है बल्कि उनके एक सरग़ना ने तो अपने एक फ़तवे में लिख दिया कि:–

'वुक़ूए किज़्ब के माना दुरुस्त हो गये जो यह कहे कि अल्लाह तआला झूठ बोल चुका ऐसे की तज़लील(ज़लील करना)और तफ़सीक़ (फ़ासिक़ कहने) से मामून करने चाहिये।'

सुबहानल्लाह ख़ुदा को झूठा माना फिर भी इस्लाम,सुन्नियत,और सलाह किसी बात में फ़र्क़ न आया। मालूम नहीं इन लोगों ने किस चीज़ को ख़ुदा ठहरा लिया है।

एक अक़ीदा उनका यह है कि नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को 'ख़ातमुन्नबीय्यीन 'व माना आख़िररुल अम्बिया नहीं मानते और यह सरीह कुफ़्रहै।

(11)चुनाँचे तहज़ीरुन्नास सफ़ा न.2 में है कि :– अवाम के ख़्याल में तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाह तआला अलैहि वसल्लम का ख़ातम होना बईं माना है कि अपको ज़माना अम्बियायए साबिक़ के बाद और आप सब में आख़िर नबी हैं मगर अहले फ़हम पर रौशन होगा कि तक़द्दुम या तअख़्ख़ुर बिज़्ज़ात कुछ फ़ज़ीलत नहीं। फिर मक़ामे मदह में यह फ़रमाना

وَلٰكِنْ رَّسُوْلَ اللّٰهِ وَ خَاتَمَ النَّبِيّٖنَ

तर्जमा :– "हाँ अल्लाह के रसूल हैं और सब नबियों में पिछले हैं।"

इस सूरत में क्यों कर सही हो सकता है ? हाँ अगर इस वस्फ़ को औसाफ़े मदह में से न कहे और इस मक़ाम को मक़ामे मदह न क़रार दीजिये तो अलबत्ता ख़ातिमीयत ब एअ्तेबारे तअख़्ख़ुरे ज़माना सहीह हो सकती है।

पहले तो इस क़ाइल ने ख़ातमुन्नबीय्यीन के मअ्नी तमाम अम्बिया से ज़माने के एतिबार से मुतअख़्ख़र होने को अवाम का ख़्याल कहा और यह कहा कि अहले फ़हम पर रौशन है कि इसमें बिज़्ज़ात कुछ फ़ज़ीलत नहीं हालाँकि हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने ख़ातमुन्नबीय्यीन के यही मअ्ना कसरत से हदीसों में इरशाद फ़रमाये तो मआज़ल्लाह इस क़ाइल ने तो हुज़ूर को अवाम में दाख़िल किया और अहले फ़हम से ख़ारिज किया। फिर ख़त्मे ज़मानी को मुतलक़न फ़ज़ीलत से ख़ारिज किया हालाँकि इसी तअख़्ख़ुरे ज़मानी को हुज़ूर ने मक़ामे मदह में ज़िक्र फ़रमाया फिर यह कि **तहज़ीरुन्नास** सफ़ा न. 4 में लिखा कि –

" आप मौसूफ़ ब वस्फ़े नुबुव्वत बिज़्ज़ात हैं और सिवा आप के और नबी मौसूफ़ ब वस्फ़ नुबुव्वत बिल अर्ज़" **तहज़ीरुन्नास** सफ़ा न. 16 पर है कि बल्कि बिलफ़र्ज़ आपके ज़माने में भी कहीं और कोई नबी हो आपका ख़ातम होना बदस्तूर बाक़ी रहता है"।

तहज़ीरुन्नास सफ़ा न. 33 पर है कि –

"बल्कि अगर बिलफ़र्ज़ बाद ज़मानये नबी भी कोई नबी पैदा हो तो भी ख़ातमीयते मुहम्मदी में कुछ फ़र्क़ न आयेगा चे जाये कि आपके मुआसिर (एक वक़्त में रहने वाले)किसी और ज़मीन में था फ़र्ज़ कीजिये उसी ज़मीन में कोई और नबी तजवीज़ किया जाये।"

लुत्फ़ यह कि इस क़ाइल ने उन तमाम खुराफ़ात का ईजादे बन्दा होना खुद तसलीम कर लिया।

तहज़ीरुन्नास सफ़ा न.34 पर है कि –

अगर ब वजहे कम इल्तेफ़ाती बड़ों का फ़हम किसी मज़मून तक न पहुँचा तो उनकी शान में क्या नुक़सान आ गया और किसी किसी तिफ़ले नादान ने कोई ठिकाने की बात कह दी तो क्या इतनी बात से वह अज़ीमुश्शान हो गया?

गाह बाशद कि कोदके नादाँ
ब ग़लत बर हदफ़ ज़नद तीरे

तर्जमा :– "कभी ऐसा होता है कि नादान बच्चा ग़लती से निशाने पर कोई तीर मार देता है।"

"हाँ बादे वुजूहे हक़ (हक़ की वज़ाहत के बाद) अगर फ़क़त इस वजह से कि यह बात मैंने

कही और वह अगले कह गये थे मेरी न मानें और वह पुरानी बात गाये जायें तो क़तए नज़र इसके कि क़ानून महब्बते नबवी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से यह बात बहुत बईद है। वैसे भी अपनी अक़्ल व फ़हम की ख़ूबी पर गवाही देनी है''।

यहीं से ज़ाहिर हो गया कि जो मअ्नी उसने तराशे सलफ़ में कहीं उसका पता नहीं और नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के ज़माने से आज तक जो सब समझे हुए थे उसको अवाम का ख़्याल बता कर रद कर दिया कि इसमें कुछ फ़ज़ीलत नहीं। इस कहने वाले पर उलमाये हरमैन तय्यबैन ने जो फ़तवे दिये वह 'हुसामुल हरमैन' के देखने से ज़ाहिर हैं। और उसने खुद भी उसी किताब में सफ़ा 46 में अपना इस्लाम बराये नाम तसलीम किया।

मुद्दई लाख पे भारी है गवाही तेरी' इन नाम के मुसलमानों से अल्लाह बचाये।

12. **'तहज़ीरुन्नास'** सफ़ा न. 5 पर है कि :–

''अम्बिया अपनी उम्मत से मुमताज़ होते हैं तो उलूम ही में मुमताज़ होते हैं बाक़ी रहा अमल उसमें बसा औक़ात बज़ाहिर उम्मती मसावी (बराबर)हो जाते हैं बल्कि बढ़ जाते हैं''।

13. और सुनिये इन क़ाइल साहब ने हुज़ूर की नुबुव्वत को क़दीम और दूसरे नबियों की नुबुव्वत को हादिस बताया जैसा कि सफ़ा न.7 पर है।

''क्यूँकि फ़रक़े क़िदमे नुबुव्वत और हुदूसे नुबुव्वत बावुजूद इत्तेहादे नौई ख़ूब जब ही चसपाँ हो सकता है''।

क्या ज़ात व सिफ़ाते बारी के सिवा मुसलमानों के नज़दीक कोई और चीज़ भी क़दीम है। नुबुव्वत सिफ़त है और बिना मौसूफ़ के सिफ़त का पाया जाना मुहाल है। जब हुज़ूर अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम भी ज़रूर हादिस न हुए बल्कि अज़ली ठहरे और जो अल्लाह और अल्लाह की सिफ़तों के सिवा को क़दीम माने, ब इजमाये मुसलिमीन काफ़िर है।

14. इस गिरोह का आम तरीक़ा यह है कि जिस चीज़ में अल्लाह के महबूबों की फ़ज़ीलत ज़ाहिर हो तो उसे तरह तरह की झूटी तावीलों से बातिल करना चाहेंगे हर वह बात साबित करना चाहेंगे जिस में तनक़ीस और खोट हो जैसे :–

बराहीने क़ातेआ सफ़ा न. 51 में है कि –

''नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को दीवार के पीछे का भी इल्म नहीं''।

और इसको शैख़ मुहद्दिस अब्दुल हक़ देहलवी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि की तरफ़ ग़लत मनसूब कर दिया। बल्कि उसी सफ़े पर नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के वुसअते इल्म की बाबत यहाँ तक लिख दिया कि –

अल हासिल ग़ौर करना चाहिए कि शैतान कि व मलकुल मौत का हाल देख कर इल्मे मुहीते ज़मीन का फ़ख़रे आलम को ख़िलाफ़े नुसूसे क़तईया के बिला दलील महज़ क़ियासे फ़ासिदा से साबित करना शिर्क नहीं तो कौन सा हिस्सा ईमान का है। शैतान व मलकुल मौत को यह वुसअत नस से साबित हुई फ़ख़रे आलम की वुसअते इल्म की कौन सी नस्से क़तई है जिस से तमाम नुसूस को रद कर के एक शिर्क साबित करता है शिर्क नहीं तो कौनसा हिस्सा ईमान का है''।

हर मुसलमान अपने ईमान की आँखों से देखें कि इस काइल ने इबलीसे लईन के इल्म को

नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के इल्म से ज़्यादा बताया या नहीं ?और शैतान को खुदा का शरीक माना या नहीं?हर ईमान वाला यही कहेगा कि ज़रूर बताया और ज़रूर माना। फिर इस शिर्क को नस से साबित किया। यहाँ तीनों बातें सरीह कुफ्र और इनका कहने वाला यकीनी तौर पर काफ़िर है। कौन मुसलमन उसके काफ़िर होने में शक करेगा ?

15. **हिफ्ज़ुल ईमान** सफ़ा न.7 में है हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के इल्म के बारे में यह तक़रीर की कि:-

"आप की ज़ाते मुक़द्दसा पर इल्मे गैब का हुक्म किया जाना अगर ब क़ौले ज़ैद सही हो तो दरयाफ़्त तलब यह अम्र है कि इस गैब से मुराद बाज़ (कुछ)गैब हैं या कुल गैब?अगर बाज़ उलूमे गैबिया मुराद हैं तो इसमें हुज़ूर की क्या तख़सीस(खुसूसियत)है?ऐसा इल्मे गैब तो ज़ैद व अम्र बल्कि हर सबी (बच्चे)व मजनून(पागल)बल्कि जमीअ्(तमाम)हैवानात व बहाइम (चौपाया) के लिये भी हासिल है।"

मुसलमानों! गौर करो कि इस शख़्स ने नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की शान में कैसी खुली हुई गुस्ताख़ी की कि हुज़ूर जैसा इल्म ज़ैद व अम्र तो दर किनार हर बच्चे और पागल बल्कि तमाम जानवरों और चौपायों के लिए हासिल होना कहा।क्या कोई भी ईमान वाला दिल ऐसे के काफ़िर होने में शक कर सकता है? हरगिज़ नहीं।

इस कौम का यह आम तरीक़ा है कि जिस चीज़ को अल्लाह और रसूल ने मना नहीं किया बल्कि कुर्आन और हदीस से उसका जाइज़ होना साबित है उसको नाजाइज़ कहना तो दर किनार उस पर शिर्क और बिदअत का हुक्म लगा देते हैं जैसे मीलाद शरीफ़ की मजलिस,क़ियाम, ईसाले सवाब,क़ब्रों की ज़ियारत,बारगाहे बेकस पनाह सरकारे मदीना तय्यबा व औलिया की रूहों से इस्तिमदाद (मदद चाहना)और मुसीबत के वक़्त नबियों और वलियों को पुकारना वगैरा बल्कि मीलाद शरीफ़ के बारे में तो ऐसा नापाक लफ़्ज़ लिखा है कि ऐसे नापाक अलफ़ाज़ रसूल के दुश्मन के अलावा कोई मोमिन नहीं लिख सकता। वह अलफ़ाज़ यह हैं।

16. **बराहीने क़ातिआ** सफ़ा न.148 में हैं।

"पस यह हर रोज़ इआदा (दोहराना)विलादत का तो मिस्ल हुनूद (हिन्दूओं) के कि स्वांग कन्हय्या की विलादत का हर साल कहते हैं या मिस्ल रवाफ़िज़ के कि नक़्ल शहादते अहले बैत हर साल मनाते हैं। मआज़ल्लाह स्वांग आपकी विलादत का ठहरा और खुद हरकते क़बीहा क़ाबिले लौम व हराम व फ़िस्क़ है। बल्कि यह लोग उस क़ौम से बढ़ कर हुए। वह तो तारीख़ मुअय्यन पर करते है। इनके यहाँ कोई क़ैद ही नहीं। जब चाहें यह खुराफ़ातें फ़र्ज़ी बनाते हैं।"

वहाबियों की और भी बहुत गन्दी गन्दी इबारते हैं जो दूसरी किताबों में देखी जा सकती हैं।

4.गैर मुक़ल्लिदीन

यह भी वहाबियत की एक शाख़ है। वह चन्द बातें जो हाल में वहाबियों ने अल्लाह तआला और नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की शान में गुस्ताख़ी के तौर पर बकी हैं वह गैर मुक़ल्लिदीन से साबित नहीं। बाकी दूसरे तमाम अक़ीदों में दोनों शरीक हैं। और हाल के देवबन्दियों की इबारतों को देख भाल और जान बूझ कर उन्हें काफ़िर तसलीम नहीं करते और शरीअत का हुक्म है कि जो अल्लाह और रसूल की शान में गुस्ताख़ी करने वालों के काफ़िर होने में शक करे

वह भी काफ़िर है।

ग़ैर मुक़ल्लिदों का एक बुरा अक़ीदा यह है कि वह चारों मज़हबों (1)हनफ़ी(2)शफ़िई(3)मालिकी (4)हम्बली से अलग और तमाम मुसलमानों से अलग थलग एक रास्ता निकाल कर तक़लीद को हराम और बिदअ़त कहते हैं और दीन के इमामों जैसे इमामे आज़म अबू हनीफ़ा इमामे शाफ़िई,इमामे मालिक और इमामे अहमद इब्ने हम्बल को बुरा भला कहते हैं। यह लोग इमामों की तक़लीद (पैरवी) नहीं करते बल्कि शैतान की करते हैं। ग़ैर मुक़ल्लिदीन 'तक़लीद'और 'क़ियास'का इन्कार करते हैं। जब कि मुतलक़ तक़लीद और क़ियास का इन्कार कुफ़्र है। इसलिये ग़ैर मुक़ल्लिदीन का मज़हब बातिल है।

नोट :– फ़रअ़ में अस्ल की तरह हुक्म को साबित करने को क़ियास कहते हैं। क़ियास कुर्आन और हदीस से साबित है।

ज़रूरी तम्बीह

वहाबियों के यहाँ बिदअ़त का बहुत चर्चा है। जिस चीज़ को देखिये बिदअ़त है। इसलिये मुनासिब यह है कि बता दिया जाये कि बिदअ़त किसे कहते हैं।

बिदअ़ते मज़मूमा व क़बीहा यानी ख़राब बिदअ़त वह है जो किसी सुन्नत के मुख़ालिफ़ हो और सुन्नत से टकराती हो और यह मकरूह या हराम है। और मुतलक़ बिदअ़त तो मुस्तहब बल्कि सुन्नत और वाजिब तक होती है। हज़रते अमीरुल मोमिनीन उमर फ़ारूक़ रदियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु तरावीह़ के बारे में نِعْمَتِ الْبِدْعَةُ هٰذِهٖ (**तर्जमा** :– यह अच्छी बिदअ़त है।)फ़रमाते है कि

हालाँकि तरावीह सुन्नते मुअक्कदा है। जिस चीज़ की अस्ल शरीअ़त से साबित हो वह हरगिज़ बुरी बिदअ़त नहीं हो सकती। नहीं तो ख़ुद वहाबियों के मदरसे और इस मौजूदा ख़ास सूरत में उनके वाज़ के जलसे ज़रूर बिदअ़त होंगे। फ़िर यह वहाबी इन बिदअ़तों को क्यूँ नहीं छोड़ देते । मगर उनके यहाँ तो यह ठहरी है कि अल्लाह के महबूबों की अ़ज़मत की जितनी चीज़ें हैं सब बिदअ़त और जिसमें उनका मतलब हो वह हलाल और सुन्नत।

وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ

तर्जमा :– और नहीं है कोई ताक़त और कुव्वत मगर अल्लाह की तरफ़ से। मुख़्तसर यूँ समझिए कि बिदअ़त दो तरह की हुई एक अच्छी और दूसरी बुरी। बुरी बिदअ़त तो बहरहाल बुरी है और अगर कोई अच्छी नई बात यानी अच्छी नई बिदअ़त निकाली जाए' तो वह हर्गिज़ बुरी नहीं। बहुत साफ़ मिसाल इसकी यह है कि कुर्आन पाक हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के दौर में कागज़ पर यूँ लिखा न था तो क्या कुर्आन का कागज़ पर लिखना बिदअ़त या नया काम कह के हराम क़रार दिया जाएगा हर्गिज़ नहीं। इसी तरह बहुत से नए जाएज़ काम ऐसे हैं जिन्हें हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने नहीं किया मगर बुज़ुर्गों ने उन्हें अच्छा जान कर शुरू किया। लिहाज़ा वह अच्छे काम बिदअ़त नहीं हैं बल्कि अच्छे हैं। यूँ भी शरीअ़त ने जिस काम का न तो हुक्म दिया न उसे मना किया उसे मुबाह कहते हैं और मुबाह के करने पर न गुनाह है न सवाब। हाँ अगर नियत अच्छी है तो सवाब और नियत अच्छी नहीं तो गुनाह होगा। लिहाज़ा हर नया काम बुरी बिदअ़त न हुई।

इमामत का बयान

इमामत की दो किस्मे है।

1. **इमामते सुग़रा** :– नमाज़ की इमामत का नाम इमामते सुग़रा है।

2. **इमामते कुबरा** :– नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की नियाबत यानी क़ाइम मक़ाम काम करने को इमामते कुबरा कहते हैं।

इस तरह कि इमामों से मुसलमानों की तमाम दीनी और दुनियावी ज़रूरतें वाबस्ता हैं। इमाम जो भी अच्छे कामों का हुक्म दें उनकी पैरवी तमाम दुनिया के मुसलमानों पर फ़र्ज़ है। इमाम के लिए आज़ाद आक़िल,बालिग़ क़ादिर और क़रशी होना शर्त है।

राफ़िज़ी लोगों का मज़हब यह है कि इमाम के लिये हाशिमी,अलवी और मासूम होना शर्त है। इससे उनका मक़सद यह है कि तीनों ख़लीफ़ा जो हक़ पर हैं उनको ख़िलाफ़त से अलग करना चाहते हैं। जब कि तमाम सहाबए किराम और हज़रते अली रदियल्लाहु तआला अन्हुम और हज़रते इमाम हसन और हज़रते इमाम हुसैन रदियल्लहु तआला अन्हुमा ने पहला ख़लीफ़ा हज़रते अबूबक दूसरे ख़लीफ़ा हज़रते उमर तीसरे ख़लीफ़ा हज़रते उसमाने ग़नी रदियल्लाहु तआला अन्हुम को माना है।

राफ़िज़ी मज़हब में इमाम की शर्तों में से एक शर्त जो अलवी होने की बढ़ाई गई है उससे हज़रते अली भी इमाम नहीं हो सकते क्यूँकि अलवी उसे कहेंगे जो हज़रते अली की औलाद में से हो। राफ़िज़ी मज़हब में इमाम की शर्तों में एक शर्त इमाम का मासूम होना भी है जबकि मासूम होना अम्बिया और फ़रिश्तों के लिए ख़ास है।

मसअ्ला :– इमाम होने के लिए यही काफ़ी नहीं कि ख़ाली इमामत का मुस्तहक़ हो बल्कि उसे दीनी इन्तिज़ाम कार लोगों ने या पिछले इमाम ने मुक़र्रर किया हो।

मसअ्ला :– इमाम की पैरवी हर मुसलमान पर फ़र्ज़ है जबकि उसका हुक्म शरीअत के ख़िलाफ़ न हो। बल्कि शरीअत के ख़िलाफ़ किसी का भी हुक्म नहीं माना जा सकता।

मसअ्ला :– इमाम ऐसा शख़्स मुक़र्रर किया जाए जो आलिम हो या आलिमों की मदद से काम करे और बहादुर हो ताकि हक़ बात कहने में उसे कोई ख़ौफ़ न हो।

मसअ्ला :– इमामत औरत और नाबालिग़ की जाइज़ नहीं। अगर पहले इमाम ने नाबालिग़ को इमाम मुक़र्रर कर दिया हो तो उसके बालिग़ होने के लिए लोग एक वली मुक़र्रर करें कि वह शरीअत के अहकाम जारी करे और यह नाबालिग़ इमाम सिर्फ़ रस्मी होगा और हक़ीक़त में वह उस वक़्त तक इमाम का वाली है।

अक़ीदा : – हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के बाद ख़लीफ़ा बरहक़ और इमामे मुतलक़ हज़रते अबूबक सिद्दीक़ फ़िर हज़रते उमर फ़ारूक़ फ़िर हज़रते उसमाने ग़नी फ़िर हज़रते अली 6 महीने के लिये हज़रते इमाम हसन रदियल्लाहु तआला अन्हुम ख़लीफ़ा हुए। इन बुज़ूर्गों को ख़ुलफ़ाये राशिदीन और उनकी ख़िलाफ़त को ख़िलाफ़ते राशिदा कहते हैं। इन नाइबों ने हुज़ूर की सच्ची नियाबत का पूरा पूरा हक़ अदा फ़रमाया है।

अक़ीदा :– नबियों और रसूलों के बाद हज़रते अबूबक इन्सान,जिन्नात,फ़रिश्ते और अल्लाह तआला

की हर मख़लूक़ से अफ़ज़ल हैं फिर हज़रते उमर फिर हज़रते उसमान ग़नी और फिर हज़रते अली रदियल्लाहु तआला अन्हुम जो आदमी मौला अली मुशकिल कुशा रदियल्लाहु तआला अन्हु को पहले या दूसरे ख़लीफ़ा से अफ़ज़ल बताये वह गुमराह और बद मज़हब है।

अक़ीदा :– अफ़ज़ल का मतलब यह है कि अल्लाह तआला के यहाँ ज़्यादा इज़्ज़त वाला हो। इसी को कसरते से सवाब भी ताबीर करते हैं न कि कसरते अज्र कि बारहा मफ़ज़ूल के लिए होती है। सय्यदना हज़रते इमाम महदी के साथियों के लिए हदीस शरीफ़ में यह आया है कि उनके एक के लिये पचास का अज्र है। सहाबा ने हुज़ूर से पूछा उन में के पचास का या हम में के। फ़रमाया बल्कि तुममें के। तो अज्र उनका ज़ाइद हुआ मगर अफ़ज़लीयत में वह सहाबा के हमसर भी नहीं हो सकते ज़्यादा होना तो दर किनार। कहाँ इमाम महदी की रिफ़ाक़त कहाँ हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की सहाबियत उसकी मिसाल बिना तश्बीह यूँ समझिये कि सुलतान ने किसी मुहिम पर वज़ीर और कुछ दूसरे अफ़सरों को भेजा उसकी फ़तह पर हर अफ़सर को लाख लाख रुपये इनाम के दिये और वज़ीर को ख़ाली उसके मिज़ाज की ख़ुशी के लिए एक पर्वाना दिया तो इनाम दूसरे अफ़सरों को ज़्यादा मिला लेकिन इस इनाम को उस परवाने से कोई निसबत नहीं।

अक़ीदा :– उनकी ख़िलाफ़त बर तरतीबे फ़ज़ीलत है यानी जो अल्लाह के नज़दीक अफ़ज़ल, आला, और अकरम था वही पहले ख़िलाफ़त पाता गया न कि अफ़ज़लीयत बर तरतीबे ख़िलाफ़त यानी अफ़ज़ल यह कि मुल्कदारी व मुल्क गीरी में ज़्यादा सलीक़ा। जैसा कि आजकल सुन्नी बनने वाले तफ़ज़ीलिये कहते हैं। अगर यूँ होता तो हज़रते फ़ारूक़ आज़म रदियल्लाहु तआला अन्हु सबसे अफ़ज़ल होते क्यूँकि उनकी ख़िलाफ़त को यह कहा गया है कि।

لَمْ اَرَ عَبْقَرِيًّا يَّفْرِىْ كَفَرِيِّهٖ حَتّٰى ضَرَبَ النَّاسُ بِعَطَنٍ

तर्जमा :– "मैंने किसी मर्दे क़वी को उनकी तरह अमल करते हुए नहीं देखा यहाँ तक कि लोग सैराब हो गये और पानी से क़रीब ऊँट बैठाने की जगह बनाई"।

और हज़रते सिद्दीक़े अकबर रदियल्लाहु तआला अन्हु की ख़िलाफ़त को इस तरह फ़रमाया गया कि।

فِىْ نَزْعِهٖ ضَعْفٌ وَّاللّٰهُ يَغْفِرُ لَهٗ

तर्जमा :– " उनके पानी निकालने में कमज़ोरी रही अल्लाह तआला उनको बख़्शे" ।

यह हदीस इस तरह है कि हज़रते अबू हुरैरा रदियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि मैंने हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से सुना कि उन्होंने फ़रमाया कि मैंने ख़्वाब में कुएँ पर एक डोल रखा देखा तो मैंने उससे जितना अल्लाह तआला ने चाहा पानी निकाला फिर हज़रते अबूबक सिद्दीक़ रदियल्लाहु तआला अन्हु ने वह डोल लिया। उन्होंने एक या दो भरे डोल निकाले। उनके निकालने में कमज़ोरी रही।

अक़ीदा :– चारों ख़ुलफ़ाए राशिदीन के बाद बक़ीया अशरह मुबश्शेरह और हज़राते हसनैन और असहाबे बद्र और असहाबे बैअतुर्रिज़वान के लिए अफ़ज़लियत है। और यह सब क़तई जन्नती हैं। और तमाम सहाबए किराम रदियल्लाहु तआला अन्हुम अहले ख़ैर और आदिल हैं। उनका भलाई के साथ ही ज़िक्र होना फ़र्ज़ है।

अक़ीदा :– किसी सहाबी के साथ बुरा अक़ीदा रखना बदमज़हबी और गुमराही है। अगर कोई बुरी अक़ीदत रखे तो वह जहन्नम का मुस्ताहक़ है। क्यूँकि इनसे बुरी अक़ीदत रखना नबी अलैस्सिलाम के साथ बुग़्ज़ है। ऐसा आदमी राफ़िज़ी है अगरचे चारों खुलफ़ा को माने और अपने आपको सुन्नी कहे।

हज़रते अमीर मुआविया,उनके वालिदे माजिद हज़रते अबू सुफ़यान,उनकी वालिदा हज़रते हिन्दा हज़रते सय्यदना अम्र इब्ने आस व हज़रते मुग़ीरा इब्ने शोअ्बा हज़रते अबू मूस। अशअरी यहाँ तक कि हज़रते वहशी रदियल्लाहु तआला अन्हुम में से किसी की शान में गुस्ताख़ी तबर्रा है। हज़रते वहशी वह हैं जिन्होंने इस्लाम से पहले सय्यदुश्शुहदा हज़रते हमज़ा रदियल्लाहु तआला अन्हु को शहीद किया और इस्लाम लाने के बाद बहुत बड़े ख़बीस मुसैलमा कज़्ज़ाब को जहन्नम के घाट उतारा वह खुद कहा करते थे मैंने बहुत अच्छे इन्सान को और बहुत बुरे इन्सान को क़त्ल किया। और सहाबियों की शान में बेअदबी और गुस्ताख़ी करने वाला 'राफ़िज़ी'है।

अब रही बात हज़रते अबूबक्र और हज़रते उमर रदियल्लाहु तआला अन्हुमा की तौहीन तो यह उनकी ख़िलाफ़त से ही इन्कार है और फ़ुक़हा के नज़दीक इनकी तौहीन या इनकी ख़िलाफ़त से इन्कार कुफ़्र है।

अक़ीदा :– सहाबी का मर्तबा यह है कि कोई वली किसी मर्तबे का हो किसी सहाबी के रुतबे को नहीं पहुँच सकता।

मसअ्ला :– सहाबए किराम रदियल्लाहु तआला अन्हुम के आपसी जो वाक़िआत हुये उनमें पड़ना हराम और सख़्त हराम है। मुसलमानों को तो यह देखना चाहिए कि वह सब आक़ाये दो जहाँ सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम पर जान निसार करने वाले और सच्चे गुलाम हैं।

अक़ीदा :– तमाम सहाबए किराम आला और अदना (और उनमें अदना कोई नहीं) क़ुर्आन के इरशाद के मुताबिक़ सब जन्नती हैं। वह जहन्नम की भनक न सुनेंगे और हमेशा अपनी मनमानी मुरादों में रहेंगे। महशर की वह बड़ी घबराहट उन्हें ग़मग़ीन न करेगी। फ़रिश्ते उनका इस्तिक़बाल करेंगे कि यह है वह दिन जिसका तुम से वादा था।

अक़ीदा :– सहाबा नबी न थे। फ़रिश्ते न थे किं मासूम हों। उनमें कुछ के लिए लग़ज़िशें हुई मगर उनकी किसी बात पर गिरफ़्त करना अल्लाह और रसूल के ख़िलाफ़ है। अल्लाह तआला ने जहाँ सूरए हदीद में सहाबा की दो क़िस्में की हैं। यानी फ़तहे मक्का से पहले के मोमिन और फ़तहे मक्का के बाद के मोमिन और उनको उन पर फ़ज़ीलत दी और फ़रमा दिया कि –

كُلًّا وَّعَدَ اللّٰهُ الْحُسْنٰى

तर्जमा :– "सब से अल्लाह ने भलाई का वादा फ़रमा लिया।"और साथ ही यह भी फ़रमाया कि–

وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ

तर्जमा :– "और अल्लाह खूब जानता है जो कुछ तुम काम करोगे।"

तो जब उसने उनके तमाम आमाल जानकर हुक्म फ़रमा दिया कि उन सब से हम जन्नत का बे अज़ाब व करामत और सवाब का वादा कर चुके तो दूसरे को क्या हक़ रहा कि उनकी किसी बात पर तअ्न करे। क्या तअ्न करने वाला अल्लाह से अलग कोई मुस्तकिल हुकूमत क़ाइम करना चाहता है ?

अक़ीदा :– हज़रते अमीर मुआविया रदियल्लाहु तआला अन्हु मुजतहिद थे उनके मुजतहिद होने के

बारे में हज़रते अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्बास रदिल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा ने सही़ह़ बुख़ारी में बयान फ़रमाया है मुजतहिद से सवाब और ख़ता दोनों सादिर होती हैं।

इस बारे में ख़ता की दो क़िस्में है। ख़ताए 'इनादी' यह मुजतहिद की शान नहीं। ख़ताए 'इजतेहादी' यह मुजतहिद से होती है और उसमें उस पर अल्लाह के नज़दीक हरगिज़ कोई पकड़ नहीं। मगर अहकामे दुनिया में ख़ता की दो क़िस्में हैं। ख़ताए 'मुक़र्रर उसके करने वाले पर इन्कार न होगा यह वह ख़ताए इजतेहादी है जिससे दीन में कोई फ़ितना न होता हो। जैसे हमारे नज़दीक मुक़तदी का इमाम के पीछे सूरए फ़ातिहा पढ़ना।

दूसरी ख़ताए 'मुन्कर' यह वह ख़ताए इजतेहादी है जिसके करने वाले पर इन्कार किया जायेगा कि उसकी ख़ता फ़ितने का सबब है। हज़रते अ़मीर मुआविया का ह़ज़रते अ़ली से इख़्तेलाफ़ इसी क़िस्म की ख़ता का था। और हुज़ूर अ़लैहिस्सलाम ने जो ख़ुद फ़ैसला फ़रमाया है कि मौला अ़ली की डिगरी और अमीरे मुआविया की मग़फ़िरत।

मसअ्ला :– कुछ जाहिल यह कहते हैं कि जब ह़ज़रते अ़ली के साथ ह़ज़रते अमीरे मुआ़विया का नाम लिया जाये तो 'रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हु न कहा जाये। इसकी कोई अस्ल नहीं और ऐसा अक़ीदा बिल्कुल बाति़ल और नई शरीअ़त गढ़ना है। उ़लमाए किराम ने स़हा़बा के नामों के साथ रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हु कहने का हुक्म दिया है ।

अ़क़ीदा :– नुबुव्वत के त़रीके पर तीस साल तक ख़िलाफ़त रही और ह़ज़रते इमामे मुजतबा रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हु को 6 महीने की ख़िलाफ़त पर ख़त्म हो गई। फ़िर अमीरुल मोमिनीन उमर इब्ने अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की ख़िलाफ़ते राशिदा हुई और आख़िर ज़माने में ह़ज़रते इमाम महदी रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ख़लीफ़ा होंगे। और ह़ज़रते अमीरे मुआ़विया रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हु इस्लामी तारीख़ के सब से पहले सुलत़ान हैं। तौराते मुक़द्दस का इशारा है कि

مَوْلِدُهٗ بِمَكَّةَ وَمُهَاجَرُهٗ طَيْبَةَ وَ مُلْكُهٗ بِالشَّامِ

तर्जमा :– "हुज़ूर अ़लैहिस्सलाम मक्के में पैदा होंगे मदीने को हिज़रत करेगे और उनकी सलत़नत शाम में होगी।"

ह़ज़रते अमीरे मुआ़विया की बादशाही अगर्चे सलत़नत है मगर किस की ह़क़ीक़त में ह़ज़रते मुह़म्मद मुस्तफ़ा स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की स़लत़नत़ है क्यूँकि ह़ज़रते इमामे ह़सन मुजतबा रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हु एक बार जंग के मैदान में थे और उनपर जान फ़िदा करने वाला बहुत बड़ा लशकर या इस के बावुजूद ह़ज़रते इमामे ह़सन रदि़यल्लहु तआ़ला अ़न्हु ने जान बूझ कर हथियार रख दिये और ह़ज़रते अमीर मुआ़विया के हाथों पर 'बैअ़त'फ़रमा ली। हुज़ूर अ़लैहिस्सलाम ने इस सुलह़ की बशारत दी है और खुशी में इमामे ह़सन के बारे में यह फ़रमाया है कि :–

اِنَّ ابْنِىْ هٰذَا سَيِّدٌ لَعَلَّ اللّٰهَ اَنْ يُّصْلِحَ بِهٖ بَيْنَ فِئَتَيْنِ عَظِيْمَتَيْنِ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ

तर्जमा :– मेरा यह बेटा सय्यद है। मैं उम्मीद करता हूँ कि अल्लाह तआ़ला इसकी वजह से इस्लाम के दो बड़े गि़रोहों में सुलह़ करा दे" ।

इसके बाद भी अगर कोई ह़ज़रते अमीरे मुआ़विया पर फ़ासिक़ फ़ाजि़र होने का इलज़ाम लगाये तो उसका इल्ज़ाम लगाना और तअ़्ना कसना ह़ज़रते इमामे ह़सन,हुज़ूर अ़लैहिस्सलाम बल्कि

अल्लाह तआला पर होगा।

अक़ीदा :– हज़रते आइशा सिद्दीक़ा रदियल्लाहु तआला अन्हा क़तई जन्नती हैं और आख़िरत में भी यक़ीनी तौर पर महबूबे खुदा की महबूब दुल्हन हैं जो उन्हें तकलीफ़ दे वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को ईज़ा देता है और हज़रते तल्हा और हज़रते ज़ुबैर रदियल्लाहु तआला अन्हुमा तो अशरा मुबश्शिरा में से हैं। इन साहिबों से हज़रते अली रदियल्लाहु तआला अन्हु के मुक़ाबले की वजह से ख़ताए इजतेहादी वाक़ेअ् हुई मगर यह लोग आख़िर कार उनकी मुख़ालफ़त और मुक़ाबले से बाज़ आगये थे और रुजू कर लिया था। शरीअत में मुतलक़ बग़ावत तो इमामे बरहक़ से मुक़ाबले को कहते हैं। यह मुक़ाबला चाहे 'इनादी'हो या 'इजतेहादी'लेकिन इन हज़रात के रुजू कर लेने यानी बग़ावत से फिर जाने की वजह से उन्हें बाग़ी नहीं कहा जा सकता वह बेशक जन्नती हैं।

हज़रते अमीरे मुआविया रदियल्लाहु तआला अन्हु के गिरोह को शरीअत के एतिबार से बाग़ी लश्कर कहा जाता था मगर अब जबकि बाग़ी का मतलब मुफ़सिद और सरकश हो गया है और यह अल्फ़ाज़ गाली समझा जाने लगा है इसलिये अब किसी सहाबी के लिये बाग़ी का अल्फ़ाज़ इस्तेमाल किया जाना जाइज़ नहीं।

अक़ीदा :– उम्मुल मोमिनीन आइशा सिद्दीक़ा रदियल्लाहु तआला अन्हा रब्बुल आलमीन के महबूब की महबूबा हैं। उन पर इफ़्क़ से अपनी ज़बान गन्दी करने वाला यक़ीनी तौर पर काफ़िर मुरतद है। और इसके सिवा और तअ्न करने वाला राफ़िज़ी तबर्राई,बद्दीन और जहन्नमी है।

अक़ीदा :– हज़रते इमामे हसनैन रदियल्लाहु तआला अन्हुमा यक़ीनी तौर पर ऊँचे दर्जे के शहीदों में से हैं। उनमें से किसी की शहादत का इन्कार करने वाला गुमराह और बद्दीन है।

अक़ीदा :– यज़ीद पलीद फ़ासिक़ फ़ाज़िर और गुनाहे कबीरा का मुर्तकिब था। आजकल कुछ गुमराह लोग यह कह देते हैं कि हमारा उनके मामले में क्या दख़ल। हमारे वह भी शहज़ादे और इमामे हुसैन भी शहज़ादे। भला इमामे हुसैन से यज़ीद की क्या निस्बत। ऐसी बकवास करने वाला मरदूद है,ख़ारिजी है और जहन्नम का मुस्तहिक़ है। हाँ यज़ीद को काफ़िर कहने और उस पर लानत करने के बारे में उलमाए अहले सुन्नत के तीन क़ौल हैं। और हमारे इमामे आज़म अबू हनीफ़ा रदियल्लाहु तआला अन्हु का मसलक ख़ामोशी है यानी हम यज़ीद को फ़ासिक़ फ़ाजिर कहने के सिवा न काफ़िर कहें न मुसलमान।

अक़ीदा :– अहले बैते किराम रदियल्लाहु तआला अन्हुम अहले सुन्नत के पेशवा हैं जो उनसे महब्बत न रखे मरदूद,मलऊन और ख़ारिजी है।

अक़ीदा :– उम्मुल मोमिनीन ख़दीजतुल कुबरा,उम्मुल मोमिनीन आइशा सिद्दीक़ा और हज़रत सय्यदा फ़ातिमा ज़हरा रदियल्लाहु तआला अन्हा क़तई जन्नती हैं। उन्हें और तमाम लड़कियों और पाक बीवियों (रदियल्लहु तआला अन्हुन्ना) को तमाम सहाबियात पर फ़ज़ीलत है। यहाँ तक कि उनकी पाकी की गवाही क़ुर्आन ने दी है। ☆☆☆☆☆

विलायत का बयान

विलायत अल्लाह तबारक व तआ़ला से बन्दे के एक ख़ास़ कुर्ब का नाम है। जो अल्लाह तआ़ला अपने बर्गुज़ीदा बन्दों को अपने फ़ज़्ल और करम से अ़ता करता है। इस सिलसिले में कुछ मसअ्ले बताये जाते हैं।

मसअ्ला :– विलायत ऐसी चीज़ नहीं कि आदमी बहुत ज़्यादा मेह़नत करके खुद ह़ासिल कर ले बल्कि विलायत मौला की देन है। अलबत्ता आमाले ह़सना यानी अच्छे अ़मल अल्लाह तआ़ला की इस देन के ज़रिये होते हैं। और कुछ लोगों को विलायत पहले ही मिल जाती है।

मसअ्ला :– विलायत बे–इल्म को नहीं मिलती। इल्म दो त़रह के होते हैं। एक वह जो ज़ाहिरी तौर पर ह़ासिल किया जाये। दूसरे वह उ़लूम जो विलायत के मरतबे पर पहुँचने से पहले ही अल्लाह तआ़ला उस पर उ़लूम के दरवाज़े खोल दे।

अ़क़ीदा :– तमाम अगले पिछले वलियों में से हुजूर अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम की उम्मत के औलिया सारे वलियों से अफ़ज़ल हैं। और सरकार की उम्मत के सारे वलियों में अल्लाह की मा़रिफ़त और उससे कुरबत चारों खुलफ़ा की सब से ज़्यादा है। और उनमें अफ़ज़लीयत की वही तरतीब है जिस तरतीब से वे ख़लीफ़ा हैं यानी सब से ज़्यादा कुरबत ह़ज़रते अबूबक्र रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हु को फ़िर ह़ज़रते फ़ारुके आज़म रदियल्लाहु तआ़ला अन्हु को फिर ह़ज़रते उ़समान ग़नी रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हु को और फ़िर मौला अ़ली मुशकिल कुशा रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हु को है। ह़ज़रते अ़ली की विलायत के कमालात मुसल्लम हैं इसीलिए उनके बा़द सारे वलियों ने उन्हीं के घर से नेमत पाई। उन्हीं के मुह़ताज थे,हैं और रहेंगे।

अ़क़ीदा :– त़रीक़त शरीअ़त के मनाफ़ी नहीं है बल्कि त़रीक़त शरीअ़त का बाति़नी ह़िस्सा है। कुछ जाहिल और बने हुए सूफ़ी, जो यह कह दिया करते हैं कि त़रीक़त और है शरीअ़त और है यह मह़ज़ गुमराही है और इस बाति़ल ख़्याल की वजह से अपने आप को शरीअ़त से ज़्यादा समझना खुला हुआ कुफ़्र और इलह़ाद है।

मसअ्ला :– कोई कितना ही बड़ा वली क्यों न हो जाये शरीअ़त के अह़काम की पाबन्दी से छुटकारा नहीं पा सकता। कुछ जाहिल जो यह कहते हैं कि 'शरीअ़त रास्ता है ,और रास्ते की ज़रूरत उनको है जो मक़सद तक न पहुँचे हों हम तो पहुँच गये। ह़ज़रते जुनैद बग़दादी रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ऐसे लोगों के बारे में यह फ़रमाते हैं कि

صَدَقُوْا لَقَدْ وَصَلُوْا وَلٰكِنْ اِلٰى اَيْنَ اِلَى النَّارِ

तर्जमा :– "वह सच कहते हैं बेशक पहुँचे मगर कहाँ ?जहन्नम को" अलबत्ता अगर मजज़ूबियत की वजह से अ़क्ल ज़ाइल हो गई हो जैसे बेहोशी वाला तो उससे शरीअ़त का क़लम उठ जायेगा। मगर यह भी समझ लीजिए कि जो इस क़िस्म का होगा उसकी ऐसी बातें कभी न होंगी और कभी शरीअ़त का मुक़ाबला न करेगा।

मसअ्ल :– औलियाए किराम को बहुत बड़ी ताक़त दी गई है। उनमें जो असह़ाबे ख़िदमत हैं उनको तसर्रुफ़ का इख़्तियार दिया जाता है। और स्याह सफ़ेद के मुख़्तार बना दिये जाते हैं। औलिया–ए–

किराम नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के सच्चे नाइब हैं उनको इख़्तियारत और तसर्रुफ़ात हुज़ूर की नियाबत में मिलते हैं। ग़ैब के इल्म उन पर खोल दिये जाते हैं। उनमें से बहुतों को 'माकान व मायकुन' और लौहे महफ़ूज़'की ख़बर दी जाती है। मगर यह सब हुज़ूर अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के वास्ते और देन से है। बग़ैर रसूल के वास्ते किसी ग़ैरे नबी को किसी ग़ैब की कोई ख़बर नहीं हो सकती।

अक़ीदा :– औलियाए किराम की करामतें हक़ हैं। इस हक़ीक़त का इन्कार करने वाला गुमराह है।

मसअला :– मुर्दा ज़िन्दा करना,पैदाइशी अन्धे और कोढ़ी को शिफ़ा देना,मशरिक़ से मग़रिब तक सारी ज़मीन एक क़दम में तय करना,ग़र्ज़ तमाम ख़वारिके आदात करामतें (वह बातें जो एक आम आदमी से मुमकिन नहीं यानी आदत के ख़िलाफ़ हैं)औलियाए किराम से मुमकिन हैं। अलबत्ता वह ख़वारिके आदत जिनकी नबी के अलावा दूसरों के लिए मुमानअत हो चुकी है वलियों के लिए नहीं हासिल होंगी जैसे कुर्आन मजीद की तरह कोई सूरत ले आना या दुनिया में जागते हुए अल्लाह पाक के दीदार या कलामे हक़ीक़ी से मुशर्रफ़ होना। इन बातों का जो अपने या किसी वली के लिए दावा करे वह काफ़िर है।

मसअला :– औलिया से इस्तिमदाद और इस्तिआनत (मदद चाहना या माँगना) बेहतर है। यह लोग मदद माँगने वालों की मदद करते हैं उनसे मदद माँगना किसी जाइज़ लफ़्ज़ से हो,मुसलमान औलिया को कभी मुस्तक़िल फ़ाइल(करने वाला) नहीं मानते; वहाबियों का फ़रेब है कि वे मुसलमानों के अच्छे कामों को भोंडी शक्ल में पेश करते हैं और यह वहाबियत का ख़ास्सा हैं।(कहने का मतलब यह है कि वहाबी जाइज़ अल्फ़ाज़ से मदद को भी शिर्क बताते हैं जबकि जाएज़ तरीक़े से मदद माँगना जाइज़ और नाजाइज़ तौर पर मदद माँगना गुनाह। हाँ अगर किसी ने मदद करने वाले को अल्लाह का शरीक़ जाना या यह जाना कि बिना अल्लाह तआला के दिए किसी और से मिला तो ऐसा करने वाला मुश्रिक और काफ़िर हुआ और मुसलमान ऐसा हरगिज़ नहीं करते।)

मसअला :– औलिया के मज़ारात पर हाज़िरी मुसलमानों के लिए नेकी और बरकत का सबब है।

मसअला :– अल्लाह के वलियों को दूर और नज़दीक से पुकारना बुज़ुर्गों का तरीक़ा है।

मसअला :– औलियाए किराम अपनी क़ब्रों में हमेशा रहने वाली ज़िन्दगी के साथ ज़िन्दा हैं। उनके इल्म इदराक (समझ बूझ)उनके सुनने और देखने में पहले के मुक़ाबले में कहीं ज़्यादा तेज़ी है।

असअला :– औलिया को ईसाले सवाब करना मुस्तहब चीज़ है और बरकतों का ज़रिया है। उसे आरिफ़ लोग नज़्र व नियाज़ कहते हैं। यह नज़र शरई नहीं जैसे बादशाह को नज़्र देना उन में ख़ास कर ग्यारहवीं शरीफ़ की फ़ातेहा निहायत बड़ी बरकत की चीज़ है।

मसअला :– औलियाए किराम का उर्स यानी कुर्आन शरीफ़ पढ़ना, फ़ातिहा पढ़ना, नात शरीफ़ पढ़ना, वाज़, नसीहत और ईसाले सवाब अच्छी चीज़ हैं। रही वह बातें कि उर्स में नासमझ लोग कुछ खुराफ़ातें शामिल कर देते हैं तो इस क़िस्म की खुराफ़ातें तो हर हाल में बुरी हैं और मुक़द्दस मज़ारों के पास तो और भी ज़्यादा बुरी हैं।

तम्बीह :– चूँकि आम तौर पर मुसलमानों को **अल्लाह के फ़ज़्ल और** करम से **औलिया–ए–किराम से नियाज़मन्दी और पीरों के साथ** एक ख़ास **अक़ीदत होती है। उन के सिलसिले में दाख़िल होने को**

दीन और दुनिया की भलाई। समझते हैं। इसीलिये इस ज़माने के वहाबियों ने लोगों को गुमराह करने कि लिए यह जाल फैला रखा है कि पीरी मुरीदी भी शुरू कर दी। हालाँकि यह लोग औलिया के मुन्किर हैं इसीलिए जब किसी का मुरीद होना हो तो खूब अच्छी तरह तहक़ीक़ कर लें। नहीं तो अगर कोई बदमज़हब हुआ तो ईमान से भी हाथ धो बैठेंगे।

ऐ बसा इबलीस आदम रूये हस्त

पस ब हर दस्ते न बायद दाद दस्त

तर्जमा :– "होशियार, ख़बरदार अक्सर इबलीस आदमी की शक्ल में होता है। इसलिये हर ऐरे ग़ैरे के हाथ में हाथ नहीं देना चाहिए।"

पीरी के लिये शर्तें :– पीर के लिए चार शर्तें हैं। बैअत करने और मुरीद होने से पहले उनको ध्यान में रखना फ़र्ज़ है।

(1) पीर सुन्नी सहीहुल अक़ीदा हो। (2) पीर इतना इल्म रखता हो कि अपनी ज़रूरत के मसाइल किताबों से निकाल सके। (3) फ़ासिक़े मोलिन न हो। यानी खुले आम गुनाहे कबीरा में मुलव्विस न हो जैसे नमाज़ छोड़ना,गाने बजाने में मशग़ूल रहना या दाढ़ी मुंडाना वग़ैरा।

(4) उसका सिलसिला हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम तक मुत्तसिल हो।

نَسْأَلُ اللّٰهَ الْعَفْوَ وَالْعَافِيَةَ فِى الدِّيْنِ وَالدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ وَالْإِسْتِقَامَةَ عَلَى الشَّرِيْعَةِ الطَّاهِرَةِ وَ مَا تَوْفِيْقِىْ اِلَّا بِاللّٰهِ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَ اِلَيْهِ وَ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى حَبِيْبِهٖ وَ اٰلِهٖ وَ صَحْبِهٖ وَ ابْنِهٖ وَ حِزْبِهٖ اَبَدًا الْاٰبِدِيْنَ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ.

तर्जमा :– "हम दीन दुनिया और आख़िरत में अल्लाह से माफ़ी और आफ़ियत माँगते हैं और पाकीज़ा शरीअत पर इस्तिक़ामत (मज़बूती के साथ क़ाइम रहना)चाहते हैं। और मुझे अल्लाह ही की जानिब से तौफ़ीक़ है उसी पर मैंने भरोसा किया और उसी की जानिब माइल हुआ और दुरूद नाज़िल फ़रमाये अल्लाह तआला अपने हबीब पर,उन की आल असहाब उनके फ़र्ज़न्दों और उनकी जमात पर हमेशा हमेशा,और तमाम तारीफ़ ख़ास कर अल्लाह को जो तमाम आलम का रब है।"

फ़क़ीर अमजद अली आज़मी

हिन्दी तर्जमा

मुहम्मद अमीनुल क़ादरी बरेलवी